ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 Issue 11 February 2018

समकालीन कविताः एक अध्ययन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे
सह संपादक
डॉ. रामचंद्र ज्ञानोबा केदार

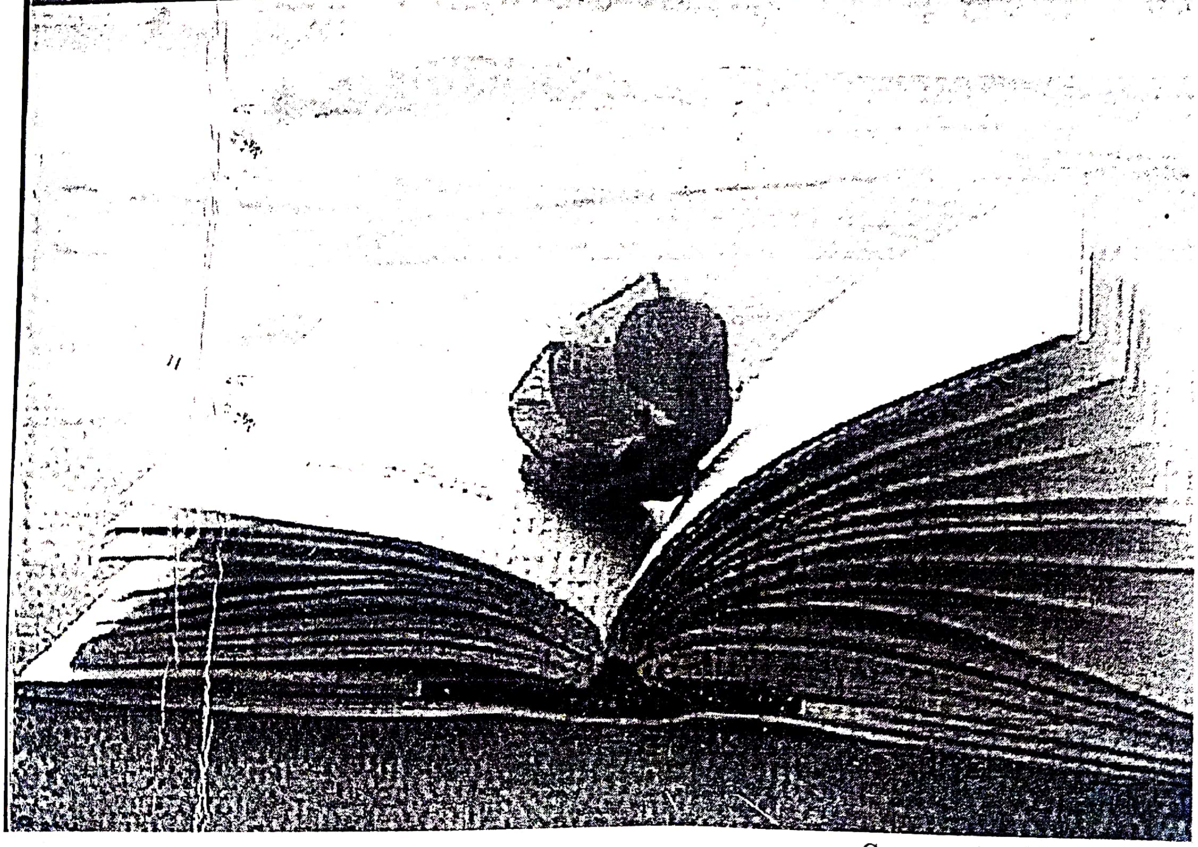

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

३६. समकालीन कविता और राजेश जोशी
डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर
२२८-२३२

३७. 'साये में धूप' : समकालीन राजनीतिक बोध
डॉ. अमोल पालकर
२३३-२३६

३८. समकालीन विविध विमर्श
डॉ. सुभाष राठोड
२३७-२४५

३९. समकालीन हिन्दी कविता
डॉ. वडचकर. एस. ए.
२४६-२५१

४०. समकालीन हिन्दी कहानी में स्त्री
डॉ. राम बडे
२५२-२५६

४१. खण्डकाव्य में चित्रित नारी
प्रा. डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव
२५७-२६०

४२. समकालीन कहानी साहित्य में मनोवैज्ञानिक समस्या
डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
२६१-२६५

४३. समकालीन स्त्री आत्मकथाओ में 'नारी जीवन का चित्रण'
प्रा. डॉ. रिना रमेश सुरडकर
२६६-२७१

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

VISHWABHARATI

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 261-265
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

समकालीन कहानी साहित्य में मनोवैज्ञानिक समस्या

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके

मनुष्य जैसे–जैसे समाजशील होता गया, वैसे–वैसे उसकी सभ्यता और जीवन में मूल्य शिक्षण और मनोरंजन के लिए कहानी का उदय हुआ। परिवार में नाना–नानी, चाचा–चाची, माता–पिता आदि बुजूर्गों द्वारा पोता–पोती अथवा अपने बच्चों को मूल्य शिक्षण एवं मनोरंजन की कहानियाँ सुनाई जाती थी। विश्व के प्राय: सभी देशों में मूल्य शिक्षण और मंनोरजन की कहानियाँ विद्यमान थी और आज भी है। लोककथाओं में प्रचलित मूल्य शिक्षण और मंनोरजन की कहानी का उद्देश्य उपदेशात्मक, धार्मिक, नैतिक तथा मनोरंजनात्मक था। मूल्यशिक्षण और मंनोरजन की कहानी समाज की गतिशीलता में अनेक दौर से गुजरकर, अनेक मोड़ लेते हुए आधुनिक साहित्य की गद्य विधाओं में आज अपना मजबुत स्थान बना चुकी है। मूल्य शिक्षण, मनोरंजन और धार्मिक उपदेश की कहानी आज सामाजिक, वैयक्तिक और मनोवैज्ञानिक रूप में अधिक विकसित होती दिखाई देती है। अस्तु, मौखिक कहानी से लिखित कहानी के अचरण प्रक्रिया पर प्रकाश डालना ही उसकी पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है।

हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में सरस्वती पत्रिका का हिन्दी भाषा और हिन्दी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके : हिंदी विभाग, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि.बीड

Scanned with CamSca

Scanned with OKEN Scanner

कहानी को संस्कारित करने महत्वपूर्ण योगदान है। कहानी विकास के प्रथम भाग में स्वामी भक्ति, मर्यादा, नैतिकता, मूल्यबोध आदि विषयों की रचनाएँ मिलती है। प्रेमचंदयुगीन कहानियाँ समाजभिमुख, उपदेशात्मक और आदर्शवादी रही। आदर्शवादी, यथार्थवादी एवं मूल्यशिक्षण आदि विषयोंपर सुदर्शन, विश्वंभरनाथ शर्मा मकौशिकफ, वृंदावनलाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री आदि कहानीकारों द्वारा अनेक कहानियाँ लिखी गयी। लोकमंगल और समाज कल्याण के हेतु से लिखी गयी प्रेमचंदयुगीन कहानियाँ प्रेमचंदोत्तर युग में मनोवैज्ञानिक, यथार्थवादी दृष्टि से विकसित होती रहीं है। प्रेमचंदजी के बाद हिन्दी कहानी का विकास मनोवै–ानिक, सामाजिक और मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित दिखाई देता है। हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंदयुगीन कहानियों में मनोवैज्ञानिक कहानियों का रूप कम अधिक में रहा हैं। किन्तु जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय आदि कहानीकारों ने मनोवैज्ञानिक कहानी को नयी दिशा प्रदान की है। इन कहानियों में मानव–मन की गहराइयों में झाँककर उसे प्रस्तुत करने की कोशिश की है। प्रेमचंद्रजी ने समाज को केंद्र में रखकर कहानी की रचना संपन्न की थी। प्रसादजी ने व्यक्ति को केंद्र में रखकरइतिहास और सुस्कृति का ताना–बाना बुना था किन्तु जैनेंद्र ने प्रसाद की अगली कड़ी व्यक्ति के मानसिक परिवेश को और व्यक्ति मन की गतिविधियों को कहानी का विषय बनाया। डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ के मतानुसार ङ्जैनेंद्र हिन्दी के प्रथम मनोवैज्ञानिक कहानीकार है।ङ्१ प्रेमचंद युग, प्रसादयुग और जैनेंद्रयुगीन कहानी के बाद नयी कहानी की वैचारिकता में पूर्ववर्ति कहानी की वैचारिकता और शिल्प पक्ष में परिवर्तन दिखाई देता है। नयी कहानी के रचनाकार ने व्यक्ति मन को सामाजिक सन्दर्भों के बीच प्रस्तुत किया है। नयी कहानी, अ–कहानी, सहज कहानी, सचेतन कहानी, समान्तर कहानी, जनवादी कहानी, सक्रिय कहानी आदि कहानी आन्दोलन में व्यक्ति के मानसिक द्वन्द्व एवं भावनिक संघर्ष का मनौवैज्ञानिक चित्रण कहानी का मुख्य विषय बना है। मणिका मोहिनीजी की कहानियाँ अ–कहानी आन्दोलन से प्रभावित दिखाई देती है। आधुनिक, वैज्ञानिक और तकनीकी युग में मनुष्य के दृष्टिकोण एवं व्यवहार में परिवर्तन हुआ है, उस परिवर्तन का व्यक्तिकेंद्रित एवं मनोवै–ानिक चित्रण मणिकाजी ने अपनी कहानियों में किया है।

समाज गतिशील है। समाज की गतिशिलता गाँव की अपेक्षा नगर और महानगर में अधिक दिखाई देती है। औद्योगिकीकरण से महानगर की भौतिक प्रगति तेज गति से हो रही थी। गाँव का आदमी नगर की भौतिक प्रगति, नगर की झगमगहाट तथा

रोजगार की तलाश में नगर की ओर बढता गया। रोजगार की तलाश में आया हुआ गाँव का आदमी नगर में प्रस्थापित पूँजीवादी लोगों के रहन–सहन का अनुकरण करने लगा। अनेक स्वप्न, अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु नगर में आया हुआ गाँव का आदमी महानगरीय व्यवस्था में मोहभंग के कारण दिशाहीन एवं उदास होने लगा। पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण एवं नकली आधुनिकता ने महानगर के प्रस्थापित और विस्थापित व्यक्ति को अकेला और तनावग्रस्त बनाया है। मणिकाजी की कहानी में महानगरीय व्यवस्था में स्वार्थी मनोवृत्ति तथा अर्थ केंद्रित व्यवस्था में बेचैन व्यक्ति के अकेलेपन की त्रासदी का मनौवैज्ञानिक चित्रण दिखाई देता है। ङ्आज के वैज्ञानिक युग में एक ओर अकेलापन और मानसिकता में बिखराव आ रहा है। दूसरी ओर समय और स्थान की दूरी तो समाप्तप्राय होती जा रही है, परन्तु मन से मन की दूरी बढती जा रही है। आज का आत्मकेंद्रित मानव अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश में मिलकर चलना और सब में विलीन होकर रहना भी भूलता जा रहा है। २ आधुनिक बनने की कोशिश में धर्म, श्रृध्दा, संस्कार, परंपरा व्यक्ति को बोझ लगने लगी है। अपनी परंपरा, संस्कार को आधुनिकता में बाधा समझकर भारतीय व्यक्ति अपनी परंपरा, संस्कार, संस्कृति आदि का विरोध करके पाश्चात्य संस्कृति तथा सभ्यता का अंधानुकरण करने लगा हैं। जीवनपयोगी परंपरा का त्याग और असंयुक्त पाश्चात्य सभ्यता, समाज के अनुकरण की वृत्ति से आधुनिक भारतीय व्यक्ति समाज से कटकर अर्थकेंद्री और आत्मकेंद्री बनता जा रहा है। आधुनिकता के दिखावे में व्यक्ति समाज, परिवार, दोस्तों से कट गया है, अपने ही लोगों में अकेला हो गया है। आत्मकेंद्री अर्थ नीति की होड़ में भारतीय समाज की सशक्त एवं बलशाली धारा संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है, जिसके कारण व्यक्ति भीतर से टूटने लगा है। मवसुधैव कुटुंब कमुफ विचार धारा में जीवन यापन करनेवाला भारतीय व्यक्ति आधुनिक युग में मानवतावादी दृष्टिकोन का त्याग करके व्यक्तिगत जीवन को महत्व देकर आत्मकेंद्रित स्वार्थी जीवन जीने लगा है। ङ्व्यक्ति जानबूझकर अपने को अपनी परंपरा से ही काटने में ही वर्तमान की सार्थकता समझने लगा। परंपरा को त्यागकर आज का व्यक्ति जैसे चौराहे पर अकेला खड़ा है। वह एक साथ कई टुकड़ों को जी रहा है, तनाव, अतृप्ति और असंतोष में जीनेवाला वह व्यक्ति परिवार में रहकर भी अकेला है।ङ्३ आधुनिक युग का भारतीय व्यक्ति भारतीय संस्कार, संस्कृति और पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति के द्वन्द्व एवं संघर्ष में दिशाहीन एवं बेचैन दिखाई देता है। ऐसे व्यक्ति के मन का मनोवैज्ञानिक चित्रण आधुनिक कहानीकारों की

Scanned with OKEN Scanner

पुरूष वर्चस्ववाले समाज में आत्मसन्मान और आत्मनिर्भर होकर जीवन जीने की कोशिश करनेवाली कामकाजी नारी को शारीरिक और मानसिक संकटों का सामना करना पडता है। पद, प्रतिष्ठा और पैसे के बलपर पुरूषी मानसिकता नारी को आत्याचार सहने के लिए मजबुर करती है। ऑफिस में सहकर्मियों अथवा प्रधान का अन्याय–अत्याचार सहनेवाली कामकाजी नारी, संस्थाचालक, राजनीति के नेता तथा कार्यकर्ता पुरूष को शिकार होती है। 'मुखौटे' कहानी में स्कुल के लिए चंदा माँगने आयी स्कुल टिचर निर्मला का चंदा देने के बहाने सेठ रोशनलाल शारीरिक शोषण करना चाहता है। स्कुल टिचर निर्मला को अपनी हवेली पर बुलाकर सेठ रोशनलाल चंदा देने के बहाने अपने हवस का शिकार बनाना चाहता है। अपनी हवस का शिका बनाने के लिए उसे अगुंठी का लालच देकर निर्मला को वासना का शिकार बनाना चाहता है। सेठ अंगुठी देने के बहाने निर्मला का हाथ पकडता है। निर्मला जैसे–तैसे अपना हाथ छुडाकर वहाँ से भागने में सफल होती है। निर्मला कहती है "भेड की खाल में भेडिया। इस दानववीरता के मुखौटे के पीछे छीपा हुआ वासना का घिनौना चेहरा, इस जैसे पाखंडी को तो बीच चौराहे पर अनाव्रत करना चाहिए।"[3] मासुमीयत के मुखौटे लगाकर कामकाजी नारी का ऑफीस और ऑफिस के बाहर मानसिक और शारीरिक शोषण करनेवाले आधुनिक समाजव्यवस्था में अनेक पुरूष दिखाई देते है। ऐसे मुखौटे धारण कर नारी शोषण करनेवाले वासना के घिनौने चेहरे का पर्दाफाश मणिकाने अपने कहानियों में किया है।

नौकरी के बहाने ऑफिस के बॉस अथवा–संस्था चालक शिक्षित नारी का शारीरिक शोषण कर रहे है। 'गुमनाम सिंह' कहानी का बॉस नायिका को नोकरी देने के बहाने उसका शारीरिक शोषण करना चाहता है। नायिका जब उस के झाँसे में नही आती, तब उसे नोकरी के इटरव्यू में ही उडाने की कोशिश करता है, किंतु नायिका की नियुक्ति उस ऑफिस में होती है। नियुक्ति होने के बाद गुमनाम सिंह नायिका को बॉसगिरी का दिखावा दिखाकर उसे अपने हवस का शिकार बनाना चाहता है। नायिका गुमनाम सिंह को उम्र के अनुसार पिता का दर्जा देना चाहती है, किंतु गुमनाम सिंह नायिका को दोस्त बनाने के लिए कहता है। उसके दोस्ती में वासना की लाल टपकती है। वह नायिका को सामने अपने आप को अच्छा दिखाने के लिए अन्य लोगों को बुरा कहता है। वह कहता है कि अपका चुनाव मैंने ही किया है। "हरामजादे नौकरी का लालच देकर लडकियों को फसाते है।"[4] गुमनाम सिंह जैसे अनेक पुरूष आज भी कामकाजी भारतीय नारी का शोषण करने की कोशिश करता हुआ दिखाई देता है। ऑफिस का बॉस अपने सहकर्मि महिला पर अपना अधिकार जताना चाहता है। उसे अपनी बपौती मानकर उसका मानसिक और शारीरिक शोषण करता है। कामकाजी महिला कर्मचारी पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में घर और ऑफिस में पुरूष अत्याचार प्रतिष्ठा के आड में चुपचाप सहती हुई दिखाई देती है। किंतु मणिकाने प्रतिष्ठा मान–मर्यादा, श्लील, अश्लील, अछा, बुरा आदि के बारे में न सोचकर कामकाजी नारी के साथ होनेवाले अन्याय–अत्याचार का सजीव और यथार्थ चित्रण किया है। स्त्री–पुरूष समानता का दिखावा दिखानेवाली यह पुरूषी व्यवस्था नारी का हर प्रकार से शोषण करना जानती है।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक व्यवस्था आधुनिक विचारों का स्विकार करे प्रवाहित होती है, ऐसा लगता है। किंतु पारंपारिक विचारों से प्रभावित शिक्षीत कामकाजी वर्ग पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था का वहन करता है। नाटकीय आधुनिकता को जीनेवाला भारतीय कामकाजी वर्ग हमेशा कामकाजी नारी को दुय्यम लेखता है। अपने साथ कदम से कदम मिलाकर काम करनेवाली नारी को देखकर (भितर से) इर्शा भाव से जलता है, उससे आगे जाकर कहे तो नारी को बॉस के रूप में स्विकार करना उसके पुरूषी मन को कद्यपी स्विकार

नही है। कामकाज के क्षेत्र में बॉस सहकर्मी अथवा ऑफिस में काम करनेवाले अन्य कामकाजी महिलाओं के साथ अन्यायी वृत्ती का परिचय पुरूप व्यवहार में दिखाई देता है।

संदर्भ सूची :–

1. अभी तलाश जारी है – साहेब उर्फ नृप – पृ. 86
2. खत्म होने के वादे – साहेब उर्फ नृप – पृ. 92
3. ये कहानियाँ – मुखौटे – पृ. – 83
4. अभी तलाश जारी है – गुमनाम सिंह – पृ. 86

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor In Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Scanned with OKEN Scanner

18	Programmes And Strategies For Attaining Clean And Green India	DeelipkumarNamdevraoJadhav	67
19	Ancient Indian costume in the period of Mauryan and Sunga (321 – 72 B. C.)	Mrs. Rekha B. Lonikar	70
20	Twentieth-century English literature: An Overview	More J. G.	73
21	"Evaluative Study of contaminated soil and Bioremediation Treatment in Marathwada"	Dr. Sanjay Kale	76
22	महाराश्ट्रातील कृशीअर्थव्यवस्था व ठिबकसिंचन योजना	डॉ . धनुश्वर आर . एस .	79
23	साहित्य और इतिहास भूषण के काव्य के विशेष सन्दर्भ में	संतोष साहेबराव नागरे	83
24	सामाजिकसरोकारिता को निबाहती राजन स्वामी की ग़ज़ल	डॉ. संजय सोपान रणखांबे	86
25	हिंदी ग़ज़लों में आतंकवाद की भयावहता	डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	90
26	विषय : साहित्य समाज औरहिंदी सिनेमा : एक चिंतन	प्रा.डॉ.एम.ए.येल्लूरे	93
27	बौद्धदर्शन और असंगघोष कीकविता	डॉ.संजय जाधव , प्रा.डहाळे मुंजाभाऊ	96
28	'धारा ३७० : एक समीक्षात्मक अध्ययन'	साईनाथइस्तारीवाघमारे	101
29	कौटिल्याचे आर्थिक विचार	डॉ.गोंविद राजाराम परडे	105
30	"मणिका मोहिनी की कविता में नारी"	डॉ. अरविंद अंबादास घोडके	107
31	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित नारी स्वातंत्र्य	डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड	1110
32	"समकालीनहिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श"	स.प्रा.डॉ. राजेश प्रल्हादरा व आरदवाड	112

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly
Issue IX Vol II , May 2017 | UGC Approved Sr. No. 64310 | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 2.143

"मणिका मोहिनी की कविता में नारी"

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
हिंदी विभाग, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

-------------(30)--------------------- Dept. of Hindi---------------------------------------

मणिका मोहिनी आधुनिक हिंदी साहित्य की सशक्त रचनाकार है। कविता और कहानी विधा में मणिकाजी ने नारी जीवन के हर प्रश्न को छुने की कोशिश की है। पंरपरागत सामाजिक ढाँचे में आज भी नारी का शारीरिक और मानसिक शोषण होता है। आर्थिक दृष्टी से परावलंबी भारतीय नारी ने पुरूषों द्वारा बनाएँ गए अन्यायी नियमों का पालन किया है। भारतीय समाज में नारी को नैतिकता के कटघरे में खड़ा कर उसका सदियों से शोषण किया है। प्रथा, परंपरा, प्रतिष्ठा, नैतिकता, पाप–पुण्य, धर्म आदि के बहाने भारतीय समाज व्यवस्था में हो रहे नारी शोषण का चित्रण मणिकाजी के काव्य का मुख्य विषय रहा है। नैतिकता के कटघेरें में हमेशा नारी को ही खड़ा किया गया है। नैतिकता का संबंध नारी के साथ ही जोड़ा जाता है, पुरूष के लिए नैतिकता के मापदंड नारी की तुलना में कमजोर और न के बराबर होते हैं। पत्नी के लिए नैतिकता के कठिन नियम होते हैं, किंतु पति को उसी नियमों से छुट मिलती है। नारी विरोधी परिवार और सामाजिक मान्यताओं का चित्रण मणिकाजी अपने काव्य में किया है।

"बात केवल औरत की नैतिकता को लेकर नहीं की जा सकती मर्द भी अगर कही मर्द है, तो उसमें पानी होगा पश्चाताप के लिए या डूंब मरने के लिए। भारतीय समाज व्यवस्था नारी के नैतिकता के बंधनों कि बड़ी अचरज की बात है कि सभी को शरीर के आधार पर ही घेरा जाता है और यदि वह कुछ बोले तो अश्लील, अमर्यादा का लांछन तैयार है। सारा कुछ पुरूष सत्ता का किया धरा है, किसी विदुषी नारी से पुछकर शास्त्र नहीं रचे गए न नैतिकता के मानदंड बने। तभी तो पुरूष से नतनेत्र और घुँघट में रहने के लिए नहीं कहा जाता।"[1]

आज के युग में पढ़ी लिखि भारतीय नारी पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के सभी विरोधी विचारों को जानते हुए भी अनजान बनकर इसी समाज व्यवस्था में जीने के लिए मजबुर दिखाई देती है। पारंपारिक पौराणिक पात्र से लेकर आज के आधुनिक युग में पुरूषों ने नारी का सदा ही शोषण किया है। रामायण में सीता का तात्कालीन पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था ने शोषण किया था। यह जानते हुए भी आज की नारी सीता बनती हुई दिखाई देती हे।

जैसे "सीता ने अपने सत्य का प्रमाण
केवल अपने पति को दिया
रावण या रंजक जनता को नही
और भारतीय संस्कारों में बंधी हुई मैं
सीता बनने को तैयार हो जाती हूँ।"[2]

अन्याय आत्याचार का सदियों से सामना करनेवाली भारतीय नारी धीरे–धीरे अन्यायी सामाजिक व्यवस्थाँ का विरोध करने लगी है। मणिका मोहिनी की नायिका नारी विरोधी प्रथा, परंपरा का त्याग कर स्वछंद जीवन जीने के प्रयास करती है। नारी विरोधी सामाजिक व्यवस्था का विरोध करती मणिका की नायिका अपने साथ होनेवाले अन्याय–आत्याचार का विरोध करते

Scanned with OKEN Scanner

हुए पुरूष को ललकारती है। प्रथा, परंपरा और सभ्यता की आड पत्नी अथवा नारी का शोषण करनेवाले मुखौटे धारी पुरूष को नंगा कर देना चाहती है।

जैसे – "तुम्हारे चेहरे से
सभ्यता का मुखौटा उतार
कीचड में उछाल दूँ
तुम्हे नंगा कर
तुम्हारे सफेद कपडो को चौराहे पर टांग दूँ।"[3]

मणिका अपनी कविता में सभ्यता, नैतिकता, परंपरा की आड में शोषण करनेवाले पुरूष वर्ग का धिकार करती है। अपने शोषण को बनाए रखने के लिए बनायी गई प्रथा, परंपरा, नैतिकता, धार्मिक संहिता, सामाजिक व्यवस्था आदि का विरोध कर पुरूष का वास्तविक रूप दुनिया के सामने लाना चाहती है। नारी विरोधी व्यवस्था रूपी सफेद कपडो को चौराहे पर टांगकर पुरूषी वर्चस्ववादी समाजव्यवस्था का निडर विरोध करती है।

भारतीय समाजव्यवस्था में नारी को अपने माँ–बाप, भाई, बहन को छोडकर विवाह के बाद पति के घर जाना पडता है। पति के लिए अपना सबकुछ त्यागकर आनेवाली पत्नी पति से अपेक्षित अपनापन, प्रेम और एकनिष्ठता चाहती है, किंतु उसे निराशा ही मिलती है।

जैसे – "पत्नी
दूसरों की हो कर भी
उसके पास लौट आती है।
और मूर्ख पति वह है
जिसकी पत्नी/उसकी होकर भी
दुसरों के पास लौट जाता है।"[4]

मणिकाजी की कविताओं में अन्याय–अत्याचार का वहन करनेवाली स्त्री पात्र से कही अधिक अन्याय अत्याचार का विरोध करनेवाली नायिका दिखाई देती है। पुरूषी अत्याचारों से डरकर अपने भावनाओं का गला घोंटनेवाली नायिका के साथ–साथ हरपल जीवन जीनेवाली नायिका का चित्रण मणिका के कविता में हुआ है। नायिका अब पुरूषों की तरह स्वछंद जीवन जीना चाहती है। पुरूषों की तरह अपनी मानसिक, शारीरिक भूख मिटाने की कोशिश करती है। सामाजिक मान्यताँए तोडकर हरपल जीवन यापन करनेवाली नायिका नैतिकता – अनैतिकता के मानदंड को तोडकर स्त्री वैश्या व्यवसाय की तरह पुरूष वैश्या व्यवसाय की माँग करती है। वैश्या पुरूषों के सहारे अपना न करनेवाला वक्त काट देना चाहती है।

जैसे – "क्या अच्छा होता कि सोसायटी गर्ल की तरह
सोसायटी बाईज भी होते इस तरह न कटनेवाले वक्त का
थोडा सा हिस्सा तो किराये पर काटा जा सकता।"[5]

आज के युग में प्रतिष्ठा की आड में अपनी काम ईच्छा दबाकर कर रखना आज की स्वछंद नारी नकार करती है। तथा हरपल जीवन जीने की कामना में स्वछंद होकर हरपल जीवन जीती हुई दिखाई देती है। भौतिक विकास और प्रतिष्ठा के पीछे भागनेवाले भोगवादी समाज में वैचारिक आधुनिकता की जगह स्वछंद स्वैराचार ने ले ली है। मणिका मोहिनीजीने अपनी कविताओं में पारंपारिक पुरूषप्रधान सामाजिक व्यवस्था में अन्याय, अत्याचारो स्त्री जीवन से लेकर आधुनिक युग में हरपल जीवन जीने की कामना में स्वछंद नारी का चित्रण सजीवता से किया है।

संदर्भ :

1. नैतिकता के नए सवाल, स्त्रीत्व की नैतिकता – पृ. 138, 139
2. प्रेम प्रहार – पृ. 70
3. प्रेमप्रखर – मनिका मोहिनी – पृ. 31
4. प्रेम प्रहार – 73
5. प्रेम प्रहार – मणिका मोहिनी – पृ. 63

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	Poverty And Economic Growth: A Evaluation	Dr. Shahuraj S. Mule	1
2	*The Suggestive Discription Of Motivation- An Important Management Function In The Organization Scenario*	*Dr. Prashant M. Puranik*	4
3	*Format of Mock Trial in Vijay Tendulkar's Play "Silence! The Court is in Session"*	*Mr.BobadeTukaramBalasaheb*	8
4	*Impact Of Climate Change On Crop Production In Marathwada Region*	*HashmiIrshadMohiuddin*	13
5	*Use of Information and Communication Technology (ICT)in the Library*	*Dr. MortaleHeeraNivrattirao*	15
6	*"Effect of Demonetization Policy on 'Weaker Sections of Indian Society."*	*Dr. ShyamsundarPandharinathWaghmare*	18
7	*Medical Library Cosortium*	*DevidasVankatiPhad*	22
8	*Process of rehabilitation with reference to Warana irrigation project of Maharashtra*	*Mr. M. B. Chavan*	27
9	*Effect Of Selected Exercises On Arm And Back Strength Of Archers*	*Dr. Sunil kumar*	33
10	*Role of Foreign Direct Investment (FDI) In Banking Sector*	*Syed Vazeer Syed Isa*	42
11	*Status of Organic Farming and Insurance Research Experiences in Rice*	*Dr. RakeshPatidar, Dr. DheerajNegi Director Pragyan*	44
12	नारीतुम श्रेया हो ......?	विद्या किशनराव सावते	49
13	कुछ मराठवाडके प्रमुख सन	डॉ. सचिन रमेशराव चोले	53
14	"स्त्रीभ्रूणहत्येचा तात्विक अन्वयार्थ "	प्रा.वीवीशन विठ्ठलराव कांबळे	57
15	भारतीय राजमाषाएँ एवंसंविधान	प्रा. नयनभादुले–राजमाने	61
16	महिलांचा आर्थिक विकास आणि उद्योजकता	डॉ.सतीश बापुराव डोंगे	70
17	ॲरिस्टॉटलच्या 'नैतिकसदगुण' संकल्पनेचा अन्वयार्थ	पंडगेसंतोष रमेशराव	74
18	ग्रामीण साहित्य संकल्पना व स्वरूप	प्रा. डॉ. हनुमंत तुकाराम माने	77
19	विद्यार्थ्यांच्या सृजनशीलतेचा विकासासाठी कार्यक्रमनिर्मितीचा अभ्यास	प्रा.मरेवाड पी.पी.	81
20	स्त्रीउत्थानातील डॉ.बाबासाहेब आंबेडकराच्याकार्य व चळवळीचे योगदान	डॉ.पी.जी. राठोड	86
21	नव्वदोत्तरी स्त्रीवादी कथालेखनातील स्त्रीजीवन	प्रा.डॉ.लक्ष्मण ना.वाघमारे	90
22	सूरकागीतकाव्य	स.प्रा.डॉ. राजेशप्रल्हादरावआरदवाड	93
23	कामकाजी नारी शोषण (मणिका मोहिनी कहानी विशेष)	डॉ. अरविंद अंबादास घोडके	98
24	ओसातालुक्यातील जलव्यवस्थापन : एक भौगोलिक अभ्यास	प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर	101
25	बौद्ध धर्म आणि स्त्री जिवन	प्रा.डॉ. बी.एस. लासुरे	104

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol II, Jan. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

कामकाजी नारी शोषण (मणिका मोहिनी कहानी विशेष)

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
हिंदी विभाग, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

---(23)---

कामकाजी एव् शिक्षित भारतीय नारी जीवन के अनेक पहलु पर हिंदी भाषी रचनाकारों ने कलम चलाई है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था मातृसत्ताक व्यवस्था से पितृ–सत्ताक व्यवस्था में पुरूष द्वारा परिवर्तित कर दी गयी है। पुरूष प्रधान व्यवस्था ने नैतिकता और धर्म के सहारे नारी जीवन को बंधनों में बांधकर रखा था। आर्थिक दृष्ठी से परावंलंबी नारी पुरूष द्वारे बनाए गए शोषण एव् अन्यायी नियमो का पालन करने के लिए मजबुर थी। आर्थिक दृष्ठी से पराश्रित नारी को अपने स्वछंद जीवन के लिए, पुरूष गुलाम बनाए रखने की कोशिश करता आया है, और आज करता हुआ दिखाई देता है। आधुनिक युग में विज्ञान, शिक्षा और संविधान के बलपर नारी आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की कोशिश कर रही है। आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए काम करनेवाली कामकाजी भारतीय नारी सामाजिक और लैंगिक समस्याओ प्रति दिन संघर्ष करती नजर आती है। कामकाजी भारतीय नारी के सामाजिक और लिंग भेद के कारण निर्माण समस्याओं का यथार्थ चित्रण मणिका मोहिनी के कहानियों में हुआ है।

मणिका की कहानियाँ नारी मन की कहानियाँ है। मणिकाने घरेलु और कामकाजी नारी जीवन के अनेक भौतिक, अभौतिक, लौकिक अलौकिक विषय पर प्रकाश डाला है। कामकाजी नारी का परिवार, समाज और उसके कार्यालय में शारीरिक और मानसिक शोषण होता हूआ दिखायी देता है। कामकाजी नारी के प्रति उसके साथ काम करनेवाला पुरूष अधिकारी उसका भावनिक और लैंगिक शोषण करता है। साहेब उर्फ नृप कहानी में ऑफिस का बॉस ऑफिस की महिलाओं के साथ बतसलुख करता है। ऑफिस में काम करनेवाली महिला कर्मचारी को बिना वजह अपने ऑफिस में बुलाता रहता है, द्वाभा की ईच्छा हो या न हो घण्टो उसे उसके बॉस के साथ ऑफिस में बैढना पडता है। ऑफिस के सहकर्मी कहते है "सर द्वाभा को किसी–न–किसी काम के बहाने अपने कमरे में बुलाकर घंटो बैठाए रखते थे।"[1] द्वाभा का विनयभंग अथवा, उसके अपेक्षा के विपरित वर्तन करनेवाला ऑफीस का प्रधान/बॉस बात–बात पर अपनी बॉसगिरी दिखाता था। महिला क्लब में उसके बीबी के साथ द्वाभा द्वारा किए व्यवहार की चर्चा अपने ऑफिस में करता है। और महिला क्लब की बातों को ध्यान में रखकर द्वाभा और रोहिगी को डॉटता है। पत्नी के कहने पर कहानी का बॉस ऑफिस की महिला कर्मचारी को डॉटता है। कामकाजी नारी का शोषण करनेवाले पुरूषी मानसिकता का चित्रण मणिकाने साहेब उर्फ नृप कहानी में बॉस के माध्यम से किया है। पुरूषी मानसिकता से प्रभावित हेड के संदर्भ में मणिका लिखती है कि "अजिब हॅड है यह। महिला क्लब की बाते अपनी बीवी से सुनकर आता है और ऑफिस की मिटिंग में डिस्कस करता है।"[2] शासकिय–निम–शासकिय क्षेत्र में काम करनेवाली कामकाजी नारी का पुरूषी मानसिकता हर प्रकार से शोषण करने का प्रयास करती है। उसका सजिव चित्रण मणिकाने साहेब उर्फ नृप कहानी में किया है।

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol II, Jan. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

पुरूष वर्चस्ववाले समाज में आत्मसन्मान और आत्मनिर्भर होकर जीवन जीने की कोशिश करनेवाली कामकाजी नारी को शारीरिक और मानसिक संकटों का सामना करना पडता है। पद, प्रतिष्ठा और पैसे के बलपर पुरूषी मानसिकता नारी को आत्याचार सहने के लिए मजबुर करती है। ऑफिस में सहकर्मियो अथवा प्रधान का अन्याय–अत्याचार सहनेवाली कामकाजी नारी, संस्थाचालक, राजनीति के नेता तथा कार्यकर्ता पुरूष को शिकार होती है। 'मुखौटे' कहानी में स्कुल के लिए चंदा मांगने आयी स्कुल टिचर निर्मला का चंदा देने के बहाने सेठ रोशनलाल शारीरिक शोषण करना चाहता है। स्कुल टिचर निर्मला को अपनी हवेली पर बुलाकर सेठ रोशनलाल चंदा देने के बहाने अपने हवस का शिकार बनाना चाहता है। अपनी हवस का शिका बनाने के लिए उसे अगुंठी का लालच देकर निर्मला को वासना का शिकार बनाना चाहता है। सेठ अंगुठी देने के बहाने निर्मला का हाथ पकडता है। निर्मला जैसे–तैसे अपना हाथ छुडाकर वहाँ से भागने में सफल होती है। निर्मला कहती है "भेड की खाल में भेडिया। इस दानववीरता के मुखौटे के पीछे छीपा हुआ वासना का घिनौना चेहरा, इस जैसे पाखंडी को तो बीच चौराहे पर अनावृत करना चाहिए।"[3] मासुमीयत के मुखौटे लगाकर कामकाजी नारी का ऑफीस और ऑफिस के बाहर मानसिक और शारीरिक शोषण करनेवाले आधुनिक समाजव्यवस्था में अनेक पुरूष दिखाई देते है। ऐसे मुखौटे धारण कर नारी शोषण करनेवाले वासना के घिनौने चेहरे का पर्दाफाश मणिकाने अपने कहानियों में किया है।

नौकरी के बहाने ऑफिस के बॉस अथवा–संस्था चालक शिक्षित नारी का शारीरिक शोषण कर रहे है। 'गुमनाम सिंह' कहानी का बॉस नायिका को नोकरी देने के बहाने उसका शारीरिक शोषण करना चाहता है। नायिका जब उस के झाँसे में नही आती, तब उसे नोकरी के इंटरव्यू में ही उडाने की कोशिश करता है, किंतु नायिका की नियुक्ति उस ऑफिस में होती है। नियुक्ति होने के बाद गुमनाम सिंह नायिका को बॉसगिरी का दिखावा दिखाकर उसे अपने हवस का शिकार बनाना चाहता है। नायिका गुमनाम सिंह को उम्र के अनुसार पिता का दर्जा देना चाहती है, किंतु गुमनाम सिंह नायिका को दोस्त बनाने के लिए कहता है। उसके आँखों में वासना की लार टपकती है। वह नायिका को सामने अपने आप को अच्छा दिखाने के लिए अन्य लोगों को बुरा कहता है। वह कहता है कि अपका चुनाव मैंने ही किया है। "हरामजादे नौकरी का लालच देकर लडकियों को फसाते है।"[4] गुमनाम सिंह जैसे अनेक पुरूष आज भी कामकाजी भारतीय नारी का शोषण करने की कोशिश करता हुआ दिखाई देता है। ऑफिस का बॉस अपने सहकर्मि महिला पर अपना अधिकार जताना चाहता है। उसे अपनी बपौती मानकर उसका मानसिक और शारीरिक शोषण करता है। कामकाजी महिला कर्मचारी पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में घर और ऑफिस में पुरूष अत्याचार प्रतिष्ठा के आड में चुपचाप सहती हुई दिखाई देती है। किंतु मणिकाने प्रतिष्ठा मान–मर्यादा, श्लील, अश्लील, अच्छा, बुरा आदि के बारे में न सोचकर कामकाजी नारी के साथ होनेवाले अन्याय–अत्याचार का सजीव और यथार्थ चित्रण किया है। स्त्री–पुरूष समानता का दिखावा दिखानेवाली यह पुरूषी व्यवस्था नारी का हर प्रकार से शोषण करना जानती है।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक व्यवस्था आधुनिक विचारों का स्विकार कर प्रवाहित होती है, ऐसा लगता है। किन्तु पारंपारिक विचारों से प्रभावित शिक्षीत कामकाजी वर्ग पुरूष वर्चस्ववादी व्यवस्था का वहन करता है। नाटकीय आधुनिकता को जीनेवाला भारतीय कामकाजी वर्ग हमेशा कामकाजी नारी को दुय्यम लेखता है। अपने साथ कदम से कदम मिलाकर काम करनेवाली नारी को देखकर (भितर से) ईर्षा भाव से जलता है, उससे आगे जाकर कहे तो नारी को बॉस के रूप में स्विकार करना उसके पुरूषी मन को कदापी स्विकार

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol II, Jan. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

नही है। कामकाज के क्षेत्र में बॉस सहकर्मी अथवा ऑफिस में काम करनेवाले अन्य कामकाजी महिलाओं के साथ अन्यायी वृत्ती का परिचय पुरूष व्यवहार में दिखाई देता है।

संदर्भ सूची :–

1. अभी तलाश जारी है – साहेब उर्फ नृप – पृ. 86
2. खत्म होने के वादे – साहेब उर्फ नृप – पृ. 92
3. ये कहानियाँ – मुखौटे – पृ. – 83
4. अभी तलाश जारी है – गुमनाम सिंह – पृ. 86

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary International E-research journal

PEER-REFREED & INDEXED JOURNAL

18th Feb. 2019 Special Issue- 130 (I)

THE ROLE OF GOVERNMENT TO PROTECT THE HUMAN RIGHTS

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue
Dr. Vanmala Govindrao Gundre
Principal
Yashwantrao Chavan College, Ambajogai. Dist. Beed.

Co-Editor
Dr. Ahilya Barure
Dr. D.R. Tandale
Dr. D.B. Tanduljekar

RESEARCH JOURNEY

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 Special Issue – 130 (I) | January 2019 | UGC Approved No. 40705
The Role of Government to protect the Human Rights

नैतिकता के कटघेरें में दमतोड़ता मानवाधिकार

प्रा.डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
हिंदी विभाग, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई, जि.बीड

जीवो जीवस्य जीवनम् को प्रकृति का नियम मानकर बलवान लोग सदैव दुर्बल को भक्ष्य बनाते है। जिससे मानवाधिकार का हनन होती है और मानवता का अंत भी होता है। एक मनुष्य अन्य मनुष्य से बराबर के सन्मान की माँग करता है, और जहाँ उसे वह बराबर का सन्मान मिलता है वहाँ मानवाधिकार है। मनुष्य से हर एक मनुष्य का व्यवहार समता, स्वातंत्र्य और बंधुता के अनुरूप होना मनुष्य हीत के लिए उपयोगी होता है। किंतु आज वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो जीवो जीवस्य जीवनम् की स्थिती गतिमान दिखाई देती है। बलवान मनुष्य कमजोर दुर्बल मनुष्य का शोषण करता हुआ दिखाई देता है। इस शोषण की सर्वाधिक शिकार सदियों से दुर्बल नारी जाती होती आयी है। पुरूष वर्चस्ववादी मानसिकता ने अपने आप को अधिक बलवान बनाने के लिए तथा नारी का शोषण करने के लिए अनेक दोहरे मानदंड अपनाए है। नारी को दुर्बल बनाकर उसका शोषण करने के लिए पुरूष वर्ग ने नैतिकता रूपी अस्त्र का सदियों से प्रयोग किया है। आज भी स्त्री को नैतिकता के कटघेरे में खड़ा कर स्त्री-पुरूष समानता का दिखावा दिखानेवाले पुरूष वर्चस्ववादी व्यवस्था नारी का शोषण कर रही है। पुरूष सत्ता द्वारा नारी पर होनेवाले आत्याचार मानवाधिकार का हनन कर रहे है। साहित्य समाज का दर्पन है उस दर्पन में मानवाधिकार का चित्रण दिखाई देता है।

स्त्रीवादी रचनाकार अपनी रचनाओं में मानवाधिकार से वंचित नारी जीवन का यथार्थ चित्रण कर मानवाधिकार के लिए संघर्ष करती नारी का सजीव चित्रण कर रहे है। भारतीय समाज व्यवस्था में पुरूष वर्चस्ववादी मान्यताओं का बोलबाला दिखाई देता है, पुरूष वर्ग अपने लिए और नारी के लिए अलग-अलग प्रतिमान, मानदंड बनाए हुए है। यौन स्वातंत्र्यता और यौन संबंधों की स्वच्छंदता को नैतिकता के कटघेरे में रखकर नैतिकता की परिभाषा में सदा ही नारी को ही आरोपी बनाया गया है। पुष्पपाल सिंह कहती है कि, च्वह अपने लिए यौन स्वच्छंदता की बात करता है, परंतु यदि नारी भी यही अचरण करे तो वह उसके लिए असह्य है छ[1] समानता और स्वातंत्र्यता का ढोल पीटनेवाले पुरूष नारी को नैतिकता के प्रतिमानों में बांधकर स्वत: उन्मुक्त एवं स्वछंद जीवन जीता है। स्त्रीत्व की नैतिकता में मैत्रियी पुष्पा कहती है कि, च्भारतीय समाज में औरत की जिंदगी उस नैतिकता से बंधी है, जिसकी डोर पिता, पति और पुत्र के हाथ में है छ[2]

स्त्री जन्म होते ही पिता-प्रतिष्ठा का मानदंड बन जाती है। विवाह के बाद पति परमेश्वर के लिए अपनी शारिरिक और भावनिक अपेक्षाओं का गला घोटकर नैतिकता रूपी पति प्रतिष्ठा के लिए उसका भक्ष्य बन जाती है। भारतीय समाज व्यवस्था में परंपरा से प्रचलित स्त्री बंधनों के कारण पुरूष स्त्री को अपने समान मनुष्य के रूप अस्विकार करता आया है। ऐसे पुरूष मानसिकता का चित्रण करते हुए मणिकाजी मेंमना कहानी में पुरूष पात्र के माध्यम से कहती है कि, च्मै एक आम आदमी हूँ। अपने से कम औरतों को में अपना समझता हूँ, अपने से अधिक औरत मेरे बस की नही है। वह औरत ही क्या जो मर्द को मर्द न समझने दे, जो पति को यह अहसास न होने दे कि वह पति है?छ[3] पुरूष वर्चस्ववादी सामाजिक मान्यताएँ नारी की अवहेलन करती आयी है, उसे चक्का और चुल्हे तक सीमित रखने के लिए मजबूर कर देती है। घ्टुटने से पहले और टुटने के बादङ कहानी की नायिका अपने ही परिवार में नैतिक मर्यादाओं के कारण पराधीन जीवन जीने के लिए मजबूर दिखाई देती है। परिवार का मुखियाँ पिता अपने बेटी को पुरूषी मान्यताओं में जीवन जीने के लिए मजबूर करता है, उसकी, इच्छा, आकांक्षा को अनदेखा कर परंम्परागत जीवन जीने की ईच्छा रखता है। नाटकों में गेर पुरूषों के साथ एवं गेर पुरूषों के सामने बेटी का काम करना इन्हे अच्छा नही लगता था। घर में विशेष रूप से बाबुजी को उसका इस प्रकार स्टेज पर गैर पुरूषों के सम्मुख आना अरूचिकर और भद्दा लगता था छ[4] परिवार से लेकर समाज के हर क्षेत्र में पुरूष प्रधान सामाजिक मान्यताएँ नारी अधिकारों को हनन करती आयी है। सामाजिक व्यवस्था में ही नारी अधिकारों से वंचित है नही बल्कि समाज जीवन का प्रतिबिम्ब साहित्य भी नारी को पुरूष के समान बराबर का सम्मान देने में असमर्थ रहा है। मैत्रेयी पुष्पा कहती है कि, च्रचनाकार मनुष्यता में विश्वास तो जरूर रखते है, मगर स्त्री को मनुष्य के रूप में बराबरी का हकदार नही मानते। औरत के दुख - दर्द से द्रवित होकर तरस और दया की धाराएँ प्रवाहित कर देते है, करूणा का जाप करते रहते है, मगर उसकी सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक भागीदारी मर्यादा, नैतिकता और आदर्श परकता पर कुठाराघात लगती है। अत: वह स्त्री के पालतू रूप की गौरवगाथा सुनाने लगते है छ[5] साहित्य में चित्रीत नारी की दुय्यम प्रतिमा का साहित्य में नारी जीवन का अवहेलना करता है। नारी का अवमान करके उसे मानवाधिकार से वंचित रखता है। वेद, पुराण, रामायण महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथों में नारी का चित्रण पुरूष की तुलना में दुय्यम एवंम गौन दिखाई देता है। रामायण में सीता को अपनी नैतिकता को सिध्द करने के लिए अग्नीपरीक्षा देनी पड़ी, किंतु राम को अहिल्या, शबरी, शुर्पनखा अदि के साथ विष्णु अवतार के रूप में दिखाया। रामायण में न ही रामने नैतिकता की परीक्षा दी अथवा सामाजिक व्यवस्था ने राम की नैतिकता पर सवाल उठाये। लक्ष्मण द्वारा उर्मिला की उपेक्षा रामायण में मानवाधिकार की अवहेलना ही है। महाभारत में पांचाली का भरी सभा में वस्त्र हरण करना अन्यायी कृत्य है, लेकिन उससे भी अन्यायी कृत्य उसके पति ने किया उसे जुए के दाँव पर लगाकर। स्त्री को अपने समकक्ष, समान न समझकर उसे अपनी बपौती, गुलाम समझना भारतीय पुरूष वर्ग की धारणा है, जो मानवाधिकार की उपेक्षा एव हनन करती है।

कथा पुराणों में ही स्त्री को दुय्यम लेखा गया ऐसा नही है, बल्कि मध्ययुगीन और आधुनिक साहित्य में भी नारी का स्थान दुय्यम एव कमजोर चित्रीत हुआ है। स्त्रीवादी रचनाकारों में चित्रीत नारी मानवाधिकार के लिए जुझती हुई दिखाई देती है, किंतु उसके आस-पास का परिवेश उसका अधिकार छिनने में लगा हुआ है। नारी को नैतिकता के धर्म चक्र में फसाकर, तौलकर उसका शोषण किया जाता है। संत तुलसीदासजी ने रामचरित्र मानस में लिखा है कि, घ्ढोल,गुंवार शुद्र, पशु, नारी सकंल ताडन के अधिकारी।ङ इस पद में नारी को दुय्यम लेखना तथा उसकी पशु के साथ तुलना करना स्त्री मानवाधिकारी का हनन ही है। आधुनिक कवि मैथिली शरण गुप्त जी नारी का यथार्थ चित्रण कर नारी मानवाधिकारी से कितनी दुर थी इसका चित्रण घ्अबला तेरी यही कहानी, आंचल में दुध आखों में पानीङ इन पक्तियों में करते है। समाज में पुरूषी विचारधाराने नारी जीवन को अनेक बधनों में जकडकर रखा है, जिसका सजीव एव यथार्थ चित्रण साहित्यकार की रचनाओं में दिखाई देता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

स्त्री-पुरूष समानता, मानवाधिकार, समता, स्वातंत्र्य बंधुता आदि शब्दों का मायाजाल नारी जीवन में मृगजल की तरह है, जिसका पुरूप प्रधान व्यवस्था में अभास निर्माण किया जाता है। वास्तविकता से को सो दूर दिखाई देती है। स्त्री पुरूष समानता, मानवता का नकली दिखावा दिखाकर वास्तव में पुरूषी विचारधारा नारी का शोषण करती आयी है, नैतिकता का लेवल स्त्री के साथ चिपकाकर खुद स्वैराचारी जीवन का उपभोग लेती है। नैतिकता के अन्यायी मानदंड के बारे मैत्रेयी पुष्पा लिखती है कि, "बडे अचरज की बात है कि स्त्री को शरीर के आधार पर ही घेरा जाता है और यदि वह खुद बोले तो अशील, अमर्यादा का लाछंन तैयार है। सारा कुछ पुरूष सत्ता का किया धरा है, किसी विदुषी नारी से पुछकर शास्त्र नही रचे गए, न नैतिकता के मानदंड बने। तभी तो पुरूष से नतनत्र और घुघट में रहने के लिए नही कहा जाता।"[6] भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री जीवन को लेकर प्रचलित रीतिरिवाज, प्रथा, परंपरा स्त्री जीवन के लिए अन्यायी ओर आत्याचारी है। नारी को जन्म से लेकर अंततक पुरूष वर्चस्व के नीचे जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया है। नैतिकता को लेबल स्त्री जीवन के साथ इतना चिपकाया जाता है कि, उसके उपर हो गए बलात्कार आत्याचार के लिए भी उसे ही दोषी माना जाता है। सदियों से लेकर आज तक नैतिकता के बोझतले नारी दब चूकी है। उसे पुरूष के समान सन्मान का जीवन न मिलना मानवाधिकार का हनन ही है।

संदर्भ :

1. समकालीन कहानी - युगबोधक का संदर्भ - पुष्पपाल सिंह है, पृ. 45
2. स्त्रीत्व की नैतिकता - नैतिकता के नए सवाल- मैत्रीये पुष्पा - पृ.135
3. मेमना - मणिका मोहिनी - पृ. 107
4. अभ तलाश जारी है - मणिका मोहिन - पृ. 131
5. स्त्रीत्व की नैतिकता - मैत्रेयी पुष्पा - पृ. 136
6. स्त्रीत्व की नैतिकता - मैत्रेयी पुष्पा - पृ. 138, 139

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor
Dr.Rameshwar Bangad
Dr.Archana Pardeshi
Prof.Amar Alde

Chief Editor
Dr.Dhanraj T.Dhangar
Assist.Prof.(Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College, Yeola,
Dist.Nashik (M.S.)

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348-7143
February-2019

16	"बंजारा जन जातियों के लोकगीत " — प्रा.डॉ.वंदन बापुराव जाधव	50
17	21 वीं सदी के हिंदी दलित उपन्यास — प्रा. डॉ. सुनीता कावळे	53
18	'इक्कीसवीं सदी की कविताओं में चित्रित — प्रा. हिरामण देवराम टोंगारे	56
19	हिंदी उपन्यास : सामाजिक सरोकार और — डॉ.पंडित बन्ने	59
20	दलित साहित्य की सशक्त रचना — डॉ. प्रकाश गायकवाड,डॉ. नितीन कुंभार	61
21	इक्कीसवी सदी की कविता में संवेदना के स्वर — डॉ. दत्ता साकोळे	65
22	हिंदी कहानियों में चित्रित वेश्या नारी का जीवन ... — प्रा. डॉ.चाटे तुकाराम	67
23	स्त्री जीवन की त्रासदी : यामिनी कथा — प्रा. डॉ. द्वारका गिते–मुंडे	70
24	गितांजलि श्री के 'माई' उपन्यास ... —डॉ.अलका डांगे–प्रा.विद्या खाडे	73
25	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श — प्रा.डॉ. पठाण आयुबखान जी.	75
26	21 वीं सदी के कथा साहित्य .. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'	79
27	विकास के नाम पर विनाश की कथाः 'ग्लोबल गाँव के..—डॉ. आर. एम. शिंदे	81
28	इक्कीसवीं सदी का कथा साहित्य — प्राचार्य डॉ.बी.डी.मुंडे	83
29	'ऐ गंगा तुम बहती हो क्यूँ ?' दलित —प्रा. डॉ. अभिमन्यू नरसिंगराव पाटील	87
30	समकालीन कविता मे अभिव्यक्त स्त्री विमर्श — डॉ.पंडित गायकवाड	90
31	इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में 'पारधी' .... प्रा.डॉ.डमरे मोहन मुंजाभाऊ	93
32	स्त्रीवादी रचनाओं में स्त्री विमर्श — प्रा.डॉ. अरविंद अंबादास घोडके	96
33	आधुनिक हिन्दी मराठी दलित कविता में मानवाधिकार— डॉ. गौतम कांबळे	98
34	देवकीनंदन शुक्ल के उपन्यासों में सामाजिक ..—प्रा. गंगाधर बालन्ना उषमवार	102
35	इक्कीसवीं सदी की पड़ताल करती हिंदी लघुकथा — प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	105
36	भवानदास मोरवाल के उपन्यासों में राजनैतिक चेतना —प्रा. डिम्पल एस. पाटील	108
37	21 वीं सदी के कथा साहित्य के पारिवारिक परिदृश्य —डॉ. संतोष काळे	111

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

स्त्रीवादी रचनाओं में स्त्री विमर्श

प्रा.डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
हिंदी विभाग, सहायक प्राध्यापक,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबजोगाई

==

श्लील और अश्लीलता के कटघरे में कैद कर सदियों से भारतीय नारी का शोषण हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा एवं चरित्र्य संपन्नता के आड में पुरूषप्रधान मनोवृत्तीने नारी का सामाजिक, शारीरिक, मानसिक शोषण किया है। चक्का, चुल्हा और बच्चों तक नारी को सीमित रखने के लिए उसे अक्षर ब्रम्हा कोसो दुर रखा गया। निरक्षर भारतीय नारी पुरुष प्रधान मनोवृत्ती द्वारा बनाए गये नियमों पर चलने में ही धन्यता मानती थी। भारतीय पुरूष वर्चस्ववादी समाज व्यवस्था में निरक्षर भारतीय नारी को साक्षर बनाने की पहल म. फुले और सावित्रीबाई फुले दांपत्य ने की थी। जो तात्कालीन समय में प्रचलित समाजव्यवस्था के विपरीत, विरोधी एंव क्रांतीकारी थी। इसलिए मेरी दृष्टि से भारतीय समाज में स्त्री विमर्श का आगाज म. फुले और सावित्रीबाई फुले के सामाजिक एंव शैक्षणिक कार्य में दिखाई देता है।

परंपरा से निरक्षर भारतीय नारी का आधुनिक युग में व्यापक रूप से अक्षर विश्व से परिचय होता गया। शिक्षित नारी देशी विदेशी भाषाओं का ज्ञान अर्जित कर अपने आप को टटोलने लगी। समता, स्वातंत्र्य और बंधुता की शिक्षा देनेवाली भारतीय संस्कृति एंव संविधान में अपने अस्तित्व की तलाश करने लगी। सामाजिक बंधनो का विरोध कर सन्मानपुर्वक जीवन जीने की कोशिश भारतीय महिलाओं ने की और इस कोशिश में सबसे बडा योगदान साहित्य का दिखाई देता है। स्त्री–पुरुष रचनाकारोंने भारतीय नारी के वास्तविक जीवन को चित्रीत करने के साथ–साथ पंरपरासे चली आ रही पुरुष प्रधान स्त्री विरोधी सामाजिक मान्यताओं का विरोध करनेवाली स्त्री चरित्र का सृजन किया। जिसका परिणाम भारतीय समाज में दिखाई देता है। प्रभा खेतान कहती है कि, "यह इतिहास में पहली बार घट रहा है कि स्त्री पितृसत्ता को नकार रही है, उस सत्ता द्वारा आरोपित भूमिकाओं के प्रति सवाल उठा रही है, ये वस्तु से व्यक्ति बनने की प्रकिया है।"[1] आधुनिक स्त्री रचनावादी महिला एंव पुरूष रचनाकारों में स्त्री विरोधी सामाजिक मान्यताओं को अस्विकार कर स्त्री–पुरूष समानता को अपनाकर अर्थपुर्ण जीवन जीने की कोशिश दिखाई देती है।

स्त्री उपेक्षिता जैसी महत्वपुर्ण पुस्तक लिखनेवाली तथा पश्चिम में स्त्री विमर्श का आरंभ करनेवाली सिमोन द बोऊवार ने व्यवस्था का विरोध किया है। सिमोन कहती है, "व्यक्तिगत स्तरपर औरतों को घर की परिधि लाँघकर बाहर उत्पादक श्रम में हिस्सेदारी करनी चाहिए। और यदि सम्भव हो तो विवाह संस्था को भी पुरी शिध्दत से नकार देना चाहिए। मैं विवाह संस्था को औरतो के लिए बहुत खतरनाक मानती हूँ।[2] विवाह संस्था में अथवा कुटुंब व्यवस्था में पितृसत्ताक व्यवस्था का प्रभाव है। परिवार को बांधकर रखनेवाली नारी को यही परिवार और कुटुंब व्यवस्था अनेक बंधन में बांधकर उसका शोषन करते है। विवाह से पुर्व पिता, विवाह के बाद पती और बुढापे में बेटा/पुत्र के अधीन जीवन जीने के लिए नारी मजबुर दिखाई देती है। सामाजिक स्वास्थ को बनाए रखने के लिए कुटुंब व्यवस्था महत्वपुर्ण है किंतु नारी जीवन के लिए यही कुटुंब व्यवस्था अन्यायी है। आधुनिक हिंदी महिला रचनाकार मणिका मोहिनीजीने भी नारी विरोधी सामाजिक संरचना एंव मान्यताओं का विरोध किया है। मणिकाजीने विवाह संस्था का विरोध 'बीमार' कहानी में किया है। मणिका की नायिका रीमा बीमार कहानी में कहती है कि विवाह कितनी गलत और गैरजरूरी संस्था है मम्मी, दो जून की रोटी और एक रात सेक्स का जुगाड बैठाने के लिए इतना बडा झझंट।[3]

स्त्रीवादी रचनाकार हर उस सामाजिक संरचना को तोड देना चाहते है जो स्त्री विरोधी है। परंपरा से चली आ रही पत्नी भूमिका में परिवर्तन लाना चाहते हैं। उससे आगे की कहे तो पत्नी की भूमिका को ही अपने जीवन की फिल्म से डी.लिट करना चाहते हैं। सास–ससुर, मान–सन्मान, पति–बच्चे, रिश्ते–नाते, समाज–प्रतिष्ठा आदि को ठोकर मारकर स्त्रीवादी रचनाकारों की नायिका स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है। मणिकाजी की नायिका परिणति कहानी में कहती है कि, "मैं उन औरतों की भाँति अपनी जिन्दगी बसर करना नहीं चाहती, जो विवाह का अर्थ घर बदलकर बच्चे पैदा करना साबित करती हो।"[4] भारतीय समाज व्यवस्था में विवाह की मान्यता नारी के लिए चक्का, चुल्हे और बच्चों तक सीमित थी। उस मान्यता को तोडकर स्वच्छंद जीने की कामना स्त्रीवादी रचनाकारों की नायिकाओं में तथा भारतीय महिलाओं में दिखाई

Scanned with OKEN Scanner

देता है। आधुनिक स्त्री रचनावादी साहित्य के बारे में प्रभा खेतान कहती है कि, "स्त्री साहित्य अपनी मूल चेतना में उसे पराधीन बतानेवाली इस पितृसत्ताक व्यवस्था में निहित विवाह संस्था, धर्म, जाति, वर्ग आदि की स्त्री विरोधी भूमिका को प्रकाश में लाता हैं।"[5]

आँज भी स्त्री–पुरूष समानता की मसालेदार चर्चा गल्ली–नक्कुड से लेकर संसद तक दिखाई देती है, किन्तु स्त्री–पुरूष समानता का दिखावा दिखानेवाले पुरूषी मानसिकतानें स्त्री को सदा ही हीन समझकर उसे सामाजिक संरचना में उसे दुय्यम स्थान दिया है। अन्यथा 33 प्रतिशत महिला आरक्षण का विधेयक चर्चा का विषय ही बनकर नहीं रहा। 16 वीं लोकसभा में आधी आबादीवाले भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधीत्व 543 सिटों में से सिर्फ 61 सिटोंपर महिला सांसद प्रतिनिधीत्व करती है, यह भारतीय सामाजिक संरचना में नारी के दुय्यम स्थान को दर्शाता है। इसलिए स्त्रीवादी रचनाकार आर्थिक, सामानिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि क्षेत्र में स्त्री को पुरूष के समान सर्वाधिकार मिलने की माँग करते है। सदियों से हो रहे आत्याचार का विरोध कर पुरूषों के समान स्वच्छंद जीवन जीने की कामना करते है। पुरूष अपने पसंद के अनुरूप सामाजिक मान्यता के विपरित अपनी शारीरिक भुख मिटाए तो उस पर समाज उसकी पवित्रता, चरित्र्य को काँच का बर्तन नहीं समझता किंतु नारी स्वछंद जीने की कोशिश करे तो उसके चरित्र काँच का बर्तन बनाया जाता है। (स्त्री चरित्र – काँच) का जो एक बार टुटने से फिर नहीं जुड सकता किंतु पुरूष का चरित्र इसी समाज में काँच का न होकर रबर का हो जाता है। समाज के इसी अन्यायी और दोगली नीति का विरोध स्त्रीवादी रचनाकार की रचनाओं में दिखाई देता है। मणिकाजी नारी के प्रति अपनानेवाली इसी अन्यायी नीति को अस्वीकार कर स्वच्छंद जीने की कामना करती है। ढाई आक्षर प्रेम का कहानी की नायिका अपने सहेली से कहती है कि कार में अधिक से अधिक क्या कर सकता था? कुछ कर भी लेता तो कर लेने देती यार। शरीर ही तो है धोओं औंर साफ।[6] महिलावादी रचनाकारों ने स्त्री के लेकर प्रतिष्ठीत बनाए गये आब्रु, इज्जत, प्रतिष्ठा परंपरा आदि स्त्री विरोधी धारणा का विरोध करते हुए उसे स्वच्छंद और स्वच्छ रूप से देखा तथा स्वच्छंद जीवन जीने की कामना की है।

सामाजिक मान्यताओं में बंधकर घुटन भरा जीवन जीनें में इस नायिका का विश्वास नहीं है। वह स्त्री विरोधी सभी संरचरना तोडकर आजाद पंछी की तरह जीवन जी रही है। ढाई आक्षर प्रेम का कहानी की नायिका तीन बच्चों की माँ होकर भी अकेली मनमौजी जीवन जीती है। भारतीय समाज व्यवस्था में बच्चों को परवरिश की जिम्मेदारी बहुतांश रूप में माँ की ओर ही अधिक रहती है, किंतु इस कहानी के नायिका नें अपने और पति के वैचारिक मतभेद के बाद बच्चों को पति की ओर सौंप कर खुद अकेली बेबाक जीवन जीती हैं। यहाँ मणिकाजीने बच्चों के परवरिश अथवा पालन पोषण के कर्तव्य को माँ के साथ ही जोडना आवश्यक होता है इस सामाजिक मान्यता को तोडकर बच्चों के परवरिश की जिम्मेदारी पिता की भी होती है। इसलिए मनमौजी नायिका का चित्रण अपने साहित्य में किया है।

संदर्भ सूची :

1. जनसत्ता – तिथि – 11 मार्च 2018
2. प्रतिरोध की संस्कृति और साहित्य, परमानंद श्रीवास्तव – पृ.38, 39
3. अन्वेशी – मणिका मोहिनी – बीमार – पृ. 124
4. स्वप्नदंश – मणिका मोहिनी – पृ. 109
5. जनसत्ता – 11 मार्च 2018
6. ये कहाँनियाँ – मणिका मोहिनी – पृ. 48

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Sponsored By
National Commission for Women, New Delhi
and
Organised By
M.S.P. Madal's Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai

One Day National Level Seminar
on

Government Schemes and women Issues Related to Water, Sanitation and Hygiene

26 March 2019 Special Issue - 168

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue
Dr. Vanmala Govindrao Gundre
Principal
Yashwantrao Chavan College, Ambajogai. Dist. Beed.

Dr. Ahilya B. Barure
Assistant Prof. Dept. of English
Yashwantrao Chavan College, Ambajogai Dist. Beed

Co-Editor
Associate Prof. K.D. Gade
Dr. Arvind A Ghodke

Scanned with OKEN Scanner

74. बालकांचे हक्क आणि आंतरराष्ट्रीय संघटना 199
प्रा. वैशाली माधवराव दिवे

75. मानवी हक्क : बालहक्क दृष्टिक्षेप 201
प्रा. आर.बी.काळे

76. नैतिकता के कटघेरें में दमतोड़ता मानवाधिकार 203
प्रा.डॉ. अरविंद अंबादास घोडके

77. मानवाधिकार आणि महिला सक्षमीकरण 205
डॉ.सुरेखा सदाशिवराव शिंदे

78. मानवी अधिकार आणि भारतीय राज्यघटना २०७
प्रा.डॉ. जगदीश देशमुख

79. मानव अधिकार व बालकामगार 210
प्रा.सोनटक्के रमेश शंकरराव

80. मानवी हक्कांचे स्वरुप 213
डॉ.शिंदे एस.के.

81. मानवी अधिकार आणि स्वंयसेवी संघटना 215
डॉ. जाधव संजयकुमार हनुमंतराव

82. भारतातील अन्न सुरक्षा कायदा व मानवी हक्क 217
प्रा.बालासाहेब जोगदंड

83. मानव अधिकार आणि महिला राजकारण: विशेष संदर्भ आमदार डॉ. विमलताई मुंदडा 219
आलझेंडे रेखा दौलतराव

84. भारतीय संविधानातील मानवाधिकार 222
प्रा. डॉ. सांगळे वी.एस.

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | March 2019 | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 Special Issue – 168 | UGC Approved No. 40705

36. सॅनिटरी नॅपकिनची विल्हेवाट व महिलांमधील जनजागृती प्रमुख — 119
प्रा. रोहिणी निवृत्ती अंकुश

37. जलव्यवस्थापनात महिलांचा सहभाग : काळाची गरज — 122
प्रा.कविता कोंडपल्ले

38. जलव्यवस्थापनात महिलांचा सहभाग — 124
डॉ.सौ.उमा आसरडोहकर

39. महाराष्ट्र शासनाच्या योजना व महिला — 126
डॉ. आरडले एस. डी.

40. पर्यावरण आणि स्त्री आरोग्य - एक दृष्टिक्षेप — 128
प्रा.गडदे भारती बाबूराव

41. पर्यावरणरक्षण आणि स्त्रिया — 130
प्रा.डॉ.संपदा कुलकर्णी-गिरगावकर

42. जल व्यवस्थापनात स्त्रियांची भुमिका — 132
प्रा. दिलीप व. कांबळे , प्रा. डॉ. पिसाळ एच.जी.

43. कुमारी माता- एक सामाजिक समस्या — 136
डॉ.बालासाहेब किलचे

44. पर्यावरण संरक्षण व व्यवस्थपनात महिलांची भुमिका — 140
डॉ. जयदीप रामकृष्ण सोळंके

45. पेयजल और महिलाओं का व्यवस्थापन — 143
प्रा.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव

46. नारी स्वास्थ-सामाजिक प्रतिष्ठा — 146
डॉ.अरविंद अंबादास घोडके

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) - 0.676 Special Issue - 168 | March 2019 | ISSN: 2348-7143 | UGC Approved No. 40705

नारी स्वास्थ्य-सामाजिक प्रतिष्ठा

डॉ. अरविंद [illegible] घोडके
हिंदी विभाग, सहायक प्राध्यापक, [illegible] महाविद्यालय,
अंबाजोगाई, जि. बीड

[illegible] समय [illegible] और नारी [illegible] से प्रभावित रहा है। [illegible] जीवन की [illegible] के लिए [illegible] सामाजिक [illegible] और [illegible] का प्रयोग किया है, वैसे ही भारतीय नारी अपने जीवन की [illegible] विरोधी सामाजिक मान्यताओं से [illegible] और [illegible] के लिए [illegible] दिखाई देती है। नारी विरोधी [illegible] भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताएं एवं भारतीय नारी [illegible] और [illegible] स्वास्थ्य से भी [illegible] है। [illegible] भारतीय [illegible] सलामत तो पगडी पचास [illegible] के और भी, तो दूसरी ओर [illegible] शारीरिक बिमारियों को छिपाने एवं [illegible] की मजबूरी। सर सलामत तो पगडी पचास [illegible] विचारधारा [illegible] रखती है [illegible] नारी के अनुसार नारी का शारीरिक स्वास्थ्य [illegible] नारी, ओपनवर, [illegible] विचारधारा [illegible] स्वस्थ नारी परिवार, समाज और देश को [illegible] शारीरिक स्वास्थ्य के [illegible] स्त्री-पुरुष समानता की [illegible] है। स्वस्थ नारी परिवार, समाज और देश को [illegible] प्रयास हो रहे है। [illegible] है इसलिए [illegible] भारत में नागरिक स्वास्थ्य के लिए [illegible] संस्था और सरकार की ओर से [illegible] प्रयास हो रहे है। [illegible] के [illegible] में [illegible] लिखते है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वस्थ नागरिक ही देश और समाज को समृद्ध बना सकते है। यही वजह है कि केंद्र सरकार नागरिकों की स्वास्थ्य रक्षा को सर्वोपरि मानती है।[1]

भारतीय शासन नागरिक के स्वास्थ्य के लिए हर प्रकार से प्रयासरत दिखाई देता है किंतु पारंपारिक विचारधारा एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से आज भी लाखों महिलाएं आन्तरिक बिमारी को छुपाकर दयनीय जीवन जी रही है। भारतीय सामाजिक मान्यताओं में नारी के [illegible] [illegible] को प्रतिष्ठा का रूप देकर उसे अनेक [illegible] में बांधकर रखा है। [illegible] प्रतिष्ठा एवं उसके उपर लादे गए बंधन आज भारतीय नारी जीवन के लिए शारीरिक स्वास्थ्य की भयानक समस्या बन चुकी है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 2016 में 14 लाख कैंसर के मरीज थे और इनकी संख्या बढने की संभावना है। रिपोर्ट के मुताबिक स्तन कैंसर फिलहाल भारतीय महिलाओं में सबसे आम कैंसर है।[2] स्तन कैंसर बीमारी के साथ-साथ महिलाओं में गर्भ कैंसर की बीमारी भी अधिक रूप में पायी जाती है, किंतु अधिकतर भारतीय महिलाएं पारिवारिक एवं सामाजिक आबु एवम् प्रतिष्ठा डर से इस बीमारी को छुपाकर रखती है। इससे [illegible] बिमारी के कारण किसी महिला की मृत्यु बाद भी उसकी बिमारी को परिवार छिपाने की कोशिश करता है। भारतीय सामाजिक विचारधारा जिस तरह नारी के [illegible] जीवन को प्रतिष्ठा का रूप देकर उसका मानसिक, शारीरिक सामाजिक और [illegible] शोषण करती है, इसी तरह सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बिमारी को शोषण किया है, उसी तरह सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बिमारी को छिपाकर रखने की वृत्ती ने नारी का जीवन नरक बना दिया है।

पुरुषप्रधान भारतीय समाजव्यवस्था में नारी को बचपन से ही उपेक्षित रखा गया है। पौष्टीक भोजन, स्वच्छ पेयजल और चिकित्सा सुविधा आदि में लडका-लडकी में भेद किया जाता रहा है। ग्रामीण भारत की महिलाओं में आहार के दृष्टी से भेदभाव अधिक दिखाई देता है। पौष्टीक भोजन के अभाव में नारी को अपने शरीर के लिए अपेक्षित उर्जा नही मिलती जिसका विपरित परिणाम नारी के स्वास्थ पर दिखाई देता है। परिवार के सभी सदस्य पति, बच्चे सास-ससुर आदि से पूर्व भोजन करना सामाजिक मान्यता विरोधी है। इसलिए भारतीय ग्रामीण नारी पति, बच्चे और बड़े बजुर्गो से पूर्व खाना नही खाती है। रसोई में बचा हुआ खाना खाकर उसे गुजारा करना पडता है। जिससे कुपोषण एवं बिमारी का प्रभाव भारतीय ग्रामीण महिलाओं में अधिक दिखाई देता है। दुखद पहलू है कि लगभग दो तिहाई गर्भवती महिलाये तथा महिलाओं की आधी जनसंख्या विभिन्न प्रकार की बिमारियों से ग्रस्त है जिस में प्रमुख रूप से प्रोटीन की कमी है। कुपोषण से ग्रस्त जन्मदायी माता की जान जोखीम में होती है और नवजात शिशु को भी संक्रमण का भय बना रहता है।[3] आहार, निद्रा और मैथुन किसी भी जीव के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। किंतु पुरुषी मानसिकताने स्त्री जीव के लिए अपेक्षित आहार, निद्रा और मैथुन को ही नियमों में बांधकर नारी जीव और नारी जीवन को बदरंग बनाया है। आहर, निद्रा और मैथुन किसी भी जीव की प्राथमिक जरूरत होती है, जिसके अभाव में उसका जीना असाह्य होता है, किन्तु सदियों से सामाजिक प्रतिष्ठा रूपी पिंजरे में बंद भारतीय नारी अपने इसी नियंत्रित जीवन को धन्य मानकर जीती आयी है। और जब-जब भारतीय नारी ने सामाजिक प्रतिष्ठा रूपी पिंजरे से बाहर कदम रखने की कोशिश की है, तब तब उसे पुरूषी विचारधारा के विरोध का सामना करना पड़ा है। उचित आहार, निद्रा और मैथुन के अभाव में किसी भी जीव का शारिरीक और मानसिक स्वास्थ ठीक नही रह सकता वैसे ही भारतीय नारी का जीवन शारिरीक और मानिकस स्वास्थ के अभाव में बेचैन एवं कुंठित हो जाता है।

सर सलामत तो पगडी पचास वाली यथार्थ सोच भारतीय महिलाओं द्वारा अपनानी चाहिए। प्रतिष्ठा रूपी पगडी के लिए अपनी बिमारियों को छिपाकर रखना परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए अहित कारी होगा। तन-मन की हर समस्या का समाधान खोजने से मिलता है बल्कि उसे छिपानेसे वह नासूर बन जाता है। किंतु सर सलामत तो पगडी पचास वाली विचारधारा भारतीय महिलाओंसे कोसो दुर दिखाई देती है। जब तक बच्चा रोता नही तब तक उसकी माँ भी उसकी ओर ध्यान नही देती किंतु जब बच्चा रोता दिखाई देगा तब वह जल्दी से उसे पास लेकर उसे खाना देगी। यह साधारण सी बात भारतीय महिलाओं को ध्यान में रखनी होगी और अपनी शारिरीक, मानसिक बिमारी को बात निडर होकर अपने परिवार और समाज के समुख रखनी चाहिए। जान से बढ़कर दुनिया में कोई चीज मुल्यवान हो नही सकती इसलिए अपने जीवन को, अपने शरीर को मोल्यवान समझकर पहले अपना शरीर धर्म के सेवा करो और उसके बाद समाज प्रतिष्ठा का आनंद उठाओं।

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) - 0.676 Special Issue - 168 | March 2019 | ISSN: 2348-7143 | UGC Approved No. 40705

[illegible] बिमारी कैसे हुई है, बिमारी [illegible] भारतीय समाज में [illegible] बिमारी [illegible] इसलिए बिमारी, बिमारी होती है, [illegible] बिमारी के रूप में देखा जाना चाहिए। [illegible] भारतीय नारी का शारिरीक और मानसिक स्वास्थ ठीक होगा। [illegible] महिलाओं का स्वास्थ ठीक होगा तब देश का स्वास्थ भी उत्तम होगा।

संदर्भ :-
१. (कुरूक्षेत्र - अगस्त, 2012, संपादकीय राहुल [illegible])
२. Anjtakin Editah by [illegible], 3 Dec. 2018
३. (भारतीय नारी [illegible] समस्याएं और भावी समाधान, पृ. 53)

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

I N T E R N A T I O N A L R E S E A R C H F E L L O W S A S S O C I A T I O N

Impact Factor – 6.625

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

Close

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra.	Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl	Mr. Satish Funne	136
33	Problems of Rural Migration in India	Mr. B. S. Jogdand	140
34	White Collar Crime in India	Mr. Bandu Patekar	143
35	Poverty in India	Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India	Prof. Dattatraya Mundhe	150
37	An Approach towards Social Security	R. J. Gaikwad	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation	Ravindra Kharat	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries	Shaikh Jahara Abdul Rahim	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India	Mr. Vaibhav Shendage	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice	Shesherao Rathod	166
42	Poverty in An Unorganised Sector	Dr. Sonal Ubale	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India	Subhash Pole	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection	Uday Kharat	176
	हिंदी विभाग		
45	मधुक एकांकी और पर्यावरण समस्या	डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या	दीपक डोंगरे	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नहीं	प्रा. दीप्ती होळकर	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे	डॉ. शशि बाला भट्ट	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष)	डॉ. अरविंद घोडके	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम	डॉ. जे.एस.धायगुडे	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या	डॉ. संगीता आहेर	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	डॉ. सय्यद शौकत अली	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद	डॉ. रजनी शिखरे	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में)	डॉ. ललिता राठोड	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य	डॉ. रजनी शिखरे	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ	डॉ. रजनी शिखरे, एन. टी. पोटकुले	225
57	भारत में भ्रष्टाचार की समस्या	डॉ. आर.के. देशमुख	229
58	भ्रष्टाचार	महादेव करडे	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावरणीय प्रभाव	किरण पवार, कविता जोशी	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या	डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल	संतोष नागरे	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में)	डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या	डॉ. रमेश व्ही.मोरे	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध विमर्श पर एक दृष्टि	ऋचा राय	257

Scanned with OKEN Scanner

Quarterly

ISSN 2582-5429 (online)

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 Vol.02 ISSUE. I (C)

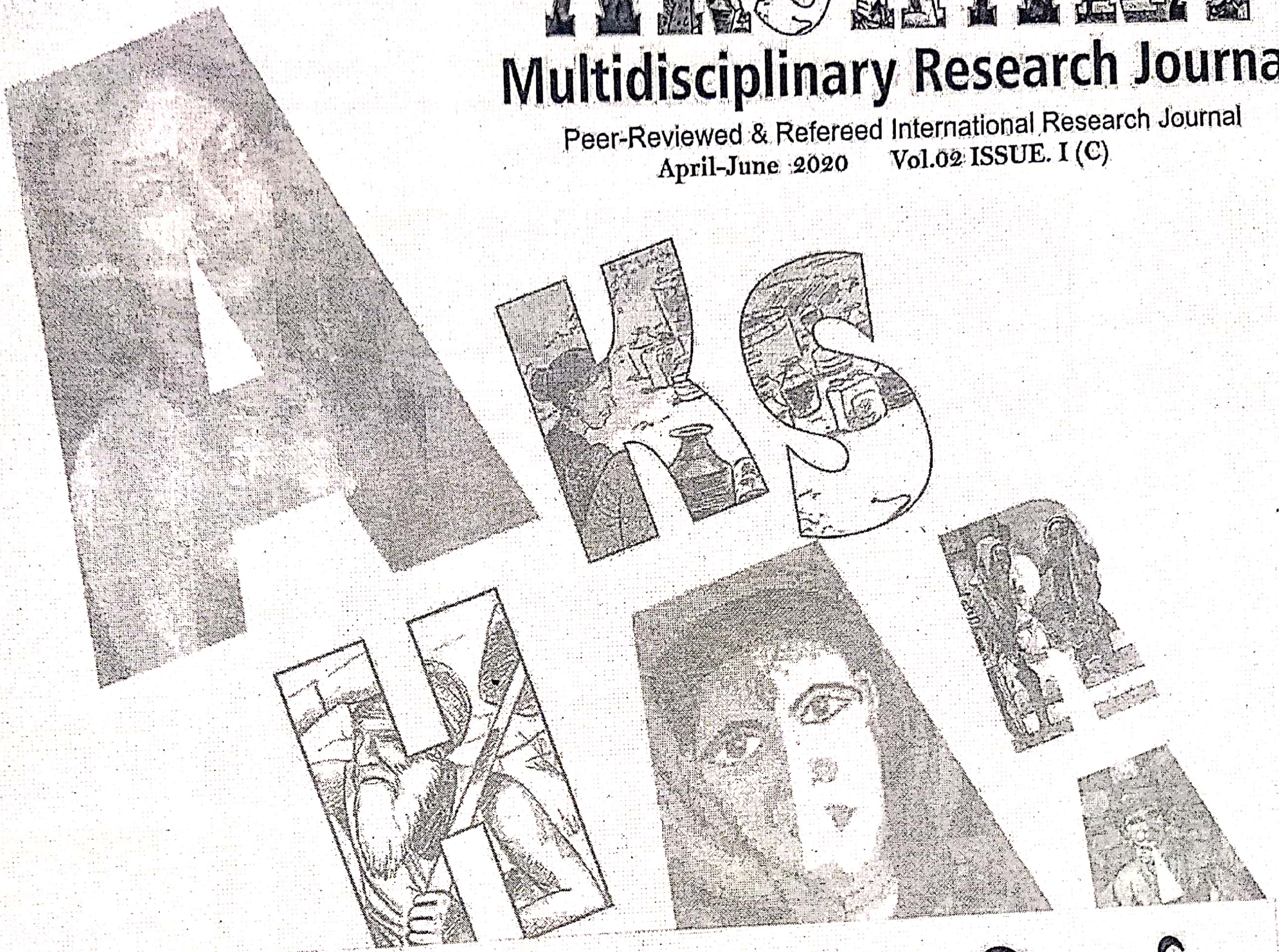

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

Guest Editor

Dr.Mangala Sabadra

Principal

Smt.Padambai Kapurchandji Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal

Executive Editor

Dr. J.V.Dhanvij

Vice-Principal

Smt.Padambai Kapurchandji

techa Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal

Dr. Shilpa Patil

Vice-Principal

Smt.Padambai Kapurchandji

Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal

Associate Editor

Mr. Nilesh S. Guruchal

Smt.Padambai Kapurchandji

Kotecha Mahila Mahavidyalaya,

Bhusawal

Dr. Vijay E. Sor

D. N. College,Faizpur

Tal.Yawal

Dist.Jalgaon

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli** , AMRJ, Yawal

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2582-...

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
01	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	ओमप्रकाश	3-7
02	दलित नारी विमर्श : एक दृष्टिकोण	डॉ. सुरेश कानडे	8-11
03	इस्लाम और दलित व दलित मुसलमान	डॉ॰ इबरार खान	12-17
04	इक्कीसवी सदी की कविताओं में दलित विमर्श	प्रो.डॉ.मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	18-20
05	'आल्मा कबूतरी' उपन्यास में आदिवासी जीवन	प्रा.डॉ.वनिता त्र्यंबक पवार-निकम	21-24
06	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	वसुंधरा देसाई	25-29
07	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे	30-36
08	मणिका की कहानी में स्वच्छंद नारी	डॉ.घोडके अरविंद अंबादास	37-39
09	'धार' उपन्यास आदिवासी पीड़ा का दस्तावेज	प्रा.डॉ.भारती बी.वळवी	40-46
10	दलित साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.सुधीर गणेशराव वाघ	47-49
11	हृषिकेश सुलाभ के नाटक में आदिवासी विमर्श	डॉ.अशोक शामराव मराठे	50-54
12	'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य में चित्रित नारी चेतन	प्रा.नितिन विठ्ठल पाटिल	55-59
13	'दंडकारण्य' कविता : आदिवासी अस्मिताबोध	प्रा.सुपर्णा संसुद्धी	60-61
14	'पाँचवाँ स्तंभ' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श	डॉ.संजयकुमार शर्मा, डॉ.दिनानाथ मुरलीधर पाटील	62-65
15	कबूतरा जनजाति की त्रासदी : 'अल्मा कबूतरी'	प्रा.पोटकुले हिरा तुकाराम	66-68
16	किन्नरों की आपबीती लक्ष्मी की जबानी- ('मै लक्ष्मी...मै हिजडा'आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)	प्रा.सौ.कविता संदीप तळेकर	69-73
17	स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ एवं निर्मल वर्मा की कहानी माया दर्पण	डॉ.प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी	72-80
18	'विजन' उपन्यास के स्त्री पात्रों का मानसिक अंतर्द्वंद्व	डॉ.संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी	81-84
19	साहित्य एवं नारी विमर्श	संगीता राव	85-87
20	समकालीन हिंदी कहानी में दलित चेतना	प्रा.रज्जाक शेख	88-90
21	दलित साहित्य की अवधारणा	प्रा.पाटोले अनीता किसन	91-93
22	स्त्री चेतना का उपन्यास – 'मुझे चाँद चाहिए'	प्रा.डॉ.पूनम त्रिवेदी	93-96

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

मणिका के कहानी में स्वछंद नारी

डॉ. घोडके अरविंद अंबादास

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, यशवंतराव चव्हाण महाविधालय, अंबाजोगाई

ईमेल– ghodkearvind123@gmail.com मोबाईल नं – 8208918100

हिंदी साहित्य के उत्तर आधुनिक युग में नारी विमर्श सर्वाधिक चर्चित विषय रहा हैं। आधुनिक स्त्रीवादी रचनाकारों की रचनाओं में नारी जीवन के हर कोने को छुने की कोशिश दखिाई देती हैं। पंरपरा और प्रतिष्ठा की आड में पुरूषी सामाजिक व्यवस्था ने नारी के तनमन की आंकाक्षा को नियमों में बाधकर उसका का गला घोट दिया हैं। इस से आगे जाकर कहे तो पुरूषी मानसिकताने पंरपरा और प्रतिष्ठा की आड में नारी के तनमन की आंकाक्षा को नैतिकता के कटघेरे में कैद कर उसके शरीर और भावना के दमन की तजबिज सदियों से की हैं। नैतिकता के कटघेरे में नारी का दम घुटता हैं। पुरूषी वर्चस्ववादी सामाजिक व्यवस्था को नकारने की कोशिश विदुशी महिला द्वारा सदियो से होती रही हैं किंतू आधुनिक काल की महिला अपने अधिकार के लिए अधिक सजग दिक्षाई देती हैं। नैतिकता की डोर नारी जीवन को गुलाम बनाकर रखती थी। इसलिए आधुनिक महिला नैतिकता की डोर को काटकर स्वछंद जीवन जीने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। पंरपरा और प्रतिष्ठा को नकारकर आधुनिक भारतीय नारी हरपल जीवन जीने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। पुरूषी पंरपरा और प्रतिष्ठा के दुष्ठ चक्र से पीडित नारी तथा हरपल जीवन जीने का प्रयास करती महिला आधुनिक स्त्रीवादी रचनाकारें की रचनाओं का मुख्य विषय रही हैं। आधुनिक स्त्रीवादी रचनाकारें में मणिका मोहिनी ब्राड और बेबाक रचनाकार रही हैं, जिसके अचरन और विचार में विसंगती नहीं हैं। मणिका ने अपने रचना संसार में हरपल जीवन जीने का प्रयास करती नायिका का चित्रण किया हैं। मणिका की नायिका नैतिकता अथवा श्लील अश्लीलता से उपर उठकर स्वछंद जीवन जीने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। भारतीय पंरपरा और प्रतिष्ठा में नैतिकता को बड़ा ही महत्व दिया गया हैं। नारी के शरीर धर्म अथवा 'सेक्स' को नैतिकता के डोर से बांधकर पुरूषी सामाजिक मान्यता ने नारी के नैतिक–अनैतिक विषय को ही सर्वाधिक प्रतिष्ठा का विषय बनाया हैं। मान–सन्मान, नैतिक–अनैतिक, श्लील–अश्लीलता से उपर उठकर मणिका की नायिका उन्मुक्त एवं स्वछंद जीवन जीना चाहती हैं।

भारतीय नारी के सेक्स को नैतिकता के डोर से बांधकर आबरू,इज्जत को कॉच का टुकडा मानकर उसे सदियों से बार–बार डराया जाता हैं। इसी डर का फायदा उठाकर पुरूषों ने नारी का शारीरिक और मानसिक शोषण किया हैं। मणिका की नायिका सेक्स के लिए बनाए गए एकांगी नियम को तोड़कर बेबाक जीवन जीती हैं।'ढाई आखर प्रेम का' कहानी की नायिका सेक्स को शरीर धर्म मानकर शरीर की भुख मिटाना जानती हैं। नायिका सहेली से कहती हैं कि, "अकेले तो हम हैं ही, पंरतु दो–चार पल के लिए यदि कोई साथ मिलता हैं, तो उसे क्यों खोए ? अब हम खुशियों को क्षणों में एकत्र करेंगें। क्षण क्षण बटोरकर हम अपने लिए पुर्णता का सर्जन करेंगें। यही हमारा सत्य हैं–फिर उसकी अवाज दार्शनिक हो उठती,"तू जानती नहीं, यह जीवन क्षणभगुंर हैं।लोग बड़े आराम से जी रहे हैं, लोगों को परवाह हैं कि हम कैसे जीते हैं?

©Copyright 2020 *AMRJ*. All Rights Reserved

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

हर पुरूष को अपनाना चाहती हैं। नायिका का अर्तुप्त मन सोचता हैं कि ," क्या हर लडके से प्यार नहीं किया जा सकता ? आखिर क्यों ?"[4] एकांगी नैतिकता के मापदण्डों में परिवर्तन होता हुआ दिखाई देने लगा हैं। पुरूष की तरह स्त्री भी अपनी शारीरिक और भावनिक भुख मिटाने के लिए प्रयास करती दिखाई देती हैं, नैतिकता के मापदण्डों को ठुकराकर सामाजिक प्रतिष्ठा को नजरअंदाज करते हुए आज की नारी स्वछंद जीवन जीना चाहती हैं। 'ढाई आखर प्रेम का' कहानी की दो सहेलीयों के बीच की चर्चा में स्वछंद जीवन स्विकार करती हैं।

"तूने मुझे उसके साथ अकेला गाड़ी में छोड़ दिया। अगर वह कुछ कर लेता तो कार में अधिक से अधिक क्या कर सकता था ? कुछ कर भी लेता तो कर लेने देती यार ! शरीर ही तो हैं। धोओ और साफ।"[5]

स्वछंद जीवन का स्विकार करती नायिका जीवन के हरपल को जी लेना चाहती हैं फिर वह नैतिक–अनैतिक, श्लील–अश्लील की उसे कोई परवा नहीं हैं। मणिका की नायिका शरीर संबध को नैतिक–अनैतिकता के बंधन से मुक्त कर शारीरिक भुख के रूप में अपनाती हैं। उसकी नज़र में शरीर की अपनी–अपनी जरूरते होती हैं। पेट की भुख के लिए अन्न जरूरी होता हैं, वैसे ही शारीरिक भुख के लिए सेक्स जरूरी हैं। नारी अपनी शारीरिक भुख और मन की प्यास मिटाने के लिए , अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए तमाम सामाजिक मान्यतॉए और बंधन को तोड़कर स्वछंद जीवन जीने का प्रयास कर रही हैं। पारंपारिक नारी विरोधी तमाम सामाजिक मान्यतॉओं को ठुकराकर मणिका की नायिका हरपल स्वछंद एवं उन्मुक्त जीवन जीने का मार्ग अपनाना चाहती हैं, जिससे उसकी इच्छापुर्ती हो–फिर वह मार्ग नैतिक–अनैतिक कटघेंरे से युक्त हो अथवा मुक्त हो।

संदर्भ :

1 अपना–अपना सच – ढाई आखर प्रेम का – मणिका मोहिनी पृ. 78
2 जग का मुजरा – दिलेर – मणिका मोहिनी पृ. 28
3 ये कहानियॉं – हम बुरे नहीं थे – मणिका मोहिनी पृ. 62
4 स्वप्नदंश – शहर जहॉं सुखा पडता हैं – मणिका मोहिनी पृ. 62
5 ये कहानियॉं – ढाई आखर प्रेम का – मणिका मोहिनी पृ. 47,48

....

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2582-5429(online)
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)
www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

मणिका के कहानी में स्वछंद नारी

डॉ. घोडके अरविंद अंबादास
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, यशवंतराव चव्हाण महाविधालय, अंबाजोगाई
ईमेल– ghodkearvind123@gmail.com मोबाईल नं – 8208918100

हिंदी साहित्य के उत्तर आधुनिक युग में नारी विमर्श सर्वाधिक चर्चित विषय रहा हैं। आधुनिक स्त्रीवादी रचनाकारों की रचनाओं में नारी जीवन के हर कोने को छुने की कोशिश दखिाई देती हैं। पंरपरा और प्रतिष्ठा की आड में पुरूषी सामाजिक व्यवस्था ने नारी के तनमन की आंकाक्षा को नियमों में बाधकर उसका का गला घोट दिया हैं। इस से आगे जाकर कहे तो पुरूषी मानसिकताने पंरपरा और प्रतिष्ठा की आड में नारी के तनमन की आंकाक्षा को नैतिकता के कटघेरे में कैद कर उसके शरीर और भावना के दमन की तजबिज सदियों से की हैं। नैतिकता के कटघेरे में नारी का दम घुटता हैं। पुरूषी वर्चस्ववादी सामाजिक व्यवस्था को नकारने की कोशिश विदुशी महिला द्वारा सदियो से होती रही हैं किंतू आधुनिक काल की महिला अपने अधिकार के लिए अधिक सजग दिक्षाई देती हैं। नैतिकता की डोर नारी जीवन को गुलाम बनाकर रखती थी। इसलिए आधुनिक महिला नैतिकता की डोर को काटकर स्वछंद जीवन जीने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। पंरपरा और प्रतिष्ठा को नकारकर आधुनिक भारतीय नारी हरपल जीवन जीने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। पुरूषी पंरपरा और प्रतिष्ठा के दुष्ठ चक्र से पीड़ित नारी तथा हरपल जीवन जीने का प्रयास करती महिला आधुनिक स्त्रीवादी रचनाकारें की रचनाओं का मुख्य विषय रही हैं। आधुनिक स्त्रीवादी रचनाकारें में मणिका मोहिनी ब्राड और बेबाक रचनाकार रही हैं, जिसके अचरन और विचार में विंसगती नहीं हैं। मणिका ने अपने रचना संसार में हरपल जीवन जीने का प्रयास करती नायिका का चित्रण किया हैं। मणिका की नायिका नैतिकता अथवा श्लील अश्लीलता से उपर उठकर स्वछंद जीवन जीने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। भारतीय पंरपरा और प्रतिष्ठा में नैतिकता को बड़ा ही महत्व दिया गया हैं। नारी के शरीर धर्म अथवा 'सेक्स' को नैतिकता के डोर से बांधकर पुरूषी सामाजिक मान्यता ने नारी के नैतिक–अनैतिक विषय को ही सर्वाधिक प्रतिष्ठा का विषय बनाया हैं। मान–सन्मान, नैतिक–अनैतिक, श्लील–अश्लीलता से उपर उठकर मणिका की नायिका उन्मुक्त एवं स्वछंद जीवन जीना चाहती हैं।

भारतीय नारी के सेक्स को नैतिकता के डोर से बांधकर आबरू,इज्जत को कॉच का टुकडा मानकर उसे सदियों से बार–बार डराया जाता हैं। इसी डर का फायदा उठाकर पुरूषों ने नारी का शारीरिक और मानसिक शोषण किया हैं। मणिका की नायिका सेक्स के लिए बनाए गए एकांगी नियम को तोड़कर बेबाक जीवन जीती हैं।'ढाई आखर प्रेम का' कहानी की नायिका सेक्स को शरीर धर्म मानकर शरीर की भुख मिटाना जानती हैं। नायिका सहेली से कहती हैं कि, "अकेले तो हम हैं ही, परंतु दो–चार पल के लिए यदि कोई साथ मिलता हैं, तो उसे क्यों खोए ? अब हम खुशियों को क्षणों में एकत्र करेंगें। क्षण क्षण बटोरकर हम अपने लिए पुर्णता का सर्जन करेंगें। यही हमारा सत्य हैं–फिर उसकी अवाज दार्शनिक हो उठती,"तू जानती नहीं, यह जीवन क्षणभगुंर हैं।लोग बड़े आराम से जी रहे हैं, लोगों को परवाह हैं कि हम कैसे जीते हैं?

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

हर पुरूष को अपनाना चाहती हैं। नायिका का अर्तृप्त मन सोचता हैं कि ," क्या हर लडके से प्यार नहीं किया जा सकता ? आखिर क्यों ?"[4] एकांगी नैतिकता के मापदण्डों में परिवर्तन होता हुआ दिखाई देने लगा हैं। पुरूष की तरह स्त्री भी अपनी शारीरिक और भावनिक भुख मिटाने के लिए प्रयास करती दिखाई देती हैं, नैतिकता के मापदण्डों को ठुकराकर सामाजिक प्रतिष्ठा को नजरअंदाज करते हुए आज की नारी स्वछंद जीवन जीना चाहती हैं। 'ढाई आखर प्रेम का' कहानी की दो सहेलीयों के बीच की चर्चा में स्वछंद जीवन स्विकार करती हैं।

"तूने मुझे उसके साथ अकेला गाड़ी में छोड़ दिया। अगर वह कुछ कर लेता तो कार में अधिक से अधिक क्या कर सकता था ? कुछ कर भी लेता तो कर लेने देती यार ! शरीर ही तो हैं। धोओ और साफ।"[5]

स्वछंद जीवन का स्विकार करती नायिका जीवन के हरपल को जी लेना चाहती हैं फिर वह नैतिक–अनैतिक, श्लील–अश्लील की उसे कोई परवा नहीं हैं। मणिका की नायिका शरीर संबध को नैतिक–अनैतिकता के बंधन से मुक्त कर शारीरिक भुख के रूप में अपनाती हैं। उसकी नज़र में शरीर की अपनी–अपनी जरूरते होती हैं। पेट की भुख के लिए अन्न जरूरी होता हैं, वैसे ही शारीरिक भुख के लिए सेक्स जरूरी हैं। नारी अपनी शारीरिक भुख और मन की प्यास मिटाने के लिए , अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए तमाम सामाजिक मान्यतॉए और बंधन को तोड़कर स्वछंद जीवन जीने का प्रयास कर रही हैं। पारंपारिक नारी विरोधी तमाम सामाजिक मान्यतॉओं को ठुकराकर मणिका की नायिका हरपल स्वछंद एवं उन्मुक्त जीवन जीने का मार्ग अपनाना चाहती हैं, जिससे उसकी इच्छापुर्ती हो–फिर वह मार्ग नैतिक–अनैतिक कटघेंरे से युक्त हो अथवा मुक्त हो।

संदर्भ :

1 अपना–अपना सच – ढाई आखर प्रेम का – मणिका मोहिनी पृ. 78
2 जग का मुजरा – दिलेर – मणिका मोहिनी पृ. 28
3 ये कहानियॉं – हम बुरे नहीं थे – मणिका मोहिनी पृ. 62
4 स्वप्नदंश – शहर जहॉं सुखा पडता हैं – मणिका मोहिनी पृ. 62
5 ये कहानियॉं – ढाई आखर प्रेम का – मणिका मोहिनी पृ. 47,48

....

Scanned with OKEN Scanner

VOLUME No.68, ISSUE No.05, JANUARY-2020 ISSN (Online): 0474-9030

SDGS 2020
OUR HERITAGE
Impact Factor (2020): 6.8
UGC Care Listed, Multidisciplinary Journal for Research Publication

Special Issue on

Sustainable Development Goals

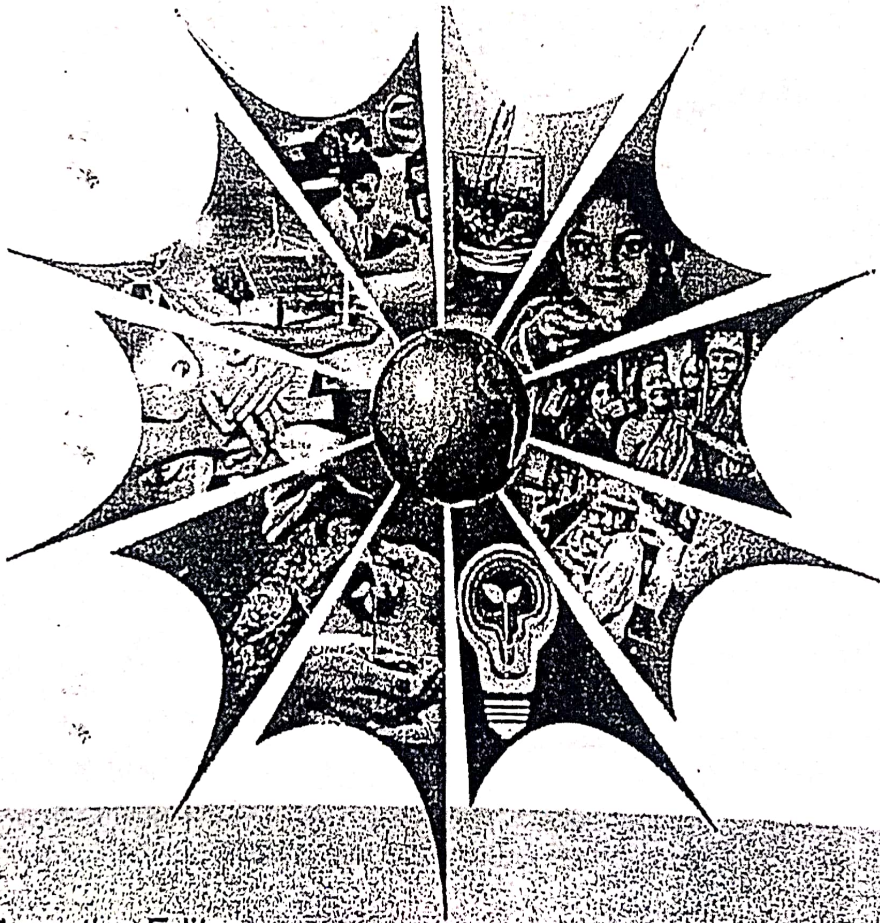

Executive Editor
Dr. Deepak M. Bharti

Chief Editor
Prin. Dr. Shivdas Z. Shirsath

Copyright © Authors 2020

Scanned with Oken Scanner
Scanned with OKEN Scanner

OUR HERITAGE
ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-68, Special Issue-5
Impact Factor (2020) - 6.8
Special Issue on "Sustainable Development Goals"

122	An overview of poverty alleviation programs in India	Prof. Sanjay B. Salunke, Dr. Parmeshwar B. Bhosale	561-565
123	Women Empowerment in India: Issues and Challenges	Dr. Kamya Wadhwa	566-574
124	A Study of PRO'S And CON'S of Women Entrepreneurship in Solapur City	Dr. Gadhave Ramesh A.	575-578
125	Qualitative analysis and Antioxidant activity of various root extract of medicinally important plant *Cissampelos pareira* Linn.	Sarika V. Lokhande , Sanjay R. Biradar	579-585
126	Emerging age of Women's Entrepreneurship	Dr. Kamya Wadhwa, Dr. Kartik Arora	586-591
127	कहानीयों में स्त्री-पुरुष समानता का आगाज Kahaniyo me Stri-purush samanata ka aagaz	डॉ.घोडके अरविंद अंबादास Dr. Ghodke Arvind Ambadas	592-594
128	सामाजिक न्याय के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी काव्य Samajik Nyay ke paripreksha me samkalin hindi kavya	प्रा.बहिरम देवेंद्र मगनभाई Prof. Bahiram Devendra Maganbhai	595-598
129	मूल्यों के विघटन और नये मूल्यों की संरचना में स्त्री विमर्श Mulyo ke vighatan aur naye mulyo ki saranchana me stri vimarsh	डॉ.सानप शाम बबनराव Dr. Sanap Sham Babanrao	599-601
130	वैश्वीकरण और नारी चेतना Viashvikaran aur nari chetna	डॉ.नितीन बी.कुंभार Dr. Nitin B. Kumbhar	602-606
131	सर्वांगीण विकास हेतू नारीवादी इतिहासलेखन की आवश्यकता Sarvangin vikas hetu nariwadi itihaslekhan ki aavshyakta	डॉ.व्यास सी.पी. Dr. Vyas C. P.	607-611
132	भारतीय इतिहासलेखन की सबाल्टर्न (उपाश्रयी) लेखन परंपरा की वर्तमानकाल में आवश्यकता Bhartiya itihaslekhan ki sabaltarn (Upashrayi) lekhan parmabpra ki vartmanakal me aavshaykata	डॉ.व्यास सी.पी. Dr. Vyas C. P.	612-614
133	मराठी-हिंदी कथा-लेखिकाओं के कहानियों में बदलते स्त्री-पुरुष संबंध Marathi-Hindi katha lekhikaon ke kahaniyo me badalate stri-purush sambandh	प्रा.डॉ. दिग्विजय टेंगसे Prof. Dr. Digvijay Tengse	615-618
134	प्रेमचंद के साहित्य में स्त्री-पुरुष समानता का आदर्श	प्रा.डॉ.दळवे सूर्यकांत माधवराव Prof. Dr. Dalve Suryakant	619-621

Scanned with OKEN Scanner

OUR HERITAGE
ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-68, Special Issue-5
Impact Factor (2020) - 6.8
Special Issue on "Sustainable Development Goals"

कहानीयों में स्त्री—पुरूष समानता का आगाज

डॉ. घोडके अरविंद अंबादास
हिंदी विभाग
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई
Email: ghodkearvind123@rediffmail.com

सारांश :
स्त्री—पुरूष समानता की माँग करनेवाली अनेक कहानियाँ मणिकाजीने लिखी है। पुरूषप्रधान सामाजिक विचारधारा जब स्त्री को दुय्यम मानती है, तब मणिका की नायिका तमाम नारी विरोधी सामाजिक मान्यताएँ ठुकराकर आत्मसम्मान पुर्वक आजाद जीवन यापन करती है। 'दो पाटण के बीच' कहानी की नायिका संगीत की पुजा करती है। संगीत के कारण ही नायिका सूरभि और शरद में दोस्ती, प्यार होता है। किंतु शरद शादी के बाद नायिका को संगीत छोडने के लिए कहता है। नायिका सुरभि के लिए संगीत पुजा और आनंद था, किंतु विवाह के बाद संगीत का त्याग करना उसके लिए दुःखदायक था।

Keywords: स्त्री—पुरूष समानता

परंपरागत पुरूष प्रधान भारतीय सामाजिक मान्यताएँ पुरूषों की तुलना में स्त्री का स्थान दुय्यम मानती है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में पुरूषों को स्त्री की तुलना में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वंश बढाने के लिए बेटा भारतीय परिवार की मानसिकता रही है। किंतु अपने वंश को बेटी भी बढा सकती है, इस विचारधारा का आज भी भारतीय समाज में पुरी तरह सें स्विकार नही हो पाया है। बेटे की अपेक्षा में अनेक बेट्टीयों की हत्या गर्भपात के द्वारा पेट मे होती है। स्त्री—भृण हत्या के कारण स्त्री और पुरूष लैंगिक असमानता उग्ररूप धारण करणे लगी है। स्त्री—पुरूष लैंगिक असमानता का विपरित परिणाम भारतीय समाज व्यवस्थापर होने लगा है। शासन, प्रशासन, सेवाभावी संस्थाओं के साथ साथ—साहित्य के माध्यम से भी स्त्री—पुरूष समानता के लिए प्रयास हो रहे है। साहित्य के माध्यम से साहित्यकारोंने स्त्री—पुरूष समानता—असमानता आदि विषयों को प्रस्तुत करते हुए जन—मानस में स्त्री—पुरूष समानता का प्रचार—प्रसार किया है।

हिंद्री भाषा की स्त्रीवादी रचनाकार मणिकामोहिनीजीने अपने कहानीयों में स्त्री—पुरूष समानता पर प्रकाश डाला है। परंपरा से चली आ रही नारी विरोधी सामाजिक पुरूष प्रधान व्यवस्था का विरोध कर स्त्री को पुरूष के समान सामर्थ्यवान और सशक्त दिखाने का प्रयास मणिकाने अपनी कहानी में किया है। मणिकाने 'मेमना' कहानी में

Scanned with OKEN Scanner

OUR HERITAGE
ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-68, Special Issue-5
Impact Factor (2020) - 6.8
Special Issue on "Sustainable Development Goals"

पुरूष की तरह स्त्री का चरित्र चित्रीत किया है। नायिका तेज, शक्तीशाली, निडर आत्मनिर्भर और पारंपारिक बंधनों को तोडकर स्वच्छंद जीवन जीनेवाली स्त्री है। पति के साथ रहते हुए स्वतंत्र निर्भीड और साहसी व्यक्तित्व के बलपर पुरूषी समाज व्यवस्था में पुरूष चुनौती का सहज सामना करनेवाली सशक्त स्त्री का चित्रण मेंमणा कहानी में मणिकाजीने किया है। नायिका का पति नायिका के बारे में कहता है, "वह आज भी उसी तरह ठाठ बाट से रहती है, वह आज भी उसी तरह से हसती है, बोलती है। वह आज भी उसी तरह फिल्म–तमाशे देखती है, वह आज भी उसी तरह महफिलों में छा जाती है। उसे कोई फर्क नही पडा। मै जानता था उस कोई फर्क नही पडेगा। यदि मैं मर भी जाता तब भी उसे कोई फर्क नही पडता। वह अलग होकर भी जैसे हर घडी मुझे मात दे रही है। वह कैसे औरत है, जिसे पुरूष की कतई जरूरत नही है? जिसकी जिन्दगी में पुरूष न होने से कोई कमी नही आ रही है।"[१] मणिका की नायिका निर्भिड है, उसे पुरूष छत्र–छाया की जरूरत नही है। पुरूष जिस तरह निर्भिड होकर जीता है, वैसे ही मेमणा कहानी की नायिका साहसी और स्वच्छंद जीवन जी रही है।

आधुनिक युग में पाश्चात्य जनजीवन से प्रभावित भारतीय नारी शिक्षा एवं संवैधानिक अधिकार के बलपर पारंपारिक शोषित, अबला एवंम अन्यायी नारी प्रतिमा को तोडकर सक्षम निर्भीड और सामर्थ्यशील नारी के रूप में पहचान बनाने लगी है। 'परिणति' कहानी की नायिका अपने अपेक्षाओं के लिए सामाजिक परंपरा अथवा बंधनों को नजर अंदाज करते हुए जीवन जीना चाहती है। विवाह के बाद नायिका पडना चाहती थी किंतु नायक शंशाक विवाह के बाद नायिका की पडाई को लेकर उत्साही नही था। इसलिए पढाई के लिए निरूत्साही शंशाक से शादी करने के लिए नायिका इन्कार करती है। नायिका कहती है, "वह प्राय: मुझे पढाई छोडने और शादी करा लेने के लिए उकसाता। मैं उसे अपनी महत्वकांक्षाए बताती की मुझे बहुत पढना है और पढकर कुछ बनना है, मैं उन औरतों की भाँति अपनी जिन्दगी बसर करना नहीं चाहती जो विवाह का अर्थ मात्र घर बदलकर बच्चे पैदा करना साबित करती है।"[२] मणिका की नायिका पुरूष की तरह अपनी महत्वकांक्षा के लिए हर वो कदम उठाती है, जो उसे उचित लगता है। पति और बच्चे के बदले में वह अपनी महत्वकांक्षाओं को नजरअंदाज करना नही चाहती। बल्कि मॉर्डन और आकर्षक शशांक को चाहते हुए भी अपनी महत्वकांक्षा अथवा स्वप्न के लिए उसे मना करती है।

'ढाई आँखर प्रेम का' कहानियों में नायिका पुरूष के समान स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है और जीवन जीती भी है। पुरूष वर्चस्ववादी समाज व्यवस्था में स्वच्छंद कामजीवन जीने के कामना करनेवाली नायिका हरपल जीवन जीना चाहती है, जिसके लिए वह अपने बच्चों एवं पति से भी अलग रहती है। उसकी नजरों में स्त्री पुरूष शारीरिक संबंध शरीर की भुख है, जिसे मिटाना जरूरी है। उसके लिए वह समाज के नीति–नियमों को चुनौती देती है। अपने स्वच्छंद जीवन को जीते हुए नायिका अपनी सहेली से कहती है कि, "भीड–भाड, चिल्ल पैं की आदत खत्म हो गयी है। कितनी

Scanned with OKEN Scanner

अच्छी जिंदगी है, न कहीं जाने के लिए किसी से आज्ञा लेनी और न किसी के लौटने की प्रतीक्षा। मन आये खिचड़ी बनाओ, मन आये बाजार में खाओ। कितनी अच्छी जिंदगी है। है ना?"[३] आजाद जीवन जीने की कामना करनेवाली नायिका आजाद जीवन में आनेवाले हर बंधन को तोड़कर स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है। पति और बच्चों से अलग होने के बाद नायिका प्रेम की तलाश में तीन पुरूष के साथ प्रेमलीला में धोखा मिलने के बाद भी अपने खाली जीवन को भरने के लिए चौथे पुरूष के तलाश में रहती है। अन्वेषी कहानी का नायक ढाई आखर प्रेम का नायिका की तरह हर पल जीवन जीने को स्वच्छंद इच्छाधारी पात्र है। अपनी मासुम, भोली बाली पत्नी को धोखे मे रखकर साहित्य लेखन के बहाने अन्य स्त्री के साथ अनैतिक संबंध रखता है। पत्नी को सांसारिक मोह माया से मुक्त होने का उपदेश देकर वह पत्नी के पीट, पीछे गैर स्त्री को हमबिस्तर बनाता था। इस बात की खबर जब पत्नी को लगती है, तो पत्नी पति को पत्र में लिखती है, "मैं आश्चर्य चकित हूँ कि तुम आज तक दुनयावी चीजों में रमे हुए हो, तुम इस सबसे उबे नही। जिन्दगी को पूर्ण जीकर भी अभी तुम में इच्छाँए शेष है, तुम अभी तक भौतिक सुखों के पीछे भाग रहे हो, औरत अभी भी तुम्हारी कमजोरी है।"[४] मणिकाने कामपुर्ती हेतु बेचैन स्त्री और पुरूष जीवन का सजीव चित्रण कहानियों में किया है।

स्त्री–पुरूष समानता की माँग करनेवाली अनेक कहानियाँ मणिकाजीने लिखी है। पुरूषप्रधान सामाजिक विचारधारा जब स्त्री को दुय्यम मानती है, तब मणिका की नायिका तमाम नारी विरोधी सामाजिक मान्यताँए ढुकराकर आत्मसन्मान पुर्वक आजाद जीवन यापन करती है। 'दो पाटण के बीच' कहानी की नायिका संगीत की पुजा करती है। संगीत के कारण ही नायिका सूरभि और शरद में दोस्ती, प्रेम होता है। किंतु शरद शादी के बाद नायिका को संगीत छोडने के लिए कहता है। नायिका सुरभि के लिए संगीत पुजा और आनंद था, किंतु विवाह के बाद संगीत का त्याग करना उसके लिए दुःखदायक था। सुरभि अपनी संगीत रूपी पुजा, आनंद को अपनाकर शरद की बारात लौटा देने का निर्णय लेती है। मणिका लिखती है कि, "बारात लौटा देने का अपना निर्णय जब उसने घोषित किया तो उसे लगा कि स्त्री शब्द केवल तभी गाली है, जब उसकी अपनी महत्वकांक्षाओं को दफन किया जाए वरना वह ईश्वर की एक सुंदरतम रचना है, जिसका वजुद उसे स्वय कायम रखना है।"[५] मणिकाने स्त्री और पुरूष को समानता की दृष्टी से देखा और लिखा। स्त्री अधिकार, समानता के लिए मणिका की नायिका संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। परंपरासे चली आ रही नारी शोषण नीति का विरोध करते हुए मणिकाने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री–पुरूष समानता का प्रचार एवं प्रसार किया है।

संदर्भसूची :–

१. अभी तलाश जारी – मेमणा – पृ. ११०
२. स्वप्नदंश – परिणति – पृ. १०९.
३. ढाई आखर प्रेम का – पृ. ११
४. अन्वेषी – अन्वेषी – पृ. १६
५. जग का मुजरा – दो पाटन के बीच – पृ. १११

Scanned with OKEN Scanner

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (C)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Executive Editors :
Dr. Arvind A. Ghodke
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (C)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Executive Editors :
Dr. Arvind A. Ghodke
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	तृतीय लिंग संवेदाना के भाष्य	डॉ. प्रिया ए.	07
2	अवधी लोकगीतों की धर्म एंव दर्शनमूलक दृष्टि	डॉ. गरिमा जैन	11
3	हिंदी कहानियों में आदिवासी विमर्श	डॉ. मालती शिंदे - चव्हाण	20
4	समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री – विमर्श कि चुनौतियाँ	डॉ. दीपक पवार	24
5	स्त्री के संघर्ष की व्यथा (सुरेन्द्र वर्मा के 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक के विशेष संदर्भ में)	प्रो. ए. जे. बेवले	28
6	बदलते परिदृश्य में स्त्री का अस्तित्व	डॉ. संगीता लोमटे	32
7	किसान का आदर्श मानविय रूप (सुजान भगत के संदर्भ में)	डॉ. शिवाजी वैद्य	38
8	भीष्म साहनी के नाटको में स्त्री शोषण के विविध आयाम	सोनम सिंह	41
9	वैश्विक साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य	प्रा. ज्ञानेश्वर बगनर, डॉ. एस. डी. लांडे	44
10	हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना	डॉ. विजय वाघ	47
11	हिंदी दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में अम्बेडकरवादी विचारधारा	डॉ. संगीता उप्पे	50
12	स्त्री विमर्श - असहज स्थिति : यातना और संघर्ष का द्वंद्व	डॉ. रश्मि पाण्डेय	58
13	हिंदी दलित कथा साहित्य में नारी	डॉ. रमेश कांबळे	62
14	अंतिम दशक में हिंदी उपन्यासों मे स्त्री विमर्श	डॉ. दत्ता साकोळे	65
15	सामाजिक प्रतिष्ठा में बेचैन नारी	डॉ. अरविंद घोडके	68
16	हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श	आशा फड	71
17	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं में समकालीनता	डॉ. नंदकिशोर चिताडे	74
18	अज्ञेय की कविताओं में सामाजिकता	डॉ. प्रकाश खुळे	78
19	सभ्यता, संस्कृति और साहित्य	डॉ. अर्चना परदेशी	82
20	भारत और विदेशों में ट्रांसजेंडर की स्थिति : विशेष संदर्भ 'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी'	अमर आलदे	87
21	किसान विमर्श	डॉ. विनोद जाधव	91
22	नारायण सुर्वे की कविता 'अनुवाद के पक्ष'	डॉ. प्रकाश कोपर्डे	96
23	समकालीन भारतीय विमर्श की वैश्विक पारस्परिकता : स्त्री विमर्श	डॉ. राजश्री भामरे, मेघराज खरोटमल	102
24	किन्नर समाज को प्रेरणा देती आत्मकथा 'मै हिजडा मै लक्ष्मी'	डॉ. बायजा कोटूळे	105
25	मिडीया और महिलाएँ	डॉ. सोमा गोंडाणे	108
26	किन्नर विमर्श : दशा एवं दिशा	डॉ. राजश्री भामरे	111
27	किन्नर - जीवन या अभिशाप	लालमोहन राम	116
28	'क्या मुझे खरीदोगे?' : भारतीय स्त्री की विद्रोह कथा	डॉ. सन्मुख मुच्छटे	121
29	विश्व साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान	डॉ. मुक्ता अग्रवाल	125
30	विश्व साहित्य में हिंदी साहित्य का योगदान (उपन्यास तथा कहानी साहित्य के संदर्भ में)	डॉ. विक्रमसिंह पवार	128
31	'आयदान' में व्यक्त दलित क्रांती चेतना	माधवराव जोशी	132
32	किन्नरो में निहित धार्मिक एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव	डॉ. कॅप्टन बाबासाहेब माने	136
33	भारतीय संस्कृति और साहित्य	कु. राजकन्या भगत	141

Scanned with OKEN Scanner

E-ISSN 2348-7143
Jan. 2021

सामजिक प्रतिष्ठा में बेचैन नारी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई
मेल - ghodkearvind123@gmail.com
मो. नं.8208918100

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा-आबरू आदि का बड़ा महत्व है। किंतु सामाजिक प्रतिष्ठा का दारोमदार नारी जीवन पर आश्रित दिखाई देता है। प्रतिष्ठा और नारी यह दो शब्द एक दूसरे के परस्परपूरक अंग लगते हैं। अथवा नारी के लिए प्रतिष्ठा और प्रतिष्ठा के लिए नारी का निर्माण इस समाज व्यवस्था द्वारा हुआ है। ऐसा दिखाई देता है। स्त्री के खान-पान, वेशभूषा, बोल-चाल, साज - सिंगार आदि को नैतिकता का लेबल लगाकर उसे प्रतिष्ठा के बहाने कैद में रखने का प्रयास सदियों से होता आया है। सातच्या आत घरात, पति परमेश्वर की सेवक पतिव्रता नारी, नारी का दिमाग घुटनों में कहकर नारी की उपेक्षा करने वाला यही समाज प्रतिष्ठा के लिए नारी को आगे करता है। जो भारतीय नारी पति, पिता और पुत्र के आदेश का पालन करती है उसे ही प्रतिष्ठित माना जाता है। पुरुष प्रधान मानसिकता में पुरुषी मानसिकता द्वारा बनाए गए अन्यायी प्रथा-परंपरा का निर्वाहन करने वाली अथवा चुपचाप पालन करने वाली नारी को प्रतिष्ठित और आदर्श समझा जाता है। अपने छंद और इच्छाओं का गला घोट कर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए घुटन भरा जीवन जीने के लिए भारतीय नारी को पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था मजबूर किया गया है। नारी विरोधी सामाजिक मान्यता अथवा व्यवस्था के नियमों को तोड़कर अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अगर वह कोई कदम उठाती है, तो उसके इस कदम को अप्रतिष्ठित समझा जाता हैं। नारी को समाज विरोधी वर्तन के लिए दंड दिया जाता है। प्रतिष्ठा के कटघेरे में कैद कर हमेशा नारी को ही दोषी माना जाता है। सामाजिक मान्यता में प्रतिष्ठा के लिए भारतीय नारी को अपने छंद और इच्छाओं का गला घोटना पड़ता है। उसे अपनी इच्छा, आकांक्षाओ को दफन करने के लिए मजबूर किया जाता है। 'दो पाटन के बीच' कहानी में सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए सुरभि के साथ अन्याय किया जाता है। संगीत में रुचि रखने वाली सुरभि प्रेमी शरद के साथ शादी करना चाहती है किंतु शरद शादी के बाद सुरभि को संगीत का त्याग करने की बात कहता है। संगीत सुरभि के लिए प्राण था। किंतु शरद पुरुषी सामाजिक व्यवस्था का निर्वाहन करने वाला पारंपारिक पुरुष था, जो सुरभि को नियमों में बांधकर सामजिक प्रतिष्ठा के लिए अपनी बीवी बनाने के लिए मजबूर करना चाहता था। शरद के माध्यम से मनिका जी ने पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ चित्रन किया है। "शरद सुरभि से कहता है, तुम एक स्त्री हो, भारत जैसे देश की जहां पति को परमेश्वर माना जाता है, एक अच्छी पत्नी बनने के लिए क्या तुम यह समझौता नहीं करना चाहोगी? तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी। तुम राज करोगी सुरू मेरे दिल पर, मेरे घर पर। आखिर तुम औरत हो और शादीशुदा औरत। यू पराए मर्दो के बीच बैठकर कैसे गा सकती हो। तुम्हें वही करना चाहिए जो तुम्हारे पति और ससुराल वाले चाहे।"१ शरद का कथन पुरुष प्रधान भारतीय सामजिक व्यवस्था का चित्रण करता है। प्रतिष्ठा के लिए भारतीय समाज में नारी के ऊपर अनेक बंधन लादे गए हैं। सुरभि जिसे संगीत

Scanned with OKEN Scanner

जान से प्यारा था किंतु प्रतिष्ठा के लिए उसका प्रिय कर शरद उसे संगीत छोड़ने के लिए कहता है। सुरभि की तरह आज भी आधुनिक कहने वाले इस परंपरावादी भारत में अनेक महिलाओं का प्रतिष्ठा के आड में शोषण किया जाता है उस पर अन्याय अत्याचार होता ही रहता है। सूरभि जैसी कई भारतीय महिलाओं को अपने अपेक्षाओं का गला घोट कर मजबूरी में जीवन जीना पड़ता है।

भारतीय समाज व्यवस्था में प्रतिष्ठा की डोर सिर्फ नारी के हाथ में ही हैं ऐसा दिखाई देता हैं। किंतु प्रतिष्ठा रुपी इस डोर के नीचे लाचार, बेबस, घुटण भरा जीवन मजबूरी में जी लेती है। भारतीय समाज में प्रतिष्ठित नारी उसे ही माना जाता है, जो पारंपरिक पुरुष वर्चस्ववादी परंपरा का पालन करें। आदर्श पत्नी उसे ही माना जाता है, जो पति को परमेश्वर का दर्जा देकर उसकी चुपचाप सेवा करती रहे। अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाली स्त्री को अप्रतिष्ठित, कुल्टा समझा जाता है। भारतीय समाज व्यवस्था में आदर्श पत्नी अथवा आदर्श नारी कैसी होनी चाहिए? इसका चित्रण मनिका जी ने 'मेमना' कहानी के माध्यम से किया है। 'मेमना' कहानी का पति आदर्श और प्रतिष्ठित पत्नी को चाहता है। आदर्श पत्नी कैसी होनी चाहिए यह बताते हुए वह कहता है कि "मैं एक आम आदमी हूं और आम आदमी के सभी गुण मुझ में मौजूद है। मसलन मैं चाहता हूं कि कभी गुस्से से पत्नी की तरफ देख लो तो पत्नी गुन्हेगार के अंदाज में अपनी आंखें झुका ले। कभी गुर्राऊ तो पत्नी सहमकर कांपने लगे। कभी उसके कसूर की सजा में उसे पीटना चाहूं तो वह दौड़ कर मेरे चरण पकड़ ले। पति-पत्नी के रिश्ते में पति के चरणों का बहुत महत्व होता है, यह मैं उसे कभी नहीं समझा पाया। पत्नी को दौड़ दौड़ कर पति के चरणों से लिपटने की आदत तो गृहस्थ जीवन सुखी रहता है। पुरुष का अहंम पोषित होता रहता है। पुरुष का अहंम का पोषण ही सुखी गृहस्थ जीवन की आधारभूत शीला है।"[२]

आदर्श और प्रतिष्ठा के लिए नारी को सदा ही बंदी बनाने की कोशिश भारतीय समाज में किस तरह से होती आयी उसका सजीव चित्रण मनिका जी ने 'मेंमना' कहानी में दिखाई देता है। पुरुषों द्वारा आदर्श नारी की कल्पना सदियों से स्त्री जीवन को अपनी कैद में रखने के लिए बनाई गई हो ऐसा कोशिश दिखाई देती है। प्रतिष्ठा के माया जाल में फस कर भारतीय नारी भी पुरुषों के हाथों की कठपुतली बन जाती है। आदर्श बेटी, पत्नी, बहन, मां, बहू, सास आदि का रोल अथवा भूमिका अन्याय अत्याचार को सहकार निभाना चाहती है। अन्याय-अत्याचार की परंपरा का निर्वहन करना ही नारी धर्म होता है, ऐसी धारणा भारतीय नारी की बनी हुई है। भारतीय नारी पर सबसे अधिक अत्याचार आदर्श पत्नी और आदर्श माता के बहाने किए जाते हैं। पुरुषि मानसिकता की गुलाम नारी अपने जीवन का ध्येय आदर्श पत्नी अथवा आदर्श माता के रूप में चाहती है। आदर्श नारी अथवा प्रतिष्ठित नारी का जीवन कैसे होता है? 'ढाई आखर प्रेम का' कहानी में पारंपारिक प्रतिष्ठा के अनुरूप नारी जीवन कैसे होता है इसका चित्रित हुआ है। "औरत की कीमत, मैंने तो समझा था कि बच्चों से होती है। मेरा मातृत्व अनेक बार दहाड़े मार-मार कर रोया था। एक बार प्रेम में असफल हो जाने के बाद दोबारा किसी पुरुष से कोई समझौता करने की मेरी कभी इच्छा नहीं हुई थी, लेकिन यह ख्याल बार-बार आता था कि मेरी असहायता के क्षणो में एकमात्र बच्चा ही मेरा सहारा हो सकता है।"[३] भारतीय समाज व्यवस्था में प्रतिष्ठा के आड़ में नारी का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, धार्मिक, सामजिक और लैंगिक शोषण किया जाता है। नारी को मानसिक गुलाम बनने के लिए मजबूर किया जाता है। किंतु अगर कोई नारी इस गुलामी से मुक्त होना चाहती हो तो उसे अप्रतिष्ठित मानकर उसके ऊपर अन्याय-अत्याचार किए जाते हैं। सदियों से भारतीय नारी को

Scanned with OKEN Scanner

दबाकर रखने के लिए साम-दाम-दंड-भेद आदि नीति का प्रयोग कर पुरुष प्रधान व्यवस्था ने प्रतिष्ठा के आड़ में नारी का शोषण किया है। परंपरा तथा प्रतिष्ठा के बहाने पुरुषवर्चस्व वादी सामजिक व्यवस्था अथवा मान्यताए हमेशा नारी को अपने कैद में रखना चाहता है और उसमें वह सफल भी हुई है। नारी अपनी इच्छाओं के अनुरूप अगर जीवन जीने लगती है तो उसे नैतिकता और प्रतिष्ठा में बांधकर उसे बंदी बनाया जाता है। 'हम बुरे नहीं थे' कहानी में पुरुषवर्चस्ववादी मानसिकता वाले समाज में भारतीय नारी का किस तरह शोषण किया जाता है इसका सजीव चिंत्रण कहानी में है। अपनी इच्छा के अनुरूप जीवन जीने वाली पत्नी को पति जान से मार देता है। पत्नी को जान से मारने के बाद अपने आपको बेकसूर साबित करने के लिए समाज के सामने मगरमच्छ के आंसू दिखाता है। आंस-पड़ोस का समाज अपने इच्छा के अनुसार जीवन जिने वाली पत्नी को ही दोषी मानकर खूनी पति को ही सही समझता हैं। पत्नी पर ही अप्रतिष्ठित और चरित्रहीन होने का आरोप लगाता है।जिस महिला को उसके ही पती ने जान से मार डाला था उस महिला अथवा पत्नी के बारे में समाज कहता है, "बदमाश थी पति बेचारा बाहर काम में फंसा रहता था और यह मकान मालकिन के लड़कों के साथ ऐसा करती थी। अजी ऐसी औरत को कौन आदमी बर्दाश्त करेगा।"[४] इस कहानी के माध्यम से भारतीय पुरुष वर्चस्ववादी सामाजिक मानसिकता का चित्रन हुआ है।

भारतीय समाज की प्रतिष्ठा स्त्री इर्द-गिर्द दिखाई देती हैं, जिसका स्वरुप एकांगी और अन्यायी दिखाई देती है। प्रतिष्ठा का 80% से अधिक भाग महिलाओं के जीवन और कर्म से जोडा हुवा दिखाई देता हैं। भारतीय समाज आज भी आधुनिक होने के भ्रम में जीवन जीता हुवा दिखाई देता हैं। किंतु यथार्थ रूप में आधुनिकता प्रतिष्ठा की आड में एंकांगी और नारी विरोधी दिखाई देती हैं। सारांश रूप में यही कहा जा सकता हैं कि दुनिय के सामने अपना आदर्श रूप रखने वाली भारतीय संस्कृती और सामाजिक व्यवस्था मेंआज भी भारतीय नारी अपना उन्मुक्त जीवन जिने से कोसो दूर दिखाई देती हैं।

संदर्भ-

1. दो पाटन के बीच - मणिका मोहिनी-जग का मुजरा -पेज नं.110
2. मेमना- माणिका मोहिनी-अभी तलाश जारी हैं-पेज नं.109
3. ढाई आखर प्रेम का - मणिका मोहिनी-पेज नं.12
4. हम बुरे नहीं थे-मणीका मोहिनी -पेज नं.18

Scanned with OKEN Scanner

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (A)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

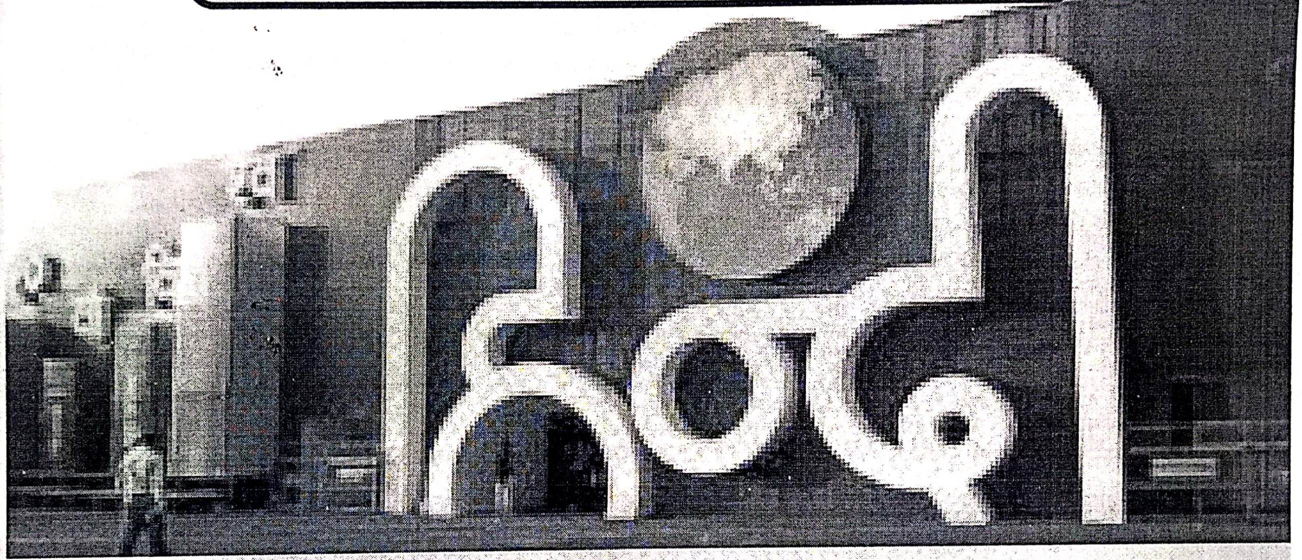

Guest Editor -
Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Executive Editors :
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (A)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Executive Editors :
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

Scanned with OKEN Scanner

8-7143
2021

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
cial Issue -259 (A) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	श्रीलंका में रामायण के सिंहली और तमिल भाषा के अनुवाद	मूळ लेखिका - डॉ. कुमुदिनी मद्दुमगे, अनुवाद – डॉ. अमिला दमयंती	07
2	साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.व्ही.जी. गुंडरे	11
3	मुक्तीबोध के काव्य में संस्कृति	डॉ. मुरलीधर लहाडे	14
4	भारतीय संस्कृति और साहित्य किसान विमर्श	डॉ. गोपाळ शंकर भोसले	18
5	बदलता भारतीय संस्कृतिक परिदृश्य और भारतीय साहित्य में नारी	अरविंद घोडके	20
6	राजस्थान के संत साहित्य का हिंदी में योगदान	डॉ. हरीश कुमार	24
7	भारतीय साहित्य और संस्कृति	डॉ. सुधीर कुमार विश्वकर्मा	29
8	सरकारी प्रयास और किन्नर समुदाय : समकालीन विमर्श	सुधा मिश्रा	35
9	भारतीय भाषाएं और रामकथा साहित्य	प्रा. विठ्ठल टेकाळे	40
10	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	योजना नाकाडे	44
11	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. शफीक चौधरी	47
12	वैश्विक परिदृश्य : 'कामायनी और अन्य रचनाओं में भारतीय संस्कृति'	डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला	57
13	बाजार और तकनीकी	प्रा. व्ही. डी. कापावार	55
14	भारतीय संस्कृति में विवाह का महत्व	डॉ. विठ्ठलसिंह घुनावत	58
15	आधुनिक बोध की अग्रदूत 'रुकोगी नहीं राधिका'	डॉ. परमेश्वर काकडे	61
16	उपभोक्तावाद और वृध्दावस्था विमर्श	प्रा. संजीवनी पाटील	65
17	आदिवासियों की सभ्यता और संस्कृति	डॉ. माया मसराम	69
18	हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति	मुकेश चौहान	73
19	भारतीय संस्कृति और संस्कृत साहित्य	डॉ. वीरेंद्र कुमार जोशी	77
20	हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जन-जीवन	डॉ. वनिता कुलकर्णी	82
21	स्वयं प्रकाश के कहानियों में दलित विमर्श	डॉ. अनिसबेग मिर्झा	86
22	भारतीय संस्कृति और संगीत	डॉ. सुरेखा रत्नपारखी	90
23	मणि मधुकर के उपन्यासों में मानवाधिकार	डॉ. मंत्री आडे	94
24	प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ. सिद्धेश्वर गायकवाड	101
25	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. नागरत्ना एस.	104
26	भास्कर चंदनशिव की कहानी 'लाल किचड' में कृषक जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ती	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	108
27	दलित विमर्श स्वरूप एंव व्याप्ती	डॉ. गजानन सवने	111
28	'तीसरी ताली' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श	प्रा. सौ. कविता तळेकर	113
29	भारतीय नारी का विभिन्न परिवेश में योगदान	डॉ. गीतांजली मोटे	116
30	भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति	डॉ. संगीता मोरे	120
31	आधुनिक हिंदी काव्य में प्रगतिशिलता	श्री. अली शेख	125
32	निर्मल वर्मा के कहानियों में आधुनिक जीवन और संस्कृति	डॉ. मुखत्यार शेख	128
33	हिंदी साहित्य में स्त्री की स्थिति : एक विवेचन	डॉ. अशोक कुमार मीना	132
34	भारत के आदिवासी इस देश के मूल निवासी है।	प्रा. लेफ्ट. ज्ञानेश्वर चिट्टमपल्ले	141

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (A) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-71
Jan. 2021

बदलता भारतीय संस्कृतीक परिद्रुश्य और भारतीय साहित्य में नारी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
यशवंतराव चव्हाण कॉलेज, अंबाजोगाई, जि .बीड
मेल : ghodkearvind123@gmail.com
मो. नं.8208918100

"अरुण यह मधुमय देश हमारा जहां पहुंच मिलता अनजान क्षितिज को एक सहारा" जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित इस काव्य के माध्यम से हम भारतीय संस्कृति की गरिमा को पहचान सकते हैं. भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृति रही है. भारतीय संस्कृति में विश्व मानवता बाद की कल्पना दिखाई देती है. 'वसुधैवकुटुंबकम' की कल्पना से निर्माण भारतीय संस्कृति में हर जीव को दया की दृष्टि से देखा जाता है और उसे सहारा दिया जाता है. 'अतिथि देवोभव' की भावना को लेकर जीने वाला भारतीय मनुष्य विश्व की महान संस्कृति का संरक्षक एवं संवाहक भी रहा है. भूमंडलीकरण के दौर में विश्व का हर एक मनुष्य अर्थ और स्वार्थ से प्रेरित कार्य करता हुआ दिखाई देता है किंतु ऐसे समय में भारतीय संस्कृति विश्व के मनुष्य को एक नया रास्ता दिखाने का कार्य कर करती हुई दिखाई देती है. तथा विश्व आज भारतीय संस्कृति की ओर अपेक्षा की दृष्टि से देखता है. दुनिया की नजरों में महान यह भारतीय संस्कृति भारतीय स्त्रियों के प्रति उतनी उधार नहीं है जितनी कि विश्व के संदर्भ में दिखाई देती है. सदियों से इस संस्कृति पर पुरुष वर्चस्व वाद का प्रभाव दिखाई देता है. पुरुषों द्वारा बनाए गए सामाजिक मान्यताएं और प्रतिमाओं का निर्वाहन भली-भांति चुपचाप भारतीय महिलाओं को करना पड़ता था. उदार भारतीय संस्कृति में महिलाओं को शरीर की सहारे घेर लिया जाता हैं .नारी जीवन की डोर शारीरिक नैतिकता से बंधी हुई है, जो एकांगी दिखाई देती है. नैतिकता को लेकरं पुरुष के लिए अलग न्याय और स्त्री के प्रति अलग न्याय दिखाई देता है. सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भारतीय महिलाओं का स्थान दुय्यम ही रहा है .भारतीय पुरुष अपने वर्चस्व को सदियों से बनाए रखने की कोशिश करता आया है. और वह आज भी भारतीय नारी को चक्का और चूल्हा तक सीमित को रखना चाहता हैं. 'जीवोजीवस्य से जीवनम' का अनुभव भारतीय संस्कृति में भी दिखाई देता है. हमेशा शारीरिक दृष्टि से बलवान पुरुष दुर्बल स्त्री पर अत्याचार करता आया है. सदियों से भारतीय पुरुषों ने महिलाओं पर अत्याचार किए हैं और आज भी काम अधिक रूप में उसका रूप दिखाई देता है. पढ़ी-लिखी भारतीय नारी भी आज पुरुष मानसिकता के पिंजरे में कम अधिक रूप से बंद दिखाई देती है.

बदलते परिवेश और बदलता भारतीय परिदृश्य भारतीय नारी के जीवन में भी अनेक बदलाव के साथ गतिमान दिखाई देता है. भारतीय नारी संविधान और शिक्षा के बल पर आज अनेक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है और अपने वर्चस्व को प्रस्थापित कर रही है. किंतु आज भी नारी का नैतिकता के वहाने शारीरिक और भावनिक शोषण किया जाता हैं. पुरुष प्रधान मानसिकता नारी के शरीर को घेरकर, उसका संदर्भ चरित्र के साथ जोड़कर उसका शारीरिक और मानसिक दमन करते दिखाई देती है.आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने 'साहित्य को समाज का दर्पण कहा है' तो उस साहित्य रूपी दर्पण में संस्कृति का स्पष्ट चित्र दिखाई देता है. भारतीय समाज में बदलती हुई सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थिति का चित्रण आधुनिक साहित्य में दिखाई देता है.स्त्रीवादी रचनाकारों ने बदलते समाजजीवन के अनुरूप बदलती नारी जीवन का चित्रण भी सटीक रूप में किया है. पुरुषों के अनुरूप बनी हुई भारतीय संस्कृति में स्त्री का स्थान दुय्यम रहा है. ऐसी संस्कृति के प्रति आधुनिक भारतीय नारी का व्यवहार बदला हुआ दिखाई देता है. बदलता भारतीय

Scanned with OKEN Scanner

परिदृश्य तथा बदलते सांस्कृतिक संदर्भ में आधुनिक युग की अनेक महिला रचनाकारों ने अपनी कलम चलाई है और भारतीय नारी के सशक्त रूप का चित्रण किया है. सदियों से भारतीय संस्कृति में अन्याय-अत्याचार सहने वाली भारतीय नारी आज शिक्षा और संविधान के बल पर अपना जीवन हर पल जीने की कोशिश करती है और इस हर पल जीवन जीने की कोशिश में संस्कृति के नए आयामों को स्थापित करने लगी है. सदियों से भारतीय पुरुष मानसिकतां ने स्त्री का भोगवादी वस्तु के रूप में उपयोग किया है. किंतु जब स्त्री की बात आती है तो उसके शरीर को नैतिकता से जोड़कर उसे बंधन में जकडकर रखा जाता है. किंतु आज की आधुनिक भारतीय नारी नैतिकता की डर से पीड़ित जीवन जीना नहीं चाहती हैं बल्कि पुरुष व्यवस्थाद्वारा बनाए गए सामाजिक और सांस्कृतिक नियमों को तोड़कर स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है. इसका सजीव चित्रण स्त्रीवादी रचनाकारों के रचनाओं में दिखाई देता है. 'स्त्रीत्व की नैतिकता' लेख में मैत्रेयीपुष्पा कहती है" स्त्री को शरीर के आधार पर ही घेरा जाता है और यदि वह कुछ बोले तो अश्लील के लांछन तैयार है . सारा कुछ पुरुष सत्ता का किया धरा है किसी विदुषी नारी से पूछकर शास्त्र नहीं रचे गए न नैतिकता के मानदंड बने तभी भी पुरुष से नत नेत्र और घुंघट में रहने के लिए नहीं कहा जाता."[1] आधुनिक भारतीय नारी स्त्री-विरोधी बनाए गए सभी सामाजिक मान्यताओं का विरोध कर, स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है. जिसका सजीव चित्रण मनिकामोहीणी के कहानी में दिखाई देता है. 'बीमार' कहानी में मनिका महीने से लिखती है की नायिका का पति नायिका का पर बलात्कार करने में ही आनंद लेता था.पति के साथ नायिका का वैवाहिक जीवन घुटन बना हुआ था. किन्तु सामाजिक मान्यताएं और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए अपनी मां की खातिर नायिका अपने पति के अनेक अन्याय-अत्याचार को सहती है. किंतु जब उसका अन्याय बढ़ता ही जाता है तब वह पति के साथ रहने से मना कर देती है. और अपने मा से कहती है कि "विवाह कितनी गलत और गैरजरूरी संस्था है, मम्मी, रीमा के चेहरे पर एक ठहराव था, उसके आसू सुख चुके थे और निर्णय की द्रुढता से उसकी आखे निश्चय से चमक रही थी, दो जून की रोटी और एक रात सेक्स का जुगाड़ बैठाने के लिए इतना बड़ा झंझट?"[2]

भारतीय संस्कृति में परिवार को बनाए रखने में विवाह संस्कार की महत्व पूर्ण भूमिका रही हैं.विवाह संस्कार एवं कुटुंब व्यावस्था सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखती है किंतु पुरुषों द्वारा हो रहे अत्याचारों से डरकर आधुनिक नारी ऐसे वैवाहिक बंधनों से ही आजाद होना चाहती है. बीमार कहानी की नायिका की तरह आज आधुनिक युग की हजारों कामकाजी महिलाएं और सुशिक्षित महिला पुरुष वर्चस्व वादी वैवाहिक संस्था का त्याग कर स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है. पिता, पति और पुत्र के सहारे जीवन जीने वाली भारतीय नारी आज पुरुषवर्चस्व वादी पुरुष को अपने जीवन से दूर रख कर स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है. जिसके लिए वह पुरुषों द्वारा बनाएं सारे नियमों का त्याग करती हुई दिखाई देती है. भारतीय परंपरा और इतिहास में पुरुष ने सदा ही अपने पसंद की स्त्री चुनी है. और अपने पसंद की स्त्री को हासिल करने के लिए रामायण महाभारत जैसी घटना घटाएं दिखाई देती है. मैत्रेयीपुष्पा कहती है कि "पुरुष ने सदा अपने पसंद की स्त्री चूनी है भले उसके लिए खून खराबे से लेकर अपहरण और अत्याचार से क्यों न गुजरना पड़े. लेकिन अपने पसंद दिखाने का अधिकार स्त्री की स्त्री को हरगिज नहीं रहता."[3] अपनी पसंद की स्त्री को चुनने के लिए पुरुष किसी भी हद तक जा सकता है लेकिन वहीं दूसरी ओर स्त्री को उसके अधिकारों से वंचित रखना चाहता है. किंतु आज की स्त्री भी अपने पसंद के अनुरूप पुरुष का चुनाव करने लगी है. पुरुष अत्याचारों का विरोध कर अपनी इच्छा के अनुरूप जीवन जीने लगी है. वैवाहिक जीवन में अगर उसे समाधान नहीं मिलता है तो सामाजिक प्रतिष्ठा की परवाह किए बगैर पति से अलग होकर सुखी जीवन जीने लगी है. 'ढाई आखर प्रेम का' कहानी में पति और बच्चों से अलग होकर समाज और नैतिकता के दुष्ट चक्र को तोड़कर स्वच्छंद जीवन जी रही है. सहेली नायिका द्वारा पराए पुरुष के साथ कार में ले जाने पर सहेली उसे भला-बुरा कहती है. इस बात पर नायिका कहती है कि

"कार में अधिक से अधिक क्या कर सकता था. कुछ कर भी लेता तो कर लेने देती यार शरीर ही तो है दोहो और साफ"[4] दुनिया को दिशा दिखाने वाली भारतीय संस्कृति सर्वगुण संपन्न नहीं है. भारतीय संस्कृति में भी दलित और स्त्रियों के प्रति अन्यायी एवं दुय्यम भाव दिखाई देता हैं. पति परमेश्वर की कल्पना से जीवन जीने वाली पारंपारिक भारतीय स्त्री आज के बदलते भारतीय परिदृश्य में दिखाई नहीं देती हैं बल्कि अपने अधिकारों के लिए पति परमेश्वर की कल्पना को नकार कर स्वच्छंद जीवन जीती हुई नजर आती है. जिसका सजीव चित्रण मनिका की कहानियों में दिखाई देता है. आधुनिक अथवा मॉडर्न समाज का दिखावा करते हुए जीवन जीने वाला भारतीय पुरुष समग्र रूप से आधुनिक नहीं है. क्योंकि आज भी वह स्त्री को अपनी अधिकारी वस्तु के रूप में देखता है. आधुनिकता की बात बस उसके खान-पान और वेशभूषा तक ही सीमित दिखाई देती है. किंतु वैचारिक धरातल पर आज भी उसके मन पर पुरूषी मानसिकता का प्रभाव दिखाई देता है. स्त्री को चक्के और चूल्हे तक सीमित रखने की पुरुष की धारणा आज भी जीवित है. वह आज भी अपने से तेज स्त्री को पत्नी के रूप में नहीं अपनाता बल्कि वह पत्नी के रूप में अपने से कमजोर स्त्री को अपनाना चाहता है . जिसके ऊपर वह जब चाहे अन्याय - अत्याचार कर सकें. 'मेमना' कहानी में पुरुष मानसिकता का चित्रण करते हुए मनिका जी एक पुरुष के माध्यम से कहती है "मैं एक आम आदमी हूं, अपने से कम औरत को मैं अपना समझता हूं. अपने से अधिक औरत मेरे बस की नहीं है. वह औरत ही क्या जो मर्द को मर्द न समझने दे, जो पति को एहसास न होने दें कि वह पति है."[5] दिखावे की आधुनिकता में आज का पुरुष, पुरुष प्रधान सामाजिक मानसिकता से अलग नहीं हो सका है. तो दो दूसरी ओर भारतीय नारी ने अपने अधिकारों के लिए जीवन जीने का मार्ग चुन लिया है.

आज विश्व के स्तर पर पारिवारिक संस्था खतरे में है किंतु भारत भी उससे बचा हुआ नहीं है. आज के समय में 10% से भी अधिक पति-पत्नी एक दूसरे से अलग होने लगे हैं. क्योंकि स्त्री अपने अधिकारों को जीना चाहती है लेकिन पति उसे परंपरा के अनुरूप पति को परमेश्वर मानकर जीने के लिए बाध्य कर रहा है. सदियों से लेकर आज तक हम देखते आए हैं कि भारतीय सामाजिक मान्यताएं स्त्री को सार्वजनिक रूप में उतना अधिकार नहीं देती है, जितना कि पुरुषों को अधिकार दिया गया है. आज भी परिवार और समाज में स्त्री का स्थान पुरुषों के बराबर का नहीं है. ग्राम पंचायत से लेकर देश की संसद में स्त्री को कितना अधिकार है जो निर्णय क्षेत्र में अपने अधिकारों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग कर सकें? संविधान और आरक्षण के कारण आज थोडा बहुत राजनीति में स्त्री का स्थान दिखाई देता है. किंतु सार्वजनिक क्षेत्र में आज भी स्त्री का स्थान न के बराबर है. गणपति उत्सव, शिवजयंती, डॉ. बाबासाहेबआंबेडकर जयंती आदि सार्वजनिक उत्सव और त्यौहार में महिलाओं का स्थान गौण दिखाई देता है. भले ही दुनिया भारतीय संस्कृति को आदर्श संस्कृति मानती रही हो लेकिन भारतीय नारी की दृष्टि से भारतीय संस्कृति आदर्श संस्कृती नहीं है. क्योंकि कुछ अपवाद के रूप में स्त्री विदुषी पात्रों को छोड़कर अन्य महिलाएं पुरुष सत्ता के अधीन रहकर जीवन ज़ी चुकी हैं तथा जीवन जीती दिखाई देती है. शरीर को लेकर घेरने वाले भारतीय समाज ने स्त्री को सदा ही अर्थीक क्षेत्र में पराश्रित रखने का प्रयास किया है. किंतु आज की कामकाजी नारी आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर होकर स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है. किंतु नारी का स्वच्छद जीवन भी उसके जीवन को खुशियों से नहीं भर देता. हर पल जीवन जीने की चाह में उदासी और अकेलेपन की भावना उसे बेचैन कर देती है. 'शहर जहां सूखा पड़ता है 'कहानी में नायिका की स्वच्छंद व्रती के कारण उदास एवं बेचैन जीवन का चित्रण करते हुए मनिकाजी लिखती है कि" तभी अचानक एक भयानक ख्याल बार-बार उसे छेड़ने लगा था, क्या हर लड़के से प्यार नहीं किया जा सकता? उसने मन ही मन इस व्यवस्था को बहुत कोसा था, आखिर क्यों ?आखिर क्यों "6 आज की शिक्षित भारतीय नारी पुरुष की तरह अपने पसंद के पुरुष को चुनने लगी है . अथवा अपनी शारीरिक और मानसिक भूख मिटाने के लिए नैतिक-अनैतिक मार्ग अपनाने लगी है. आज की नारी स्वतंत्र जीवन जीने लगी है अपनी पसंद ना पसंद का चुनाव करने

Scanned with OKEN Scanner

का अधिकार रखने लगी है. 'अनलकी नंबर' कहानी में स्मार्ट और तेजतर्रार नायिका लाईन मारने वाले दब्बू और कमजोर दिखाई देने वाले लाडके से कहती हैं "हो सकता है हम दोनों काशश हो लेकिन आपकी सूचना के लिए मैं आपको बता दूं कि आपके लिए मैं पहली या दूसरी लड़की हो सकती हूं पर आप मेरे लिए तेरहवे लड़के हैं यदि आप गणित में होशियार है तो काशश होने की डिग्री का हिसाब लगा सकते हैं."[7] 'अनलकी नंबर' कहानी की नायिका समाज़ के सारे बंधनों को तोड़ने का सामर्थ्य रखती है. अपने पसंद के अनुरूप अनेक लड़को को नापसंद करते हुए अपने पसंद का चुनाव करती हुई दिखाई देती है. सामाजिक मान-सम्मान प्रतिष्ठा को अनदेखा कर अपनी खुशियों को अपनाने वाली नायिका मनिका की प्रिय नायिका रही है. सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए हजारों महिलाएं पुरूषी अन्याय अत्याचार चुपचाप सह लेती है किंतु सुशिक्षित और आधुनिक भारतीय नारी पुरुषों के अत्याचारों का विरोध कर जीवन स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है. 'बीमार' कहानी की नायिका रीमा अपनी मां को समझाते हुए कहती है, "बोलो मम्मी क्या हम सिर्फ दुनिया के लिए जी रहे हैं, दुनियावी दिखावे के रिश्ते को क्या मैं सिर्फ इस स्तर पर अपनाऊ कि समाज क्या कहेगा? तुम्हे तुम्हारी रीमा का सुख कुछ नहीं है"[8] रीमा जैसी अनेक नायिका अपने अधिकार और खुशी के लिए सामाजिक मान्यताओं को तोड़कर जीवन जीना चाहती है. जिसका सजीव चित्रण स्त्रीवादी रचनाकार मनिका मोहिनी की कहानी में दिखाई देता है. समाज संस्कृति का निर्माता है और संस्कृति समाज को नियंत्रित करती है. आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति बदलते परिदृश्य में अपने मूल्य में परिवर्तन करती हुई दिखाई देती है. बदलते भारतीय जीवन पद्धति का चित्र हिंदी रचनाकार की रचनाओं में व्यापक रूप से हुआ है.

संदर्भ :

1. नैतिकता के नए सवाल मैत्रेयीपुष्पा -138 139
2. अण्वेशी-विमार.-मणिका मोहिनी - पृष्ठ -124
3. नैतिकता के नए सवाल- स्त्रीत्व की नैतिकता -मैत्रेयीपुष्पा- पृष्ठ -140
4. यह कहानियां- मनिका मोहिनी- ढाई आखर प्रेम का -पृष्ठ 48
5. मेमना - मनिका मोहिनी -पृष्ठ 107
6. स्वप्नदोष -शहर जहां सूखा पड़ता है -माणिका मोहिनी पृष्ठ . 62
7. अभी तलाश जारी है -अनलकी नंबर -मणीका मोहिनी -पृष्ठ 47
8. बीमार -मणींकामोहिनी -पृष्ठ -107

Scanned with OKEN Scanner

Printing Area

www.विद्यावार्ता.कॉम®

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyawarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats). If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

http://www.printingarea.blogspot.com

INDEX

01) सामाजिक मान्यताएं और नारी
डॉ. घोडके अरविंद अंबादास, अंबाजोगाई ||14

02) दर्द का हद से गुजरना है औरत होना
डॉ.अवधेश कुमार जौहरी, भीलवाड़ा (राज) ||17

03) स्त्री विमर्श
पूजा काशीनाथ गुट्ठे, औरंगाबाद, महाराष्ट्र ||19

04) हिंदी साहित्य में नारी विमर्श
प्रा.डॉ. सुरेखा मंत्री & स्वाती सरकटे, यवतमाल ||21

05) शक्ति स्वरूपा नारी का सामर्थ्य तथा महादेवी वर्मा का स्त्री विमर्श
अभिलाषा माथुर & डॉ. अवधेश कुमार जौहरी, भीलवाड़ा (राजस्थान) ||25

06) स्त्री संघर्ष के नये आयाम जया जादवानी के कथा साहित्य की रचनाओं में
अभिशिखा नामदेव & डॉ० श्रीमती सरोज गोस्वामी, जिला–रीवा म०प्र० ||28

07) समकालीन महिला उपन्यास लेखन में स्त्री – विमर्श
डॉ. संतोष कुमार अहिरवार, सागर (म०प्र०) ||31

08) हिंदी दलित उपन्यासों में नारी
एल. अनिल, हैदराबाद ||35

09) महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी विमर्श के सांस्कृतिक आयाम
बुद्धिराम, नई दिल्ली ||38

10) स्त्री, संघर्ष व भावनाओं को मुखरित करता निराला साहित्य
चेतना दरगड़ & डॉ.अवधेश कुमार जौहरी, भीलवाड़ा (राज.) ||41

11) स्त्री : कलाकार
डॉ. दीपेश कुमार विशनावत, भीलवाड़ा ||44

12) समकालीन हिन्दी सिनेमा और महिला सशक्तिकरण
प्रा.डॉ.चित्रा धामणे, ता.जि.बीड ||47

13) अनामिका की कविता में स्त्री विमर्श
Dr. Priya A., कोट्टयम, केरल ||51

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | June 2021 Issue-03, Vol-01 | 014

01

सामाजिक मान्यताएं और नारी

डॉ. घोड़के अरविंद अंबादास
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

****

औरत ने जनम दिया मर्दो को,
मर्दो ने उसे बाजार दिया।
जब जी चाहा मसला कुचला,
जब जी चाहा दुत्कार दिया।
मर्दो ने बनाई जो रस्मे,उनको हक का फरमान कहा।
औरत के जिंद जल ने को,कुर्बानी और बलिदान कहां।
किस्मत के बदले रोटी दी,
और उसको भी एहसान कहा।१

भारतीय समाज व्यवस्था के सामाजिक नियम, प्रथा, परंपरा तथा मान्यताएं एकांकी और नारी विरोधी है। पुरुष व्यवस्था के हित को ध्यान में रखकर स्त्री जीवन के अहित की व्यवस्था भारतीय सामाजिक व्यवस्था में दिखाई देती है ।पुरुषवर्चस्व वादी सामाजिक व्यवस्था के बारे में मैत्री पुष्पा कहती है कि, बड़े अचरज की बात है कि स्त्री को शरीर के आधार पर ही घेरा जाता है और यदि वह कुछ बोले तो अश्लील और मर्यादा का लांछन तैयार है। सारा कुछ पुरुष सत्ता का किया धरा है। किसी विदुषी नारी से पूछ कर शास्त्र न लिखे गए, ना नैतिकता के मानदंड बने। तभी तो पुरुष से नत नेत्र और घुंघट में रहने के लिए नहीं कहा जाता ।२ स्त्री– पुरुष समानता का ढोल पीटने वाला आधुनिक भारतीय समाज नारी का संस्कृति तथा सामाजिक मान्यताओं के आड में शोषण करता हुआ दिखाई देता है ।आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि हर क्षेत्र में पुरुष वर्चस्व का बोलबाला भारतीय संस्कृति में दिखाई देता है। आधुनिक युग में शिक्षा, संविधान और आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण नारी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है । किंतु पुरुष वर्चस्ववादी सामाजिक व्यवस्था नारी विरोधी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कार्यरत दिखाई देती है।

समाज के अभाव में मनुष्य और मनुष्य के अभाव में समाज अर्थहीन अथवा अपूर्ण होते हैं । मनुष्य को समाज द्वारा मिलनेवाली सम्मान अथवा प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण लगती है अथवा इससे आगे कहे तो सामजिक मान–सन्मान एवं प्रतिष्ठा के लिए अपने कर्म करता रहता हैं। रहन–सहन, बोलचाल, रोटी–बेटी, वेशभूषा, रीति–रिवाज, प्रथा परंपरा, उत्सव – त्योहार आदि के लिए प्रत्येक समाज के अपने–अपने अलिखित नियम होते हैं। समाज में प्रचलित सामाजिक मान्यता अथवा नियमों का पालन करनेवाला व्यक्ति प्रतिष्ठित समझा जाता है । किंतु भारतीय संस्कृति अथवा सामाजिक मान्यताएं पुरुष वर्चस्व वादी बनाई गई है । नारी विरोधी सामाजिक व्यवस्था के विरोध में अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाले भारतीय नारी का आज भी अलग अलग मार्ग से सामाजिक शोषण किया जाता है। पुरुष वर्चस्ववादी समाज आज भी भारतीय नारी को अपना गुलाम या नौकर समझता है। पुरुष वर्चस्ववादी सामाजिक व्यवस्था का सजीव चित्रण मणिका जी के मेमना कहानी में दिखाई देता है । कहानी का नायक पति आम आदमी है। वह पत्नी के रूप में सामान्य और सुसंस्कृत पत्नीवृत्ता पत्नी की अपेक्षा करता है। किंतु मेमना कहानी की नायिका सुशिक्षित एवं अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली है। पारंपरिक पत्नी की अपेक्षा रखने वाले पति का अपेक्षा भंग होता है। तेजतर्रार, बेहिचक और बेबाक व्यवहार के कारण मेमना कहानी का पति अपनी पत्नी से डरा हुआ दिखाई देता है। नायक की नजर में उसकी पत्नी, पत्नी न लगकर बदमाश लगती है। पारंपारिक सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताओं का पालन कर पत्नी पति को परमेश्वर का रूप मानकर उसकी सेवा करनेवाली पत्नी की अपेक्षा करने वाले पति को तेज, साहसी और अपने स्वच्छंद जीवन को जी लेने की कोशिश करने वाली पत्नी मिलती है । इसलिए कहानी के नायक को उसकी पत्नी बदमाश लगती है । मेमना कहानी का पति पारंपरिक पत्नी की

धारणा करते हुए कहता है कि, मैं एक आम आदमी हूं और आम आदमी के सभी गुण मुझ में मौजूद है। मसलन मैं चाहता हूं कि, कभी गुस्से से पत्नी की तरफ देख लो तो पत्नी गुनाहगार के अंदाज में अपनी आंखें झुका ले, कभी गुर्राऊ तो पत्नी सहन कर कापने लगे । कभी उसके कसूर की सजा में उसे पीट ना चाहूं तो वह दौड़ कर मेरे चरण पकड़ ले। पति – पत्नी के रिश्ते में पति के चरणों का बहुत बड़ा महत्त्व है। यह मैं उसे कभी नहीं समझा पाया। पत्नी को दौड़ दौड़ कर पति के चरणों से निपटने की आदत हो तो गृहस्थि जीवन सुखी रहता है, पुरुष का अहम पोषित होता रहता है। पुरुष के अहम का पोषण ही सुखी गृहस्थि जीवन की आधारभूत शीला है।३ मेमना कहानी में पारंपरिक नारी विरोधी जीवन जीने वाले पुरुष मानसिकता का सजीव चित्रण किया गया है। शिक्षित अथवा अशिक्षित भारतीय पुरुषों में अपने से तेज पत्नी की धारणा आज भी उसके मन में डर पैदा करती हैं । हर क्षेत्र में भारतीय पुरुष अथवा पति पत्नी को अपने से कमजोर रूप में अपनाना चाहता है। भारतीय संस्कृति में त्याग – समर्पण का बड़ा महत्त्व है। किंतु पारंपरिक परंपरा से लेकर आज भी त्याग, समर्पण और एकनिष्ठा की अपेक्षा पति से कही अधिक पत्नी की ओर से ही की जाती है। पुरुष अपनी इच्छा के अनुरूप जीवन जी लेता है । किंतु पत्नी अपनी इच्छा के अनुरूप जीवन जीने की कोशिश करती है तो समाज उसे बदमाश कहता है । भारतीय समाज में पनपने वाली नारी विरोधी संस्कृति और सामाजिक मान्यताओं का प्रचलन सदियों से दिखाई देता है।

आज के आधुनिक युग में भी नारी विरोधी विचारधारा भारतीय नारी का सामाजिक मान्यताओं के सहारे नारी का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षणिक शोषण कर रही है। परंपरा से चली आ रही है नारी विरोधी सामाजिक मान्यताओं का चित्रण मनिका जी ने कोई सजा नहीं इस कहानी के माध्यम से यथार्थ रूप में किया है । कहानी की पात्र मीरा भारतीय नारी का प्रतीकात्मक रूप है जो अपने पति परमेश्वर का अन्याय अत्याचार परिवार की प्रतिष्ठा के डर से मजबूरी में सह लेती है । हर रोज मारपीट करने वाले पति को छोड़कर जब मीरा अपनी बहन के पास आती है । मीरा का पति मीरा को समझाते हुए यह कहता है कि, मीरा तू तो भारतीय नारी है, तुझे इस प्रकार घर छोड़ना शोभा नहीं देता । पति परमेश्वर के समान होता है। धैर्य और सहनशीलता ही नारी का प्रमुख धर्म है तो अपनी मर्यादा मत खोना । मैं तेरा पति हूं तेरे लिए परमेश्वर समान हूं, मैंने तुझे घर दिया है एक नाम दिया है बच्चे दिए है। अगर मैंने तुझे कभी कुछ कह भी दिया तो क्या हो गया ? क्या तूने देखा नहीं कि हमारे घर में औरतें ऐसी ही पिटते आई है, आखिर औरत, औरत है मर्द की गुलामी नहीं करेगी तो क्या सिर पर चढ़ेगी ? पति को हर तरह खुश रखना ही पत्नी का धर्म है ।४ खोकली सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए आज हजारों महिलाएं अपनी इच्छाओं का गला घोट कर दर्द भरा जीवन जीने के लिए मजबूर दिखाई देती है। मायके से विदा होने के बाद पत्नी पति का घर मौत के बाद ही छोड़ती है। ऐसी धारणा भारतीय संस्कृति में है । अपने इच्छा आकांक्षाओं का गला घोट कर पति परमेश्वर की सेवा में अपना जीवन न्योछावर करने वाले भारतीय महिला प्रतिष्ठित समझी जाती है। पति के अन्याय अत्याचार का विरोध करने वाली महिला कुलटा और कुलनासी समझी जाती है। लड़की के व्यवहार पर पिता की प्रतिष्ठा निर्भर रहती है। पति परमेश्वर का अन्याय अत्याचार चुपचाप सहकर पति और ससुराल वालों की सेवा करने वाली पुत्री समाज में पिता के लिए प्रतिष्ठा का कारण बन जाती है। हजारों भारतीय लड़कियां अपने पिता की प्रतिष्ठा के लिए पति का चुपचाप अन्याय अत्याचार सहन करती हुई दिखाई देती है। जो नारी सामाजिक मान्यता का पालन नहीं करती है तो उसे दंड दिया जाता है । उसे अप्रतिष्ठित समझा जाता है अथवा उस परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। भागीदार कहानी समाज द्वारा मां बाप को बेआबरू करने की डर से चुपचाप अन्याय अत्याचार सहने वाले भारतीय नारी की कहानी है। भारतीय समाज व्यवस्था में अन्याय अत्याचार सहने के लिए महिलाओं का जन्म हुआ है, ऐसा इस कहानी में दिखाई देता है । कहानी की नायिका अनु अपने पिता की प्रतिष्ठा के

Scanned with OKEN Scanner

E-ISSN – 2348-7143

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | June 2021 Issue-03, Vol-01 | 016

लिए अन्याय, अत्याचार सहकर पति का शारीरिक और मानसिक अत्याचार चुपचाप मजबूरी में सह लेती है। पहले ही बड़े बहन के कारण पिता के प्रतिष्ठा पर आच लगी हुई थी। छोटी बहन ने भी पति के अत्याचारों को त्याग कर पति का घर छोड़ दिया तो पिता को समाज में अप्रतिष्ठित समझा जाएगा । पिता की प्रतिष्ठा के लिए कहानी की नायिका अनु चुपचाप पति का अन्याय अत्याचार सहते हुए कहती है कि मैं एक नरक में जी रही हूं। उस नरक से छुटकारा पाना चाहते हुए भी तेरी वजह से छुटकारा नहीं पा सकती । क्योंकि लोग क्या कहेंगे कि, बड़ी बहन ने भी और छोटी बहन ने में भी ।५

समाज के अभाव में मनुष्य की कल्पना असंभव है और मनुष्य के अभाव में समाज का कोई अस्तित्व नहीं होता है । किंतु समाज के लिए अपनी इच्छा अपेक्षा और आकांक्षाओं का गला घोट कर जीवन जीना भारतीय नारी जीवन की मजबूरी बन गई है । खोकली प्रतिष्ठा के विरोध में आज अनेक भारतीय स्त्री पुरुष समाज सुधारक अनेक प्रकार से कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। भारतीय समाजव्यवस्था में पुरुष वर्चस्व के कारण स्त्री द्वारा सेक्स के लिए उठाए गए कदम को व्यभिचार कहा जाता है । किंतु दिन–रात अपनी हवस का शिकार बनाकर नारी को नोच नोच कर खाने वाले पुरुष के प्रति अलग न्याय दिखाई देता है। भारतीय समाज व्यवस्था में काम भावनाओं को विवाह नामक संस्कार में बांधकर उसका नियमन किया गया है। बीमार कहानी में विवाह के बाद पति द्वारा हर रोज किए जाने वाले शारिरीक और मानसिक अत्याचार से पीड़ित एक नायिका के दर्द भरी कहानी है। विवाह सामाजिक स्वास्थ को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। किंतु इस विवाह संस्था के आधार पर ही भारतीय समाज व्यवस्था में नारी का सर्वाधिक शारीरिक, आर्थिक, मानसिक और लैंगिक शोषण किया जाता है। कहानी की नायिका रीमा का विवाह सुशिक्षित युवक से किया जाता है। उच्च शिक्षित और नौकरी करने वाला रीमा का पति शशांक मानसिक रूप से विकलांग मनोवृति का शिकार था। जिसे रीमा के साथ समागम के बजाए जोर जबरदस्ती में आनंद आता था। सामाजिक प्रतिष्ठा और मां के डर से रीमा शशांक द्वारा होने वाले शारीरिक और लैंगिक अन्याय अत्याचार को चुपचाप सह लेती थी। मां की खुशी और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए शशांक का अन्याय अत्याचार सह लेती है। मणिका जी ने बीमार कहानी के माध्यम से समाजमान्य विवाह संस्था के आड़ में नारी जीवन पर होने वाले अन्याय अत्याचार को यथार्थ चित्रित किया है। रीमा शशांक द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों से परेशान होकर उसका घर छोड़कर मां के पास चली आती है। किंतु रीमा की मां सामजिक प्रतिष्ठा के कारण रीमा के घर छोड़ने वाले फैसले का विरोध करती है। उस समय रीमा अपनी मां से कहती है कि बोलो मम्मी क्या हम सिर्फ दुनिया के लिए जी रहे हैं ? दुनियावी दिखावे के रिश्ते को क्या मैं सिर्फ इस तरह जी लू कि समाज क्या कहेगा ? तुम्हारी रीमा का अपना सब कुछ नहीं है ?६ सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए शशांक जैसे अन्यायी और अत्याचारी पति के साथ जीवन व्यतीत करना भारतीय नारी की आज भी मजबूरी बनी हुई दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में पुरुषों ने स्त्री को अपने मतलब के लिए ही अपनाया है। जब भी स्त्री ने अपनी इच्छा को प्रकट किया तो उसे सामाजिक प्रतिष्ठा में बांधकर अनिच्छा से जीवन जीने के लिए मजबूर किया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में सार्वजनिक जगह पर स्त्री का काम करना प्रतिष्ठा के विरोध में माना जाता है किंतु उसी जगह पर पुरुष अगर काम करता है तो उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में हमेशा पुरुषों के लिए एक और स्त्री के लिए अलग मापदंड रखे हैं। दो पाटन के बीच कहानी में मणीकाजी भारतीय सामाजिक मान्यता और पुरुष प्रधानवर्चस्ववादी की संस्कृति में नारी की दयनीय दशा का यथार्थ चित्रण करती है। परिवार से लेकर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक शैक्षिक आदि क्षेत्र में नारी का चुनाव अथवा निर्णय पुरुष वर्चस्व से प्रभावित दिखाई देती है। नारी को कोई भी निर्णय पिता, पति, पुत्र अथवा अन्य पुरुष से प्रभावित होता है। कहानी में सुरभि को पुरुष मानसिकता के विचारों वाले व्यक्ति से संघर्ष करना पड़ता है। सुरभि अपनी इच्छाओं के अनुरूप जीवन जीना चाहती थी किंतु सामाजिक प्रतिष्ठा का बहाना दिखा कर सुरभि को पारिवारिक बंधनों में बंद कर रहने के लिए मजबूर किया जाता है। नायक शरद सुरभि से कहता है कि, जहां पति को परमेश्वर माना जाता है। एक अच्छी पत्नी करने के लिए समझौता नहीं करना चाहोगी? घर में तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी। तुम राज करोगी शुरू मेरे दिल पर मेरे घर पर। आखिर औरत को शादीशुदा

Scanned with OKEN Scanner

औरत यू पराए मर्दों के बीच बैठकर कैसे गा सकती हो ? तुम्हें वही करना चाहिए जो तुम्हारे पति और ससुराल वाले चाहे ।७ संस्कार और प्रथा परंपरा के नाम पर भारतीय पुरुषों ने स्त्री को अपने हाथों की कठपुतली बनाई है। अपनी इच्छा अपेक्षा भावनाओं का दमन करके घुटन भरी जिंदगी जीने के लिए पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था ने स्त्री को मजबूर किया है।

भारतीय नारी आज पुरुष के साथ हर क्षेत्र में कदम से कदम मिलाकर कार्य कर रही है किंतु परंपरागत सामाजिक मान्यताएं और पुरुष वर्चस्ववादी संस्कृति में उसे दुय्यम स्थान दिया गया है। सामाजिक मान्यता, प्रतिष्ठा आदि के बहाने भारतीय नारी का पद – पद पर मानसिक और शारीरिक शोषण किया जाता है। भारतीय संस्कृति की महानता भले ही दुनिया की नजरों में महान हो किंतु भारतीय नारी के लिए भारतीय संस्कृति, भारतीय सामाजिक मान्यताएं, नैतिकता, प्रतिष्ठा आदि अन्यायी और अत्याचारी है। जन्म से लेकर नारी के अंत तक उसे अनेक सामाजिक बंधन में बांधकर उसका शोषण किया जाता है सामजिक मान्यता, नैतिकता, प्रतिष्ठा, लैंगिक शोषण से बेआबरू होने का डर जैसे अनेक कारनो से खान–पान, वेशभूषा, खेलकूद, शिक्षा–दिक्षा आदि में लड़का और लड़की में भेद किया जाता है। जन्म से लेकर नारी के अंत तक भारतीय समाज व्यवस्था में उसका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक शोषण किया है। भारतीय नारी देह को नैतिकता की तराजू में तोल कर उसे अनेक बंधनों में जकड कर उसका शोषण किया है ।

संदर्भ –

१) फिल्म साधन — साहिर लुधियानवी –१९५८

२) स्त्रीतव की नैतिकता– मैत्री पुष्पा– पृष्ठ –१३८– ३९

३) अभी तलाश जारी है — मनिका मोहिनी — मेमना — पृष्ठ १०९

४) कोई सजा नहीं– अन्वेषी — मनिका मोहिनी — पृष्ठ ७४

५) भागीदार– मनिका मोहिनी– पृष्ठ ६१

६) बीमार– मणीका मोहिनी– पृष्ठ –१२०

७) जग का मुजरा –दो पाटन के बीच– पृष्ठ – ११०

02

दर्द का हद से गुजारना है औरत होना

डॉ.अवधेश कुमार जौहरी
असीस.प्रोफ.(हिंदी),
संगम विश्विद्यालय, भीलवाड़ा (राज)

****

Abstract

बड़ी होकर न जाने कितने वो किस्से सुनाएगी ।
मेरी नवजात बच्ची तो अभी से बात करती है ।१

भूमंडलीकरण के इस दौर में मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में दिन–प्रतिदिन बस भागे ही जा रहा है । सच तो यह है कि उसे स्वयं अपने लिए भी कुछ करने की फुर्सत नहीं है तो ऐसे में वह समाज और देश के लिए क्या सोचेगा,अभिव्यक्ति के अनेक साधन होने के बावजूद आज का मनुष्य अपनी भावनाओं को समझने एवं उन्हें प्रेषित करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करता है । उस विवसता में 'महिला–विमर्श' एक हांसिये का विषय बन के रह गया है । आज का गजलकार उन सभी मुद्दों पर अपनी लेखनी आजमाता है जहाँ एक वर्ग विशेष को गुंजाईश नजर आती है। समकालीन हिंदी गजलों में महिला सशक्तिकरण सर चढ़ कर बोलती है ।

आँचल में दूध आँखों में पानी

सुप्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा के अनुसार हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी पर प्रभुत्व, केवल हम अपना वह स्थान व स्वत्व चाहते है जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है ।२

अब नारी के केवल ईश्वरीय तथा सौन्दर्यात्मक रूप का ही वर्णन नहीं किया जाता, बल्कि उसके जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों एवं परिवर्तनों को भी गजल में स्थान दिया जाने लगा है । आज के समय में स्त्री का जीवन पहले से कहीं अधिक दूभर

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Education, Modern Management Applied Science & Social Science

Vol. 03 No. 04(I), Oct.-Dec., 2021

INSPIRA
JAIPUR - INDIA

ISSN: 2581-9925
Impact Factor 6.340

INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION, MODERN MANAGEMENT APPLIED SCIENCE & SOCIAL SCIENCE (IJEMMASSS)

A bi-lingual Multidisciplinary Quarterly Peer Reviewed Refereed Journal

Vol. 03 | No. 04(I) | October-December, 2021

Indexing Status: IJEMMASSS is Indexed and Included in:
COSMOS Foundation & Electronic Journal Library EZB, Germany
International Scientific Indexing (ISI) || **General Impact Factor (GIF)**

Scanned with OKEN Scanner

12	FABRICATION OF NOVEL ALUMINIUM AND ITS APPLICATION *Amartya Sharma*	67-74
13	E-AGRICULTURE TECHNOLOGY: A STUDY OF RELEVANCE IN RURAL DEVELOPMENT OF INDIA *Dr. Laxminarayan Chandryya Kurpatwar*	75-77
14	EFFECT OF CADMIUM CHLORIDE ON HAEMATOPOIETIC ORGAN: THYMUS *Dr. Jaishree Daverey*	78-80
15	JALLIANWALA BAGH MASSACRE: A CRITICAL ANALYSIS WITH THE PERSPECTIVE OF INDIAN NATIONAL MOVEMENT *Neetu Mahajan & Dr. Daljit Kaur: Jallianwala Bagh Massacre*	81-86
16	OTT PLATFORMS VIEWERSHIP: AN ALTERNATIVE TO MOVIE THEATRES *Dr. Ajay Kumar Singh & Dr. Kuldeep Siwatch*	87-92
17	SIGNIFICANCE OF TRAINING PRACTICES & ITS EFFECTS ON EMPLOYEE PRODUCTIVITY: A COMPARATIVE STUDY *K.Padmavathi Nageswaramma & Dr. R. Padmaja*	93-96
18	GOODS AND SERVICES TAX IN INDIA: AN ANALYSIS *Dr. Vinod Kumar Tewari*	97-102
19	MEANINGFUL RELATIONSHIP OF LITERATURE WITH MEDIA, PSYCHOLOGY AND MARKET *Dr. M. S. Rajpankhe*	103-106
20	ISSUES AND CHALLENGES BEFORE INDIAN AGRICULTURAL IN DROUGHT PRONE AREAS- A CASE STUDY OF LATUR DISTRICT, MAHARASHTRA *Dr. Subhash Sahebrao Patekar*	107-110
21	STUDENT'S PERCEPTION TOWARDS E-EDUCATION OVER TRADITIONAL MODE OF EDUCATION WITH SPECIAL REFERENCE OF GOVT. COLLEGES IN UTTARPRADESH *Dr. Bindrawan Lal Sharma*	111-115
22	एकांगी नैतिकता और भारतीय नारी *डॉ. अरविंद अंबादास घोडके*	116-118
23	शिक्षकों का कक्षा–कक्ष प्रबन्धन एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन *श्रीमती निधि बाला*	119-124
24	भारतीय शिक्षा पद्धतिः आदि से वर्तमान तक *अंचल सक्सेना*	125-133
25	आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंसः संभावनाऐं एवं चुनौतियाँ *संतोष कुमार कुण्डारा*	134-138

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(I), October - December, 2021, pp.116-118

एकांगी नैतिकता और भारतीय नारी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके*

प्रस्तावना

नैतिकता के मापदंड पुरुष और महिला के लिए एक समान होने चाहिए। एकांगी और पुरुष व्यवस्था के अनुरूप विद्यमान् नैतिकता नारी जीवन के लिए यातना और पीडा कारण बनी हुई हैं। समाज में सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश समाज समय–समय पर करता आया हुआ है। आहार, निद्रा और मैथुन किसी भी पशु–प्राणी की जरूरत होती है। भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए काम भावना को विवाह संस्कार में बांधकर उसका नियमन किया गया है। काम भावना को विवाह संस्कार में बांधकर उसका समाज मान्य नियमन करते समय उदात्त परिवार का आविर्भाव हुवा। भारतीय समाज व्यवस्था में परिवार एवं कुटुंब व्यवस्था का बड़ा महत्व है। किंतु इस परिवार एवं कुटुंब व्यवस्था में पुरुष वर्चस्व का बोलबाला दिखाई देता है। नैतिकता के बंधनों में स्त्री को बांधने की कोशिश की जाती है, काम भावना को नैतिकता के तराजू में तोल कर उसका नियमन करने की कोशिश विवाह के माध्यम से करने वाला भारतीय पुरुषी समाज अपने हित के अनुरूप स्त्री विरोधी पुरुष वर्चस्व वादी व्यवस्था का निर्माण करता हैं। सदियों से लेकर आज भी स्त्री के काम भावना को अनेक बंधनों में बांधकर उसे नैतिक–अनैतिक प्रतिमानो में अपनाकर नारी का ही शोषण किया गया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में काम भावना को लेकर पुरुषों से कहीं अधिक नैतिकता के बंधनों में स्त्री को बांधने की कोशिंश की जाती है। नैतिकता और प्रतिष्ठा के डर से अतृप्त काम भावना की पीड़ा में भारतीय नारी की सदियों से पीडा, वेदना का जिंदगी जीने के लिए मजबूर होती हुई दिखाई देती है। मैत्रीयी पुष्पा कहती है, "स्त्री को शरीर के आधार पर ही घेरा जाता है और यदि वह कुछ कहे बोले तो अश्लील और मर्यादा का लांछन तैयार है। सारा कुछ पुरुष सत्ता का किया धरा है किसी विदुषी नारी से पूछ कर शास्त्र न ही रचे गए, ना नैतिकता के मानदंड बने।"[1] भारतीय समाज आधुनिक होने का दिखावा कर रहा है, किंतु नैतिक– अनैतिक जैसी नारी विरोधी विचारधारा नारी शोषण के लिए आज भी प्रचलित दिखाई देती है। आज भी भारतीय समाज में पुरुष के प्रति अलग न्याय और स्त्री के प्रति अलग न्याय की वृत्ति दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में किसी भी अन्यायी कृति के लिए सजा का प्रावधान होता ही है। किंतु पति द्वारा पत्नी पर अन्याय किए जाने के बाद भी पति परमेश्वर की कल्पना में नारी अन्याय सहने के लिए मजबूर है।

नैतिकता के बंधन नारी पर ही क्यो? यह समाज नारी पर कैसा अन्याय करता आया है, उसे 'स्त्री मुक्ति सांझा चूल्हा' में अनामिका लिखती है कि, ''मारपीट, गाली–गलौज , भ्रुण हत्या, कौटुंबिकव्यभिचार, बलात्कार और तरह–तरह के यौन दोहन, सती, पर्दा , डायन दहन, वेश्यावृत्ति, यांत्रिक संभोग, प्रेम, विवाह बंधन, अनचाहा गर्भपात, सक्षम और सुरक्षित प्रसव केंद्र का अभाव दुनिया के जितने स्त्री विषयक अपराध है प्रायः सब के मुख्य पेटी (प्राइम साइट) स्त्री शरीर ही होता है। शरीर जो कि इतना नरम और कोमल है। फिर भी इतना कर्मठ, लचीला और फुर्तीला शरीर जिसने आप को धारण किया है। आपको पाला पोसा है। कहानियां लोरिया सुनाई है।

* हिंदी विभाग, सहायक प्राध्यापक, यशवंतराव चव्हाण कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविदयाल, अंबाजोगाई, जि.बीड, महाराष्ट्र।

Scanned with OKEN Scanner

दिन रात आप की खिदमत में जुटा है। आखिर आपसे चाहता क्या है?"[2] एक जीव की अपेक्षा दूसरा जीव उसके साथ एक समान व्यवहार करें। किंतु पुरुष जीव नारी जीव पर अन्याय करता हुआ दिखाई देता है। खोकली और नकली आधुनिकता में आज की नारी नैतिक बंधनों का सर्वाधिक शिकार होती हुई दिखाई देती है।

मनिका जी द्वारा लिखित 'कोई सजा नहीं' कहानी भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री पुरुष के प्रति स्वीकृत एकांगी और अन्यायी नैतिकता का यथार्थ चित्रण करती है। कहानी की नायिका मीरा अपने पति का, परिवार और समाज के डर से चुपचाप शारीरिक और मानसिक शोषण भरा जीवन जी रही है। आज के आधुनिक युग में भी पुरुष मानसिकता वाले पति, पत्नी को मारना, पीटना, गाली गलौज करना अपना अधिकार समझते हैं। औरत सिर्फ गुलाम होती है।स्त्री एक उपयोग की वस्तु है, जिसका मन चाहे शोषण भारतीय समाज व्यवस्था में होता हुआ दिखाई देता है। उसका शोषण करते हुए शोषित नारी को भी वह कैसे गुलाम है जा बार–बार उसके मस्तिष्क पर थोप देता हैं । शारीरिक, मानसिक शोषण करने वाले पति को छोड़कर मीरा बहन शुभा के पास चली आती है। किंतु मीरा का पति अपनी दैनंदिनी, काम भावना और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए मीरा को घर वापस ले जाना चाहता है। मीरा को समझाते हुए कहता है, "मीरा तू तो भारतीय नारी है, तुझे इस प्रकार घर छोड़ना शोभा नहीं देता। पति परमेश्वर समान होता है। धैर्य और सहनशीलता ही नारी का प्रमुख धर्म है। तू अपनी मर्यादा मत खोना। मैं तेरा पति हूं तेरे लिए परमेश्वर समान हूं मैंने तुझे घर दिया है। एक नाम दिया है। बच्चे दिये है। अगर मैंने तुझे कभी कुछ कह भी दिया तो क्या हो गया? क्या तूने देखा नहीं कि हमारे घर में औरतें ऐसी ही पीटती आई है। आखिर औरत औरत है। मर्द की गुलामी नहीं करेगी तो क्या सिर पर चढ़ेगी? पति को हर तरह खुश रखना ही पत्नी का धर्म है।"[3] मीरा के पति के माध्यम से भारतीय नारी संबंधी भारतीय सामाजिक मान्यताएं किस तरह नारी विरोधी है, इसका सजीव चित्रण उपरोक्त वाक्य में दिखाई देता है। बहला–फुसलाकर मीरा का पति मीरा को वापस घर ले आता है। किंतु कुछ ही दिनों के बाद मीरा को जान से मार देता है। जान से मारने के बाद भी मीरा के परिवार वाले और समाज मीरा के पति को मीरा के बच्चे और सामजिक प्रतिष्ठा के लिए कोई सजा नहीं देना चाहता है। क्योंकि मीरा के पति को सजा मिलेगी तो मीरा के नैतिकता पर सवाल उठेगें।मनिका जी पुरुष प्रधान सामाजिक मान्यता के बारे में इसी कहानी में लिखते हुए कहती है कि, "उसके पति को सजा क्यों नहीं दिलाई गई? रह रहे कर उसके अंतर्मन को यह बात को चोट रही थी कि हमारा सामाजिक ढांचा ही इस प्रकार का है, जहां पुरुष के लिए किसी सजा का प्रावधान नहीं है।"[4]

भारतीय समाज में चुपचाप अन्याय–अत्याचार सहन करने वाली नारी को प्रतिष्ठित और नैतिक तथा उच्च संस्कारों वाली समझा जाता है। अर्थात अन्याय अत्याचार सहने के लिए नैतिकता और प्रतिष्ठा का लेबल भी नारी के ऊपर पुरुष व्यवस्था ने चालाकी से लगाया है। माँ– बाप की प्रतिष्ठा, मान–सन्मान, आबरू बचाने के लिए अन्याय और अत्याचारी वैवाहिक जीवन जीने के लिए भारतीय महिला मजबूर दिखाई देती है। अन्यायी सामाजिक मान्यता का पालन करना है सामान्य महिला का कर्तव्य बन जाता है। नैतिकता, कुलीनता, शालीनता, प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि के बहाने सामाजिक व्यवस्था द्वारा स्त्री का शोषण आज भी परिवार और परिवार के बाहर होता हुआ दिखाई देता है। 'बीमार' कहानी में मनिकाजी पति द्वारा किए जाने वाले शारीरिक, मानसिक शोषण का यथार्थ चित्रण करती है। कहानी की नायिका रीमा पति से माँ की प्रतिष्ठा और नैतिकता के डर से शारीरिक और मानसिक अत्याचार मजबूरी में सहन करती है। मां की खुशी और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए शशांक के हवस का शिकार रीमा को हर रोज होना पड़ता है। शशांक बड़ी बेरहमी से रीमा का हर रोज बलात्कार करता है। पति द्वारा हर रोज किए जाने वाले इस बलात्कार को भी रीमा सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए चुपचाप सहन करती हुई दिखाई देती है। पति के अनचाहे बलात्कार से परेशान रीमा अंत में अपनी मां से कहती है कि, "विवाह कितनी गलत और गैर जरूरी संस्था है, मम्मी दो जून की रोटी और एक रात का सेक्स का जुगाड़ बैठाने के लिए इतना बड़ा झंझट।"[5]

पुरुष वर्चस्ववादी विवाह संस्था के कारण विकसित परिवार व्यवस्था में नारी को समान अधिकार नहीं दिए गए तो विवाह संस्था और परिवार भी बिखर जाएंगे। पति परमेश्वर के हाथों आज भी हजारों महिलाएं शारीरिक, भावनिक अत्याचार सामाजिक नैतिकता के डर से चुपचाप सहती हुई दिखाई देती है। नैतिकता के

मानदंड पुरुष और महिला के लिए एक समान होने चाहिए। एकांगी और पुरुष व्यवस्था के अनुरूप विद्यमान नैतिकता नारी जीवन के लिए सबसे बड़ा पीड़ा का कारण है। नैतिकता के कटघरे में कैद नारी को अपना जीवन अपनी कामभावना अथवा सेक्स को दबाकर जीना अन्यायी है। इसलिए एकांगी और पुरुष व्यवस्था के अनुरूप विद्यमान नैतिक व्यवस्था को स्त्री– पुरुष के अनुरूप समान, समन्यायिक बनाना जरूरी हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नैतिकता के नए सवाल– स्त्रीत्व की नैतिकता– मैत्रेयीपुष्पा पृष्ठ 138 –139.
2. स्त्री मुक्ति साझा चूल्हा– अनामिका पृष्ठ –12.
3. अन्वेषी – मनिका मोहिनी – कोई सजा नहीं पृष्ठ– 74 .
4. अन्वेषि – मनिका मोहिनी– कोई सजा नहीं – पृष्ठ 77.
5. अन्वेषी मनिका मोहिनी– बीमार पुष्ट 118.

❖◆❖

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

ISSUE No- (CCCXXII) 322

२१व्या शतकातील कोरोना महामारीच्या काळात सद्यस्थितीत निर्माण झालेल्या समकालीन सामाजिक समस्या

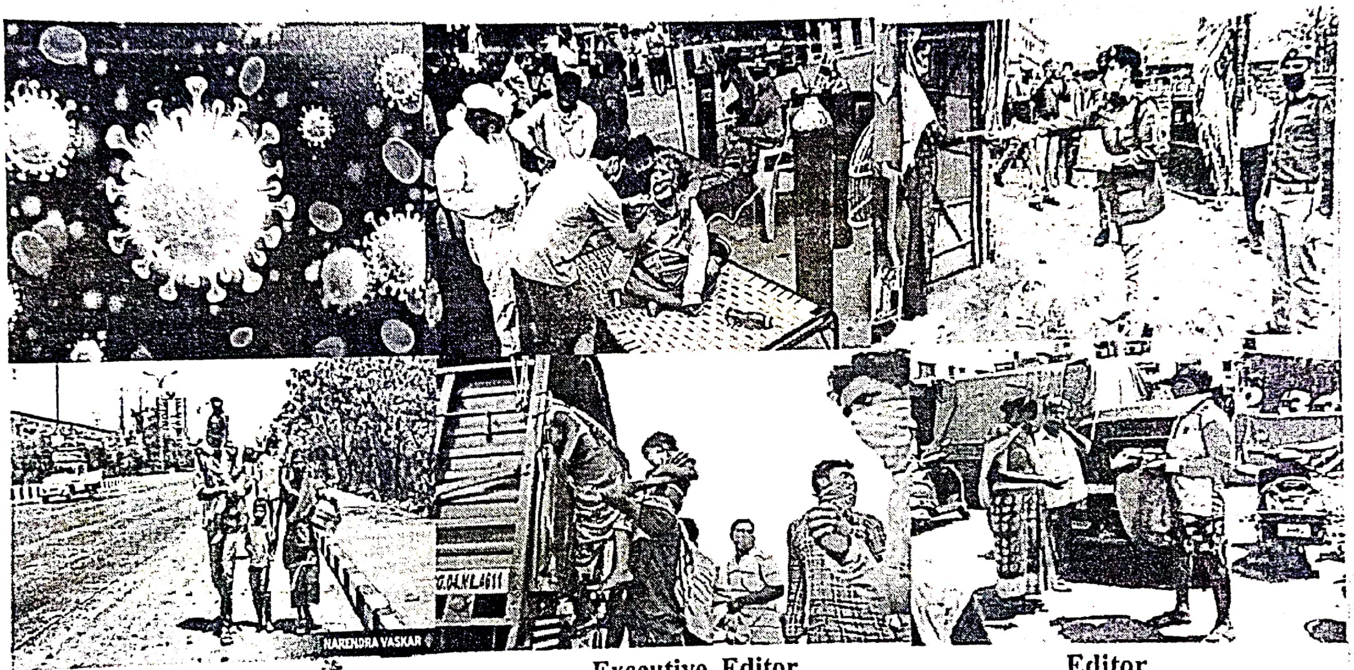

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. D. B. Tanduljekar
I/C Principal
Yeshwantrao Chavan College,
Ambejogai, Dist.- Beed

Editor
Dr. Sanjay Surewad
Head, Department of Sociology,
Yeshwantrao Chavan College,
Ambejogai, Dist.- Beed

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Scanned with Oken Scanne

Scanned with OKEN Scanner

19	काया-स्पर्श : मनोविश्लेषण का साहित्यिक दस्तावेज	डॉ. रमेश माणिकराव शिंदे	67
20	पुरुष केंद्रित अर्थनीति और भारतीय नारी	डॉ. अरविंद अंबादास घोडके	70
21	उपन्यास में चित्रित प्रेम में असफल पुरुष पात्र (विशेष संदर्भ : आना इस देश- कृष्णा अग्निहोत्री)	शेख अली जाफर	72
22	कोरोणा महामारी आणि भारतीय अर्थव्यवस्था	प्रो. डॉ. डी. बी. तांदुळजेकर	74
23	साहित्यातील वृद्धांची समस्या(उपरे : एकांकिका)	डॉ. विठ्ठल केदारी	76
24	करोना काळाचा शिक्षणावर झालेला परिणाम	डी.एन.रिठे	78
25	समाजिक स्तरीकरण	डॉ. साधना लांजेवार	81
26	भारतीय समाजातील वृद्धांच्या समस्या : कारणे व उपाय	प्रा. डॉ. टी. आर. फिसफिसे	84
27	आंध जमातीच्या शैक्षणिक समस्या	प्रा.डॉ. गितांजली सदाशिवराव मोटे	90
28	संगीत क्षेत्रातील समस्या व आव्हाने	प्रा. डॉ. शिवदास विठ्ठलराव शिंदे	95
29	कोरोना काळातील वाढते महिला अत्याचार : एक आढावा	डॉ.विलास चव्हाण	98
30	भारताची लोकसंख्या वाढ : एक सामाजिक समस्या	सुप्रिया गणपतराव गडलवाड	101
31	आरोग्य	प्रा. ततापुरे जे.जी.	104
32	आत्महत्येची समस्या	श्रीमती. धुमाळ सीमा काशिनाथराव	107
33	स्त्रीभ्रूण हत्या : एक सामाजिक समस्या	प्रा.संजय सुरेवाड	109
34	सामाजिक स्तरीकरण	कुमिदिनी जोशी रामचंद्र याडाराम	112
35	हुंडा बळी एक सामाजिक समस्या	प्रा. डॉ. अनंत दादाराव मरकाळे	116
36	संत रविदासांच्या काळातील धार्मिक स्थिती	डॉ. मिलिंद बळीरामजी भगत /नितीन आनंदराव अंडेलकर	119
37	भारतीय संविधानातील मूलभूत हक्क आणि सामाजिक न्याय	श्रीकांत दिनकर तांदळे /प्रो. डॉ.डी.आर.तांदळे	124
38	केंद्रीय कार्यशाळा ताडाळी येथील कर्मचा—यांच्या कार्यसमाधानकारकतेचे अध्ययन	प्रिया कृपाशंकर निमजे /प्रा. डॉ. फुलचंद वासुदेव निरंजने	128
39	ग्रामीण महाराष्ट्रातील पारंपरिक समाजसंरचनेत दलित व सवर्ण यांच्या संबंधातील सातत्य आणि बदल : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ.नागोराव आर.कांबळे	132
40	कोविड-१९, भारतीय पर्यटना समोरील आव्हाने : एक राजकीय अध्ययन.	स्वामी विरभद्र गुरप्पा	136
41	स्त्रीभ्रुणहत्या : एक सामाजिक समस्या	प्रल्हाद दत्तराव भोपे	141

Scanned with OKEN Scanner

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO322 (CC CCCXXII)
ISSN : 2278-9308
October, 2021

पुरुष केंद्रित अर्थनीति और भारतीय नारी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
सहायक प्राध्यापक-हिंदी विभाग ,यशवंतराव चव्हाण कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, अंबाजोगाई ,ghodkearvind123@gmail.com

"पैसों की पहचान यहां , इंसान की कीमत कोई नहीं । मोहम्मदरफी द्वारा गाया गया यह गीत 'पहचान' फिल्म का हैं जो मनुष्य स्वभाव का सजीव चित्रण करता है । पैसा भगवान नहीं हैं, लेकिन भगवान से कम नहीं है। पैसे की अहमियत सभी को पता है। इसलिए सदियों से पुरुष प्रधान मानसिकता ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अर्थ नीति पर पुरुष व्यवस्था का वर्चस्व स्थापित करने की सफल कोशिश की है । जो आज तक विद्यमान दिखाई देती है। जिसके पास पैसा है वह व्यक्ति राज करता है किंतु जिसके पास पैसा नहीं है वह स्वार्थी अर्थनीति वाले समाज में लाचार, बेवस और कमजोर है। भारतीय समाज व्यवस्था में पुरुष प्रधान मानसिकता ने आज के आधुनिक युग में भी स्त्री - पुरुष समानता के अनुरूप सत्ता और संपत्ति का विभाजन ना कर नारी के ऊपर अन्याय किया हैं। व्यवस्था के अनुरूप पिता के चल और अचल संपत्ति का उत्तराधिकारी उसका पुत्र ही होता है। परिवार में पिता के बाद पुत्र के हाथ में आर्थिक सत्ता की चावी आ जाने के कारण उस परिवार की महिला पिता - पुत्र पर आश्रित रहती है। भारतीय समाज व्यवस्था में भारतीय महिलाओं पर हो चुके और हो रहे अत्याचार की मुख्य वजह नारी का अर्थ की दृष्टि से परआश्रित होना ही है । मां बाप की संपत्ति का बट्वारा बेटे की तरह बेटियों में भी किया जाए तो आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नारी अपने अधिकारों की रक्षा के लिए अपेक्षित कदम उठा सकती है। अपने ऊपर होने वाले अन्याय का हिम्मत से प्रतिकार कर सकती है। किंतु भारतीय समाज व्यवस्था में आज भी महिला को पुरुषों के साथ वरावरी से अर्थव्यवस्था में हिस्सेदारी नहीं मिलती है।

आर्थिक दृष्टि से परावलंबी स्त्री सबसे अधिक मात्रा में शोषण का शिकार होती है। 'भागीदार' कहानी में मनिका जी ने आर्थिक दृष्टि से परआश्रित स्त्री जीवन पर यथार्थ प्रकाश डाला है । 'भागीदार' कहानी की दो महिला पात्रों को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर और पर आश्रित दो रूपों में दिखाकर स्त्री शोषण का मुख्य कारण आर्थिक व्यवस्था कैसी है। इसका सजीव चित्रण किया है। 'भागीदार' कहानी में मनिका जी आर्थिक परआश्रित अनु के वारे में लिखती है कि "लेकिन अनूपरआश्रित थी। विवाह होने के पश्चात भी वह पति की अपेक्षा वह एक प्रकार से पिता पर ही आश्रित थी। ससुराल में उसके सुख का अनुपात पिता के आश्रय पर निर्भर करता था। परंतु ना पिता के पैसों की ताकत थी और ना भाइयों के पास बहनों के लिए अपेक्षित ममता और उत्तरदायित्व की भावना इसलिए अनु के लिए सुख नहीं खरीदा जा सका।" 1भारतीय नारी जीवन की आर्थिक पराधीनता सवसे बड़ी विडंबना है। नारी शोषण के सवसे बड़े हथियार के रूप में पुरुष प्रधान व्यवस्था ने ही पुरुष केंद्रित आर्थीक व्यवस्था का प्रयोग किया है। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नारी अपने अधिकारों के लिए लड़ सकती है इसलिए उससे आर्थिक दृष्टि से पराधीन वनाए रखने में ही पुरुष व्यवस्था पोषक बनती है । यह वात ध्यान में रखकर सदियों से नारी को आर्थिक दृष्टि से पराधीन वनाए रखने की कोशिश हो रही है । पैसों के वल पर आज के आधुनिक युग में हर वह भौतिक सुविधा प्राप्त की जा सकती है जो मनुष्य को चाहिए। किंतु पैसे के अभाव में किसी भी मनुष्य का जीवन समस्या का भंडार वन जाता है । इस समस्या का समाधान ढूंढने के लिए स्त्री अथवा पुरुष को शारीरिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक समस्या का शिकार होना पड़ता है।

'भागीदार' कहानी की नायिका अनु को आर्थिक पराधीनता के कारण आनंद और सुख नहीं मिल पाया। जो उसकी बड़ी बहन ने आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण प्राप्त किया था । अनु अपनी आर्थिक पराधीनता के कारण पति और ससुराल वालों के हाथों पाशवी अत्याचार सहने के लिए मजबूर होती है। भारतीय समाज में अनु जैशी हजारों महिलाएं आर्थिक आत्मनिर्भरता के अभाव में शोषित और पीडित जीवन जीने के लिए मजबूर है। कार्लमार्क्स के मित्र

Scanned with OKEN Scanner

एंजेल्स का कहना है कि "सामाजिक उत्पादन की परिधि से बाहर कर दीजिए कर दिए जाने के बाद बीवी घर की पहली नौकरानी बनी।" 2 पर, परिवार , समाज और संस्कृतिक क्षेत्र में आज भी पुरुष द्वारा भारतीय नारी सामाजिक, शैक्षणिक, मानसिक और भावनिक अत्याचार का सामना करती आयी है।

अर्थ के सहारे पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में पुरुष वर्ग ने नारी का शारीरिक और भावनीक शोषण कदम कदम पर किया है। आज गांव से लेकर नगरों तक स्त्री वेश्या व्यवसाय दिखाई देता है। पैसों के लिए अपने शरीर को बेचने के लिए मजबूर महिलाएं हर समाज में दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री जीवन को लैंगिकता के सहारे नैतिकता के बंधनों में बांधकर उसका जीवन पुरुष वर्ग के इशारों पर चलने के लिए मजबूर किया है। बड़ी मात्रा में पैसों के लिए शरीर बेचने वाली स्त्री वेश्याव्यवसाय होने के बावजूद स्त्री का घर , गली, कार्यालय और समाज में पैसों के सहारे शारीरिक शोषण किया जाता है। 'मुखोटे' कहानी में मनिका जी ने पैसों के बल पर स्त्री का शारीरिक शोषण करने वाले डुप्लीकेट लोगों के मुखोटे को बेनकाब कर दिया है। पैसों के बल पर करोड़पति लोग सामान्य महिलाओं का धोखे से किस तरह शारीरिक शोषण किया करते हैं इसका सजीव चित्रण किया हैं। 'मुखोटे' कहानी का सेठ चंदा देने के बहाने महिलाओं को अपने फार्म हाउस पर बुलाकर, पैसों का लालच दिखाकर उनका शारीरिक शोषण करता है। कहानी की नायिका निर्मला और सेठ जी के वार्तालाप में भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पैसों का बल दिखाकर महिलाओं का किस तरह शारीरिक शोषण किया जाता है। इसका सजीव चित्रण हुआ है। "पगली इतना भी नहीं समझती। एक करोड़पति से कोई यूं हाथ छुड़ाता है ? तू तो बड़ी भोली है ? तू तो कुछ समझती ही नहीं। निर्मला का मन भीतर ही भीतर विद्रोह कर उठा। भेड़ की खाल में भेड़िया। इस दानव वीरता के मुखोटे की पीछे छुपा हुआ वासना का घिनौना चेहरा। इस जैसे पाखंडी को तो बीच चौराहे पर अनावृत करना चाहिए।" 3 प्रस्तुत कहानी में भारतीय पुरुष पुरुष प्रधान आर्थिक व्यवस्था के हाथों स्त्री जीवन का अपने हित के लिए किस तरह कदम कदम पर छल किया जाता है इसका सजीव चित्र मुखोटे इस कहानी के माध्यम से मनिका जी ने किया है।

जब मनुष्य अपनी पूछ को त्याग कर इंसान का जीवन आरंभ करता है उस समय मातृसत्ताक व्यवस्था का प्रभाव था। किंतु जब पुरुषों के हाथों में आर्थिक सत्ता का केंद्रीकरण होता गया तब से ही मातृसत्ताक कुटुंब व्यवस्था का ऱ्हास होकर पितृसत्ताक व्यवस्था का आरंभ हुआ। 'पाकिस्तानी स्त्री यातना और संघर्ष' इस किताब में जाहिदाहिनाजी ने 'मां से बाप की हुकुमं रानी तक' अध्याय में किस तरह पुरुष व्यवस्था ने पितृसत्ता व्यवस्था प्रस्थापित की है। इसका चित्रण किया है। वह कहती है कि "मर्द अपनी ताकत दौलत और अधिकार के सहारे आगे बढ़ गया और औरत को पीछे की तरफ धकेल दिया। " 4 अर्थ केंद्रीत स्वार्थी समाज व्यवस्था में पैसा ही सब कुछ बन चुका है। आज पैसों के सामने सभी अच्छाइयां गुलाम बन चुकी है। पैसा सबसे बड़ा कैसा बना हुआ है यह बात 'सबसे बड़ा रुपैया' इस फिल्म के गीत में बताई गई है।

'ना बीवी ना ,बच्चा ना बाप बड़ा ना भैया
द होलथिंगइजदेट सबसे बड़ा रुपैया'

इस गीत के अनुसार आज के इस संसार में पैसा सबसे बड़ा बना हुआ है। और यह सारा पैसा पुरुष प्रधान व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पुरुष स्त्री को आर्थिक दृष्टि से परआश्रित रखने की कोशिश करता हुआ दिखाई देता है। पुरुष केंद्रित अर्थव्यवस्था के कारण भारतीय समाज में स्त्री को चुपचाप अन्याय सहने के लिए मजबूर होना पड़ता है। बेटी को बेटे के साथ संपत्ति का आधा हिस्सेदार बना दिया जाता तो ना ही उसे दहेज मांगा जाता और ना ही उसे शोषण का शिकार होना पड़ता। मेरी दृष्टि से नारी पराधीनता और शोषण की सबसे बड़ी वजह पुरुष केंद्रित अर्थव्यवस्था रही है।

- संदर्भ

1. अपना अपना सच-माणिका मोहिनी-पंचशील प्रकाशन-प्रथम संस्करण-1982 पेज. 59
2. पाकिस्तान की स्थिति- यातना और संघर्ष- जाहिदाहिना -अनुवाद शकीलसिद्दीकी-वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2010 पुष्ट 19
3. जग का मुजरा- मनिका मोहिनी -वैचारिक संकलन प्रकाशन -प्रथम संस्करण 1995 पेज 83

Scanned with OKEN Scanner

ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-15

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

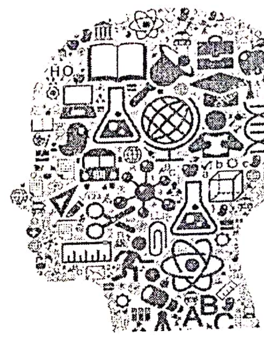

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue-15 May-Jun -2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

May-Jun -2022 Volume-2 Issue-15

On

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor
Prof. Dr. Deepak M. Bharti
Principal
Arts, Commerce and Science College, Kille Dharur, Dist. Beed [M.S.]

Co- Editor
Mr. G. D. Bavaskar

Published by- P. R. Talekar, Secretary, Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue.15 May-June-2022

CONTENTS

Sr No	Paper Title	Page No.
1	Domination Of Gender For Pleasurable Career **Dr Tejas R Sharma**	1-4
2	Depiction Of Indian Culture & Society In The Graphic Novels **Dr. Arya D. W, Miss Kendre S. A**	5-8
3	Chimamanda Ngozi Adichie's Idea Of Feminism & Her Depiction Of Women In Her Literary Works **Dr. Arya D. W, Miss Kendre S. A**	9-11
4	Gender Asymmetry In India's Foreign Policy Decision Making **Vishakha Jha**	12-16
5	The Sri Lankan Identity Related With The Concept Of God Skandha Kumara **Dr. Amila Damayanthi**	17-21
6	Women Empowerment: A Study Of Jaishree Misra's Ancient Promises **Mr. Gajanan Telang, Dr.Vaishali Aher**	22-24
7	Gender And Education In India **Mr. Sushilkumar Sadashiv Raut**	25-26
8	Lgbt And Human Rights **Nita Changdeo Deshbhratar, Kanchan Babarao Jambhulakr**	27-32
9	Aspects Of Gender Negotiation And Feminism In The Works Of Jeanette Winterson **Pouria Mallahi**	33-34
10	Gender Wise Impact Of Pandemic On Informal Sector Study Among Women Domestic Workers In Pune **Dr. Narshing Giri, Mrs. Umrao Sayyad , Mr. Rushikesh Hiwale**	35-38
11	Violation of Dalits Human Rights and Gender Equality in India and its Remedies **Dr Chitade Nandkishor Pandurang**	39-42
12	Recent Trends Of Poverty In India **Dr. Nasiket Govindrao Suryavanshi**	43-48
13	Agricultural Labourers Problems And Remedies In India **Dr. Maneesh. B**	49-51
14	Gender And Health **Gadekar pandurang Chandrakant**	52-53
15	लिंगभाव विषमता आणि बंजारा समाजातील स्त्रिया **प्रा. ईश्वर लक्ष्मण राठोड, प्राचार्य डॉ. शिवाजी गायकवाड**	54-56
16	लिंगभाव आणि भारतीय महिलांची आर्थिक स्थिती **गोविंद द. बावस्कर**	57-59
17	कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका **प्रा .डॉ. दीपक एम .भारती ,गोविंद रामराव काळे**	60-62
18	स्त्री-पुरुष वेतन अंतर **प्रोफेसर दीपक एम. भारती, साखरे ज्योती जालिंदर**	63-64
19	लिंगभाव आणि समाजीकरण **डॉ. गणेश तुकाराम मोकासरे**	65-67
20	लैंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य **Dr. Usha Kiran Tiwari**	68-70
21	नैतिकता के दुष्टचक्र में बेहाल नारी **डॉ. अरविंद अंबादास घोडके**	71-73
22	जागतिक लिंग असमानता **प्रोफेसर दिपक .एम . भारती, मैंद आनंद श्रीकृष्ण**	74-76
23	परिवार मे लिंग और लैंगिक असमानता विषयक दृष्टिकोन **डॉ. गजानन खंडू सोनुने , डॉ. जयसिंग पोपटसिंग सिंगल**	77-80

Scanned with OKEN Scanner

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue.15 May-June-2022

नैतिकता के दुष्टचक्र में बेहाल नारी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय अंबाजोगाई, सहाय्यक प्राध्यापक-हिंदी विभाग
Email- ghodkearvind123@gmail.com

भूमिका:-

विश्व में आज भाषा और संस्कृति के बल पर मनुष्य सभी जीवो पर अपना वर्चस्व स्थापित कर चुका है। अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त ज्ञान का संग्रह कर अपने अनुभव को उसके साथ जोड़कर आने वाली पीढ़ी के लिए विचार, कला, स्थापत्य, कुशलता, चालाकी, परंपरा आदि का संवर्धन और संक्रमण करता है। मनुष्य द्वारा अपने जीवन में अपनाए गए इसी जीवन व्यवस्था को संस्कृति माना जा सकता है। आहार, निद्रा और मैथुन को सामाजिक नियमों में बांधकर उसका नियमन किया जाता है।मनुष्य के आहार, निद्रा और मैथुन से ऊपर उठकर समाज कल्याण हेतु बनाए गए नियम संस्कृति कहलाए जाते हैं।सामाजिक नियम समाज मान्य सामाजिक संस्कृति कहलाए जाती है। सामाजिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नैतिक- अनैतिक, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, आबरू-बेआबरू आदि प्रकार से व्यक्ति के व्यवहारों को परख कर उसे सही दिशा देने का कार्य किया जाता है। प्रतिष्ठित, नैतिक व्यक्ति समाज के लिए, सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। तथा अप्रतिष्ठित और अनैतिक और बेआबरू व्यक्ति समाज व्यवस्था के लिए घातक मानकर उसके ऊपर अनेक बंधन लादे जाते हैं। विश्व के लिए आज पथ मार्ग दर्शक बनी हुई भारतीय संस्कृति विश्व की दृष्टि में भले ही महान दिखाई देती हों, किंतु भारतीय नारी की दृष्टि में अन्यायी और एकांकी है। सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए बनाए गए नियम पुरुष वर्चस्वादी सामाजिक नियम तथा सामाजिक मान्यताए नारी विरोधी है। परंपरा से लेकर आज तक, आज के आधुनिक युग में भी भारतीय नारी को पुरुष-स्त्री द्वारा पुरुष प्रधान व्यवस्था में शोषण का अधिकारी बनाने के लिए मजबूर किया जाता है। स्त्री के प्रति एक अन्याय और पुरुष के प्रति अलग न्याय यह भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अन्यायी समाज व्यवस्था दिखाई देता है।

शब्द :- नैतिक- अनैतिक, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, आबरू-बेआबरू, संस्कृति, पुरुष वर्चस्वादी सामाजिक नियम, बैडमिंटन, मंगलसूत्र आदि।

उद्देश :-

कुँवारी धरती एकांकी में मोहन राकेश जी ने भारतीय समाज व्यवस्था के नारी विरोधी रूप का सजीव चित्रण किया है। भारतीय नारी को नैतिकता के कटघरे में खड़ा करते हुए पुरुष प्रधान मानसिकता उसका कैसे हर रूप में शोषण करती आई है इसका सजीव चित्रण मोहन राकेश जी ने रजनी के माध्यम से किया है। नैतिकता का लेबल लगाकर भारतीय नारी का शोषण हर समय धरना भारतीय समाज की धारणा बनी हुई है। मोहन राकेश द्वारा लिखित कुंवारी धरती इस एकांकी में भारतीय नारी का यथार्थ चित्रण किया गया है। एकांकी की नायिका रजनी आधुनिक युग की पढ़ी-लिखी सुशिक्षित युवती है। रजनी मॉडर्न होने के साथ साथ अपने मां-बाप के संस्कारों को भलीभांति पहचानते हुए अपना जीवन यापन करती है। बैडमिंटन के खेल में तेजतर्रार रजनी विजय के साथ बैडमिंटन खेला करती थी। इस खेल के दौरान दोनों की आपस में पहचान होती है, पहचान दोस्ती में बदल जाती है। यह दोस्ती जीवन के अंत तक निभाने के वादा विजय रजनी के साथ करता है। रजनी विजय को पती के रूप में देखकर उसे अपना लेती है। यहां विजय से धोखा खाती है। भारतीय समाज व्यवस्था में नारी को बंधन में बांध कर रखने की भरसक कोशिश सदियों से की है। फिर उसे आभूषण का लालच देकर हो उस पर जोर जबरदस्ती सामाजिक बंधन लादकर हो उसे नियंत्रण में रखने की कोशिश पुरुष मानसिकता करती आई है। वैवाहिक पुरुष पहचानने के लिए सामाजिक व्यवस्था ने ऐसा कोई प्रावधान नहीं बनाया है किंतु विवाहित महिला को पहचानने के लिए सामाजिक व्यवस्था ने अनेक प्रावधान बना कर रखे हैं। विवाहित महिला के लिए गले में मंगलसूत्र पहनना समाज की महत्वपूर्ण धारणा और सामाजिक मान्यता रही है। किंतु भारतीय समाज में विवाह के बाद पुरुष के लिए मंगलसूत्र जैसी कोई चीज बनाई है और न हीं पुरुष उसे पहनता और ना ही उसे पहनने के लिए समाज उस पर बंधन डालता है। मंगलसूत्र पहने के बाद महिला विवाहित है यह पहचाना जा सकता है किंतु जिसके पास न कोई मंगलसूत्र हो अथवा विवाहित होने का कोई दूसरा निशान नहो उस पुरुष को विवाहित अथवा अविवाहित है ऐसा नहीं पहचाना जाता। कुंवारी धरती एकांकी का विजय रजनी को विवाहित होकर भी अविवाहित हूं ऐसा बताता है और रजनी का शोषण करता है। पढ़ी लिखी आधुनिक विचारों वाली रजनी विजय के इन शब्द-जाल में फंस कर विजय के शब्दों में

Scanned with OKEN Scanner

उसके ऊपर बंधन डाल सके। नारी दोषी हो अथवा न हो किंतु निसर्ग ने उसमें माता बनाने का जो वरदान दिया है वही वरदान उसके लिए आज शाप बना हुआ दिखाई देता है। विजय जैसे हजारों पुरुष आज भी महिलाओं पर अत्याचार करते हैं। नैतिकता और सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से आज भी हजारों महिलाएं विजय जैसी अत्याचारी पुरुषों का अत्याचार चुपचाप सहन करने के लिए मजबूर दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था विजय जैसे पुरुषों को अन्याय करने के लिए खुला छोड़ देती है । तथा रजनी जैसे अनेक भारतीय नारी को ही नैतिकता के कटघरे में खड़ा कर उसका शोषण करती हुई दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में आज भी नारी के प्रति एक न्याय और पुरुष के प्रति एक न्याए दिखाई देता है। स्त्री और पुरुष में समानता अगर दिखानी है तो जिस तरह शादी के बाद स्त्री के गले में मंगलसूत्र परिधान करने का प्रावधान भारतीय समाज व्यवस्था में बनाया गया है। वैसा ही प्रावधान पुरुषों के लिए भी बनाना जरूरी है। सदियों से लेकर आज तक पुरुष अपने इसी आजाद रूप का फायदा उठाकर स्त्री का शोषण करता आया है। कंवारी धरती एकांकी में विजय शादीशुदा होता है। किंतु उसके पास शादीशुदा होने के बाद भी शादीशुदा है या नही यह पहचानने का कोई प्रावधान इस समाज व्यवस्था ने नहीं बनाया। इसलिए वह रजनी को धोखा देने में कामयाव हो जाता है। इसलिए मुझे लगता है कि आधुनिकता का ढिंढोरा पीटने वाले इस भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जिस तरह स्त्री के लिए मंगलसूत्र का प्रावधान किया गया है। वैसे ही पुरुषों के लिए भी ऐसा ही प्रावधान करना जरूरी है। नैतिकता की डर से रजनी की मां बाप रजनी को बच्चा गिराने के लिए मजबूर कर देते हैं। ऐसी एकांगी नैतिकता को दूर करते हुए स्त्री पुरुष समानतावादी उदार सामाजिक व्यवस्था बनाने की और उसे अपनाने की जरूरत आज के समाज के लिए जरूरी है।

संदर्भ

1. कंवारी धरती - मोहन राकेश - एकांकी नए पुराने- पृष्ठ 138
2. कंवारी धरती - डॉ मोहन राकेश- एकांकी नए पुराने पृष्ठ 174
3. कंवारी धरती - मोहन राकेश - एकांकी नए पुराने पृष्ठ 180

Scanned with OKEN Scanner

आकर फस जाती है। रजनी का शारीरिक शोषण करने के बाद विजय उसे धोखा देता है। विजय पहले से शादीशुदा था किंतु रजनी को अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए उसे वह अविवाहित बताता है। रजनी विजय के धोखे में फंसकर पेट से ठहरती है। रजनी पेट में बढ़ने वाले इस बच्चे को जन्म देना चाहती है किंतु रजनी के मां-बाप समाज के डर से सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से इस बच्चे को गिरा देना चाहते हैं। इस बच्चे को रजनी के पेट से गिरा कर रजनी की दूसरी शादी करवाना चाहते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा के डर में रजनी की मां रजनी को भला-बुरा कहती है तथा पिता उसे पेट में बढ़ने वाले बच्चों को गिराने के लिए मजबूर करते हैं। रजनी के पिता रामचरण रजनी से कहते हैं कि "तु साहस रख बेटे, सब कुछ ठीक हो जाएगा। तेरी चिंताए अपने ऊपर लेने के लिए मैं जो हूं।... मैं कल ही जाकर डॉ खोसला से बात करूंगा।.... डॉ खोसला तो अपने घर के से ही आदमी है।.... उनसे आगे किसी के कानों तक बात नहीं जाएगी।.... मैं उनके पांव पकड़ लूंगा कि जैसे भी हो मेरी बच्ची को इस मुसीबत से छुटकारा दिलाओ। वह जरूर कोई ना कोई उपाय करके इस सब का निपटारा....।[1] सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से रजनी के पिता रामचरण बेटी रजनी के विचारों को ठुकराकर रजनी का जबरदस्ती अबॉर्शन करवाना चाहते हैं। रजनी पेट में बढ़ने वाले बच्चों को जन्म देना चाहती थी किंतु भारतीय समाज में कंवारी माता के लिए कोई स्थान नहीं होता है। महाभारत की स्त्री पात्र कुंती से लेकर आज तक कोई भी कुमारी माता भारतीय समाज व्यवस्था में मान - सम्मान का स्थान नहीं पा सकी है। रजनी जैसे हजारों महिलाएं नारी विरोधी नैतिकता के दुष्टचक्र में अन्यायी भारतीय समाज व्यवस्था के शोषण का शिकार बनी हुई दिखाई देती है । अपने मां-बाप की सामाजिक प्रतिष्ठा तथा नैतिकता के डर से रजनी अपने पिता का गांव छोड़कर हरिद्वार चली आती है। जहां अपने पहचान का कोई नहीं है, वहां उसके प्रतिष्ठा को लेकर भी चर्चा नहीं होगी ऐसी धारणा रजनी की थी। किंतु भारतीय समाज व्यवस्था में कुंवारी माता को लेकर परिचित हो अथवा ना हो उसे सामाजिक शोषण का शिकार होना पड़ता है। समाज के डर से माता पिता की प्रतिष्ठा और नैतिकता के डर से काशी में आई हुई रजनी को भी दर-दर की ठोकरें खाकर भी सामाजिक शोषण का शिकार होना ही पड़ता है। विलोचन के घर में किराए पर रहने वाले रजनी को विलोचन की पत्नी राधिका अकेली रजनी और उसकी गर्भधारणा कर चुकी शारीरिक हालत को देखकर उसे समाज और राधिका भला-बुरा कहती है। राधिका को उसके आस पड़ोस वाले कुंवारी गर्भवती रजनी को अकेले देख कर भला बुरा कहने लगते हैं। राधिका कहती है कि,"कोई कहे कि विलोचन पंडा की सगी बहन है, और कहीं से पाप का पेट ले आई है। कोई कहे है कि विलोचन पंड्या ऐसा वैसा रोजगार करता है। अब हम रात दिन कथा कीर्तन में बैठने वाली किस-किस का मुंह पकड़े। किस किस को जवाब दे। दो सौ बात की एक बात तुमसे जहां बने तुम अपना प्रबंध कर लो। हमारे घर में अब तुम्हारा ठिकाना नहीं है। "[2] सामाजिक प्रतिष्ठा की डर से काशी में जिस घर में ठहरी हुई थी रजनी उस घर का पुरुष विलोचन अपने बीवी के बातों में आकर रजनी को घर से बाहर निकाल देता है। भारतीय महिला का प्रतिनिधित्व करने वाली रजनी की समस्या यहीं पर समाप्त नहीं होती है। रजनी राधिका, विलोचन और चंपा से विनती करती है कि उसे ऐसी हालत में घर से बाहर न निकालो। फिर भी सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से विलोचन और राधिका रजनी को घर से बाहर निकाल देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में आज हजारों ऐसी कंवारी माताएं हैं। जो खोकली सामाजिक प्रतिष्ठा का शिकार बनी हुई है। नैतिकता के दंभ में, दिखावे में ऐसी हजारों लड़कियों का, महिलाओं का पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में शारीरिक और मानसिक शोषण किया जाता है। विजय द्वारा किए गए अत्याचार को भूलकर रजनी पेट में पढ़ने वाले बच्चे को जन्म देना चाहती है। फिर भी समाज रजनी को ही दोषी मानता है । काशी में डर-डर की ठोकरें खाकर रजनी बच्चे को जन्म देती है। उसे लगता है कि मैंने बच्चों को जन्म दिया है समाज इसे अपना लेगा। किंतु रजनी की यह धारणा पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में बिल्कुल गलत है। लावारिस बच्चों को आज भी समाज एक बच्चा ना समझ कर उसे प्रतिष्ठा के रूप में सामाजिक कलंक लगता है। लावारिस बच्चे के लिए नारी को ही दोषी माना जाता है। रजनी के बच्चे को देखकर कीर्तन भजन करने वाली मंडली कहती है कि, "हरि हरि हरि न जाने कौन पातकिन गंगा तट पर अपना यह पातक फेक गई है। स्त्री- स्वर शिव शिव शिव! न जाने कैसी-कैसी हत्यारीन मांए होती है। अब संसार में पाप का भार इतना बढ़ रहा है कि अवश्य भगवान का ही अवतार होगा.....।"[3] कंवारी धरती एकांकी के अंत में भी डर-डर की ठोकरें खाकर नन्ही जान को जन्म देकर अपना कर्तव्य पूरा करने वाली रजनी को ही भारतीय पुरुष प्रधान समाज दोषी मानता है। तथा उसके इस बलिदान को अनदेखा कर सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप में उसे भला-बुरा कहता है।

निष्कर्ष:-

मानवता की दृष्टि से देखा जाए तो इस एकांकी का पुरुष पात्र विजय अप्रतिष्ठित और अनैतिक और अन्याय है। किंतु भारतीय समाज व्यवस्था में विजय जैसे पुरुषों के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं बनाया गया है, जो सामाजिक रूप में

Scanned with OKEN Scanner

नागफनी

A Peer Reviewed Refrred Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NagfaniRNI No.UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12 अंक 42,जुलाई -सितंबर 2022

संपादक
सपना सोनकर

सह संपादक
रूपनारायण सोनकर

Co Editor(English)
Prof.Rajesh karankal
Dr.Santosh Kumar Sonkar

कार्यकारी संपादक
डॉ.एन.पी.प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

सलाहकार मण्डल (Peer Review Comittee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्य प्रदेश)
डॉ.एन. एस. परमार, बड़ौदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सालुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर मोहनलाल 'आर्य' मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ.एन.पी.प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन–423/Aअंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य।

मुख पृष्ठ– उत्कर्ष प्रजापति, सिंगरौली - मध्यप्रदेश

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी -248179, उत्तराखण्ड, दूरभाष : 0135-6457809 मो.0941077718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी. आर. -62 ए ब्लॉक कॉलोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म. प्र. पिन-486886 मो. 09752998467

सहयोग राशि -150/-रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1500/-रुपये, पंच वार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-3000/-रुपये, पंच वार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए –3500/-रुपये, विदेशों में$50 आजीवन व्यक्ति-6000/-रुपये,संस्था-10,000/-रुपये।

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक–A/C –8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001 Branch-sidhi, NIRPAT PRASAD PRAJAPATI

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।**'नागफनी'**में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमेंसंपादक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।**'नागफनी'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gamil.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:–http:naagfani.com

Scanned with OKEN Scanner

7. राजेन्द्र यादव, 'हंस' और दलित वैचारिकी-डॉ.मृत्युंजय सिंह 95-96
8. "मेरा समाज" कहानी में अभिव्यक्त दलित स्त्री का जीवन यथार्थ-डॉ.ए.एस. सुमेष/कार्तिका टी. वी. 97-98
9. दलित चेतना का प्रतीक नाटक : 'कोर्टमार्शल'-डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील 98-99

आदिवासी विमर्श

1. आदिवासी साहित्य:मानव-सभ्यता के स्वाभाविक विकास का दस्तावेज-प्रदीप कुमार ठाकुर 100-102
2. भगवान गव्हाडे की कविता में आदिवासी जीवन -डॉ. वासंती. जे. 103-104
3. आदिवासी लोक नायक बिरसा मुंडा,-रुद्र चरण माझी 105-106
4. आदिवासी महिला रचनाकारों के लेखन में जल,जंगल,जमीन का संघर्ष-ज्ञानती 107-109
5. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी स्त्री: एक अवलोकन -दिम्पी दत्त 109-111
6. आदिवासी स्त्री जीवन संघर्ष को व्यक्त करता, तुम्बम रीबा जोमो 'लिली' का उपन्यास "उस रात की सुबह"- निम्मी सलोमी किन्डो 112-114
7. आदिवासियों की प्रकृति पूजा का पर्यावरण संरक्षण में योगदान-हिमांशु प्रभाकर 115-116

किन्नर विमर्श

1. सामाजिक प्रतिष्ठा मे बेचैन थर्ड जेंडर-डॉ.अरविंद अंबादास घोडके 117-118
2. भारत में किन्नरों का ऐतिहासिक उल्लेख तथा वर्तमान में प्राप्त अधिकार-मो.जहाँगीर 118-120
3. 'यमदीप' में किन्नर जीवन की व्यथा-डॉ. निशा मुरलीधरन 120-121

कविता

1. डॉ वंदना मिश्रा की तीन कविताएँ 121-122

कहानी

1. दीपा जी की चार लघु कहानियाँ 123

विविध विमर्श

1.सम्राट अशोक के कल्याणकारी बौद्ध धम्म का स्वरूप-डॉ.सुरजीत कुमार सिंह 124-125
2.सरदार पटेल के चिंतन एवं व्यवहार में गांधीवादी नीतियों के प्रभाव का विवेचनात्मक अध्ययन-डॉ.राजेश कुमार शर्मा 126-128
3.दक्षिण भारतीय भाषाएँ और अनुवाद- तमिल भाषा के विशेष संदर्भ में—डॉ.शशि प्रभा जैन 129-130
4.राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र के गाजियाबाद एवं नोयडा उपक्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के परिमाणात्मक प्रसार का विश्लेषणात्मक अध्ययन -अजय कुमार/प्रो.महेन्द्र प्रसाद पाण्डेय 130-132
1.माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण : एक अध्ययन एनईपी 2020 के संदर्भ में-डॉ.उमा सैनी 133-134
2.इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक का हिंदी सिनेमा : एक अध्ययन-डॉ. सुनील दशरथ चव्हाण 134-135
3. हिंदी भाषा का महत्व- शालिनी सी. 136-138
4.विद्यालयों में शिक्षकों के दृष्टिकोण और अनुभूति पर परिवर्तनकारी नेतृत्व का प्रभाव: एक साहित्य समीक्षा-दीपक 138-140
5.सांस्कृतिक समायोजन एवं सोशल मीडिया की भूमिका-डॉ.दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव 141-142
6.'हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत-चीन सामुद्रिक प्रतिद्वंदिता'-राजीव रौशनकुमार 143-144
7.नशा और समाज में जागरुकता का अभाव-डॉ. रेशमा अंसारी 145-146
8.आधुनिक युग में मीडिया का बदलता स्वरूप- वर्तमान समय की मांग-डॉ. राहुल कुशवाहा 146-148
9.पूर्वी राजस्थान के नाथ संत श्री दुर्बलनाथ का चिन्तन-डॉ. शीतल प्रसाद महेन्द्रा 148-150
10.गुरु नानक वाणी का वैश्विक वितान-डॉ. अनीश कुमार 151-152
11.जनसंख्या वृद्धि : संसाधन या बोझ-अमित कुमार सिंह 153-154
12.भारतीय राष्ट्र दर्शन : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के संदर्भ में-गुंजेश गौतम 155-157
13.गांधी दर्शन में सामाजिक न्याय -राजकिशोर 157-159
14.आधुनिक युग में मानव का बदलता स्वरूप-ज्योति शर्मा 159-160
15.प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों का पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान तथा उसके प्रभाव के ज्ञान का अध्ययन-परिना बंसल/डॉ. मोहन लाल 'आर्य' 161-163
1.नागरिक पत्रकारिता: एक अध्ययन-पुलकित शर्माडॉ राजेश कुमार शुक्ला 164-165
2.मानवाधिकारों की क्रियान्विति में सतत विकास लक्ष्यों का महत्व एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-पुष्पेन्द्र सिंह 166-167

English Discourse

1.Poisnous Roots is a Mile Stone For Struggle of Dalits-Part-1and Part-2-Sunil Kumar 168-171
2.Role of Silk Industry of Assam in Employment Generation-Dr. Basanta Mangal Dutta 171-174
3.Metamorphosis in Margaret Atwood's Surfacing-Preeti 174-176
4.A Comparative Study: Portrayal of Women in Valluvan's 'Not Desiring Another's Wife' and Sivakami's The Grip of change.-Dr. S.Manikandan 177-178
5. An Analytical study of Principal's Academic Role and his Professional Development -Dr.Mohan Lal 'Arya' 179-181
6. Reinterpretation of Nature-Man-Spirit Complex with Special Reference to the Murma Parha Jatra-Nisha Kumari /Dr.Seema Mamta Minz 182-184
7. Gender, Choice of Stream and Social Interaction in Higher Education-Brajesh Kumar/Manoj Singh Yadav/ Taruna 185-187
8. The Influence of The Gothic in The Resoution of Charlotte Bront's Jane Eyre -Rimzim Saikia 188-189
9. Issues and Challenges of Higher Education in Indian Perspective-Dr. Rajkumari Gola 190-191

Scanned with OKEN Scanner

किन्नर विमर्श

सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बेचैन 'थर्ड जेंडर'

डॉ.अरविंद अंबादास घोडके
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई
सहाय्यक प्राध्यापक हिंदी विभाग
मो.8208918100

भूमिका:-"सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग" दिशा पिंकी शेख यह वाक्य भारतीय सामाजिक व्यवस्था और भारतीय मनुष्य का यथार्थ बोध करता है। मनुष्य समाज में रहता है, समाज मनुष्य से बनता है।प्राचीन काल से समाज सामाजिक स्थैर्य बनाये रखने के लिए के लिए सामाजिक मान्यताओं का निर्माण करता है। तथा मनुष्य सामाजिक मान्यताओं को अपनाकर अपने आप को समाज का हिस्सा बना लेता है। आहार, निद्रा और मैथुन को सामाजिक मान्यताओं में बांधकर इन ज़रूरतों का सामाजिक नियमन किया जाता है। किंतु भारतीय समाज सामाजिक नियमन एकांगी और पुरुष वर्चस्ववादी दिखाई देता है। सदीयो से लेकर आज तक भारतीय समाजव्यवस्था पर पुरुष प्रधान मानसिकता का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में पुरुष हित के अनुरूप सामाजिक मान्यताओं का निर्माण कर प्रतिष्ठा, नैतिकता जैसे बंधन में बांधकर स्त्री को बांधकर भारतीय नारी का सदियों से शोषण करता आया है। परंपरा, प्रतिष्ठा, नैतिकता आदि के बहाने सदियों से पुरुष मानसिकता भारतीय समाज व्यवस्था में अलग अलग तरीके से शोषण करती हुई दिखाई देता है। अपने कलेजे के तुकडे को सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से मां - बाप भी उसे अपने से दूर करने के लिए मजबूर दिखाई देते है। इस शोध आलेख में समाज के मुख्यधारा से दर हास्य पर रहने वाले किन्नर, थर्ड जेंडर की सामाजिक प्रतिष्ठा में बेचैन जनजीवन का चित्रण साहित्य के माध्यम से किया जाएगा।

शब्द:... तृतीय पंथी, खोजा, किन्नर, नपुंसक, थर्ड जेंडर ,कोजा, मादा , बाईक्या, गे, ट्रांसजेंडर , हिजड़ा, सामाजिक परंपरा, प्रतिष्ठा, नैतिकता , पुरुष वर्चस्ववादी, सामाजिक मान्यता, परंपरा, प्रतिष्ठा, नैतिकता,आत्मभान, शोषित, वंचित , अपमानित, आत्मसम्मान, दृष्टिकोन, चक्रव्यूह आदि।

उद्देश: आधुनिक भारतीय समाज मे आज भी तृतीयपंथी की क्या दिशा और दशा है ? इसका यथार्थ चित्रण करना इस शोध आलेख का उद्देश है। भारतीय समाज मे हशीए पर रहने वाले तृतीयपंथी लोगों का जीवन समाज के सामने रख कर उनके प्रति समाज का सकारात्मक दृष्टिकोन निर्माण करना मुख्य उद्देश है। सामाजिक व्यवस्था का शिकार बननेवाले तृतीयपंथी लोगों के प्रति सरकार और समाज जे आत्मभान निर्मान करना।

सदियों से लेकर आज तक मनुष्य और समाज एक दसरे के लिए बने हुए हैं। समाज के अभाव में मनुष्य और मनुष्य के अभाव में समाज की कल्पना भी नहीं हो सकती। किंतु भारतीय सामाजिक व्यवस्था में मनुष्य के लिए समाज है ? या समाज के लिए मनुष्य है? यह बड़ा विवाद का विषय है।क्योंकि मनुष्य के लिए बने हुए समाज में मनुष्य सामाजिक नियमों में ही जीवन जीने के लिए मजबूर दिखाई देता हैं। समाज और लोग क्या कहेंगे इस डर से मनुष्य अपने अपेक्षाओं का गला बार-बार घोटता हुआ दिखाई देता है। समाज से बहिष्कृत किसी जाने - अन जाने मनुष्य को अपनी मदद की अपेक्षा हो तो भी हम मानवता की दृष्टि से उसकी मदद करना चाहते हैं, हमारी मदद उस मनुष्य के लिए सही और जरूरी है किंतु समाज की दृष्टि से वह गलत है तो हम उसकी मदद करने से दर भागने लगते हैं। 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' में अनुवादक लिखती है कि, "एक बार भरी दोपहरी में मैं कहीं जा रही थी। अभी घर के नीचे ही थी कि सामने से पंजाबी ड्रेस पहने एक हिजड़ा आते हुए दिखाई दिया। रास्ते से वह और मैं क्रॉस हो ही रही थी कि उसने कहा, दीदी, जरा ही चैन लगाओगी... प्लीज!" उसकी कुर्ते की पीछे की चैन नीचे आ गई थी। मैंने वह लगा दी। उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'थैंक यु दीदी' और चला गया.... मैं मुडने ही वाली थी कि तभी मुझे एहसास हुआ कि आसपास के सारे दुकानदार मेरी तरफ देख रहे थे...कैसी है यह औरत... एक हिजड़े की ड्रेस की चैन लगाती है!"[1] उपर्युक्त कथन व्यक्ति के मन में चलने वाले सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्ष का सजीव चित्रण है। हमारे समाज में परिवार अपने बच्चों को अपने परिवार से अधिक समाज क्या कहेगा इस बात के डर से अनेक बंधनों में जीने के लिए मजबूर कर देते है।

सामान्य तौर पर देखा जाए तो पुरुष व स्त्री के लिए भी समाज सामाजिक व्यवस्था में जीने के लिए मजबूर कर देता है। किंतु जो न स्त्री है और ना ही वह पुरुष है ऐसे व्यक्ति का जीवन भारतीय समाज में कितना भयानक होगा। परिवार में हिजड़े का जन्म होना सामाजिक व्यवस्था के लिए अप्रतिष्ठित और गलत समझा जाता है। इसलिए समाज के डर से किन्नर को अथवा थर्ड जेंडर को परिवार से दूर सामजिक प्रतिष्ठा की मजबूरी में परिवार वालों को करना पड़ता है। समाज तृतीय पंथी हिजडों को खोजा, किन्नर, नपुंसक, थर्ड जेंडर,कोजा,मादा , बाईक्या, गे, ट्रांसजेंडर आदि नामों से पहचानता है और उनका उपहास करता है। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए व्यक्ति अपने कलेजे के टुकडे को अपने से दर करने के लिए मजबूर होता है। इसी सामाजिक प्रतिष्ठा और नैतिकता में सदियों से तृतीयपंथी जीव का जीवन बेचैन और पीड़ित रहा है। 'यमदीप' उपन्यास में नंदरानी के जन्म पर पिता मेजर समाज के डर से बड़ा दुखी हो जाता है जब उसे पता लगता है कि नंदरानी तृतीय लिंगी है तब वह उदास और दुखी होते हैं। "उसके जन्म पर मेजर साहब फूट-फूटकर रो पड़ते हैं। मेजर साहब!फौज के एक उच्च अधिकारी! देश को दुश्मन से बचाने वाले वीर-जांबाज! एक मेजर के साहस और शौर्य पर तो संदेह हो ही नहीं सकता। बहादुर फौजी! .... और फूट-फूट कर रो रहे हैं वे!क्यों भला? दुखी है वह अपने दुर्भाग्य पर। जानते हैं इस संतान के कारण उन्हें कदम-कदम पर समाज के सामने लज्जित होना पड़ेगा।"[2] नंदरानी के हिजड़ा रूप के कारण मेजर साहब की समाज में प्रतिष्ठा कम हो जाएगी। लोग उन्हें पग-पग पर लज्जित करेंगे यही सोचकर मेजर साहब दुखी होते हैं और नंदरानी को नाजबीवी बनने के लिए मजबूर कर देते हैं। भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक डर के कारण ही अनेक थर्ड जेंडर के नसीब में समस्या का रूप उग्र से अति उग्र रूप दिखाई देता है। मां के गर्भ से जन्म लेने वाला यह जीव आम बच्चों की तरह ही होता है, किंतु उसकी शारीरिक कमियों के कारण उसकी सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, शारीरिक अवहेलना की जाती है। उसे मनुष्य के रूप में देखा भी नहीं जाता, ना उसका सही ढंग से पालन पोषण किया जाता है। और ना ही उसे समाज में मान सम्मान दिया जाता है। "मानवाधिकार ! 'तीसरे लिंग' की सबसे बड़ी विडंबना की यह है कि बृहतर समाज उसे मानव ही नहीं समझता, सो उसके कैसे मानवाधिकार ! कदम-कदम पर यह समाज उसके अस्तित्व को रौंदता है, घायल करता है। नाजबीवी और उसके साथियों के साथ समाज के सभी वर्गों का व्यवहार लगभग एक-सा है। उपहास के पात्र है वो। जरा-सा किसी से कुछ कह दें वे तो हिंसक व्यवहार किया जाता है उनके साथ।"[3] बेजुबान गूंगे प्राणियों पर मानव अधिकार की बड़ी-बड़ी बातें करने वाला यही भारतीय समाज तृतीयपंथी मनुष्य के बारे में उदासीन दिखाई देता है। हिजड़ा अथवा किन्नर भी एक मनुष्य है। उसका भी अपना आत्मसम्मान होगा। उसके भी जीवन जीने के तौर तरीके अपनी आदतें होंगी। संविधान के अनुरूप उसे भी स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने का अधिकार प्राप्त होता है। यह बातें इस समाज व्यवस्था के ध्यान में ही नहीं है। तिरस्कार और भय के साथ जीवन जीने वाला किन्नरों जीव सामाजिक प्रतिष्ठा के चक्रव्यूह में फसा हुआ दिखाई देता है।

परंपरा से पुरुष वर्चस्व के लिये पुरुषप्रधान मानसिकता अन्यायी भारतीय समाज व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश सदीयो से करती आयी है और इसमें वो सफल भी हुए है। दोगली जीवनी जीने वाले पुरुष व्यवस्था को जीवित रखने वाले लोगों की मात्रा भारतीय समाज में अधिक दिखाई देती है। तृतीयपंथी, बायक्या, छक्का, थर्ड जेंडर, गे आदि नामों से परिचित थर्ड जेंडर सामान्य सामाजिक व्यवस्था में तिरस्कृत दिखाई देता है। किंतु इसी थर्ड जेंडर का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए यही समाज जगह जगह पर करता हुआ दिखाई देता है। शुभ कार्य में इनके द्वारा मिला हुआ आशीर्वाद लाभदाई होता है इसलिए उन्हें यही समाज बच्चे के जन्म के अवसर पर हो अथवा शादी

समारोह में निमंत्रित भी करता है। दिन के उजालों में किन्नर समाज से भागता हुआ यही मनुष्य रात के समय में अपने शरीर की भूख को मिटाने के लिए इसी किन्नर का सहारा लेता हुआ भी दिखाई देता है। "गुपचुप तरीके से इनके साथ यौन- संबंध तो यह समाज बना सकता है मगर खुले में हर कोई इनकी छाया से बचना भी चाहता है। इनसे बात करना तो दूर, इनके पास खड़ा होना भी अपमानित होना समझता है।बस में सफर कर रही नाजबीबी के साथ वाली सीट पर कोई बैठना नहीं चाहता। खड़ी हुई सवारियों में से एक पुरुष सवारी को वह बैठने के लिए कहती है तो शेष सभी सवारियां उस पुरुष को उपहास भरी नजरों से देखती है। वह पुरुष भी नाजबीबी के इस प्रस्ताव पर अचकचा जाता है।"[4] समाज की सामाजिक व्यवस्था बलवान लोगों के अनुरूप बदल दी जाती है। प्रतिष्ठित, धनवान लोगों के लिए यही सामाजिक व्यवस्था लचीली होती है किंतु अप्रतिष्ठित और निर्धन लोगों के लिए यही सामाजिक व्यवस्था का कठोर, ताठर रूप धारण करती है। सबसे अधिक मात्रा में इसी समाजव्यवस्था का शिकार होने वाला निर्धन और मध्यम वर्गीय समाज अन्यायी समाजव्यवस्था को बनाए रखने के लिए सबसे अधिक मात्रा में कार्य करने में अग्रसर दिखाई देता है। किन्नर समाज में भी सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए किन्नर समुदाय के अपने नियम बनाए हुए दिखाई देते हैं। उन नियमों का पालन न करने वाला व्यक्ति किन्नर समुदाय से बाहर कर दिया जाता है। किन्नर समुदाय की बात न सुनने वाला किन्नर अप्रतिष्ठित समझा जाता है। अथवा उसे आर्थिक और शारीरिक दृष्टि से दंड भी किया जाता है। 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' आत्मकथन में लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी जी अपने परिवार के मन में सामाजिक डर कैसा घर कर बैठा हुआ था यह बंताने की कोशिश करती है। जब पहली बार हिजड़ा बनकर अपने घर में आती है तब उसे देखकर घरवालों के मन में जो डर दिखाई देता है उस बारे में बारे में वह कहती है कि "घर में घुसते ही मां ने चिल्लाना शुरू किया। पापा भी गुस्सा थे वह स्वाभाविक ही था। उनकी पहली प्रतिक्रिया थी, अपनी चौदह पीढ़ियों में ऐसा किसी ने नहीं किया होगा। हमारा खानदान ब्राह्मण का है... उसके मान-सम्मान के बारे में तो कम से कम सोचना चाहिए था। तुम्हारी बहन की शादी हो गई है। उसके घर वाले क्या कहेंगे?"[5]लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी जी का परिवार सुशिक्षित और हिजड़े के रूप में लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी को अपनाने के लिए तैयार था किंतु उनके मन में समाज का बड़ा डर था। समाज क्या कहेगा? समाज में हमारी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी। इस बात से लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी जी के पिता और माता दोनों चिंतित दिखाई देते हैं दोनों लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी से कहते हैं "क्यों ऐसा बर्ताव करते हो तुम? तुम्हें क्या प्रॉब्लम है? सब अच्छा तो चल रहा है? पढ़ाई की है, अपने पसंदीदा क्षेत्र में, डांस में कैरियर बना रहे हो। डांस की तरफ ध्यान दो अपनी खुद की जिंदगी के तरफ ध्यान दो,अपनी खुद की जिंदगी की तरफ ध्यान दो। चाहिए तो पैसे ले लो और नया बिजनेस शुरू करो। तुमने जो कुछ किया है, इस वजह से हम तो किसी को मुंह दिखाने के लायक नहीं रहे पर अपने बारे में सोचो, सामाजिक तौर पर भी यह अच्छा नहीं। इससे बाहर निकलो।"[6] अपने कलेजे के टुकड़े को उसमें कमियां होने के बावजूद भी अपने से दूर करना कोई भी मां-बाप नहीं चाहते किंतु सामाजिक प्रतिष्ठा मां बाप को अपने इन तृतीयपंथी बच्चों को अपने से दूर करने के लिए मजबूर करती हुई दिखाई देती है।

निष्कर्ष :-सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण सदीयो से तृतीयपंथी शोषित, वंचित और अपमानित जीवन जीने के लिए मजबूर है। भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री जन्म के प्रति उदासीन भारतीय समाज में थर्ड जेंडर की अवस्था शोचनीय दिखाई देती है। अच्छे खासे परिवार मे जन्म लेने वाला तृतीय लिंगी बच्चा सामाजिक प्रतिष्ठा का शिकार बनता हुआ दिखाई देता है।

******

सदर्भ :-

1. मैं हिजडा मैं लक्ष्मी - लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी-अनुवादक-डॉ. शशिकला राय पृष्ठ - 8
2. अतीत और वर्तमान- तिसरी लिंग की संघर्षगाथा- यमदीप -संपादक डॉ. एम फिरोज खान पृष्ठ -12
3. अतीत और वर्तमान- तिसरी लिंग की संघर्षगाथा- यमदीप -संपादक डॉ. एम फिरोज खान पृष्ठ - 16
4. अतीत और वर्तमान- तिसरी लिंग की संघर्षगाथा- यमदीप -संपादक डॉ. एम फिरोज खान पृष्ठ .17
5. मैं हिजडा मैं लक्ष्मी - लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी-अनुवादक-डॉ. शशिकला राय पृष्ठ - 54.
6. मैं हिजडा मैं लक्ष्मी - लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी-अनुवादक-डॉ. शशिकला राय पृष्ठ 54

भारत में किन्नरों का ऐतिहासिक उल्लेख तथा वर्तमान में प्राप्त अधिकार

मो.जहाँगीर

शोधार्थी, हिंदी-विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

अलीगढ़ (उ० प्र०) – 202002

शोध-सार- : भारत विविधताओं वाला देश है। जहाँ विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, समुदाय, जाति, प्रजाति एवं वर्ग के लोग निवास करते हैं। इस देश में पुरुष और महिला से अलग एक और वर्ग की उपस्थिति मिलती है, जिसे किन्नर कहा जाता है। किन्नर जैविक (Biological) रूप से पुरुष या महिला होते हैं, लेकिन मानसिक (Psychological) रूप से विपरीत लैंगिक भाव की अनुभूति करते हैं। किन्नरों के ऐतिहासिक प्रमाण सहस्रों वर्ष पूर्व से भारत के प्राचीन साहित्य एवं धर्म शास्त्रों में विद्यमान हैं। प्राचीन पौराणिक साहित्य एवं धार्मिक ग्रंथों जैसे - रामायण, महाभारत, वेद, पुराण, मध्यकालीन साहित्य आदि में किन्नरों की गौरवशाली गाथाओं एवं पदवी प्राप्ति के प्रमाण मिलते हैं, परंतु अँग्रेज़ी शासनकाल में शनैः शनैः किन्नरों की स्थिति दयनीय होती गयी। उन्हें मुख्य धारा के समाज से विस्थापित एवं बहिष्कृत कर हाशिये पर धकेल दिया गया। परिणामस्वरूप इनका विकास अवरुद्ध हो गया। सन् 2014 में किन्नरों के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने किन्नरों को अन्य (Other) के स्तंभ से निकाल थर्ड जेंडर (Third Gender) के रूप में मान्यता दी ताकि उन्हें भी मुख्य धारा के समाज के समान सभी अधिकार एवं सुविधाएँ दी जा सकें।

बीज-शब्द (Keywords) : किन्नर, तृतीय लिंगी, हिजड़ा, समाज, धार्मिक ग्रंथ, साहित्य, अधिकार, कानून, सुविधाएं।

प्रस्तावना : किन्नर या हिजड़ा नाम सुनते ही माथे पर बड़ी सी बिंदी, होंठों पे लाली, कानों में झमके या बाली, बदन पर स्त्री परिधान धारण किए हुए, हंसी-ठिठोली कर बधाई लेती या भीख मांगती हुई एक छवि मस्तिष्क के पटल पर उभरती है। यह छवि न तो पूर्णतः नर की होती है और न ही पूर्णतः मादा की, बल्कि महिला के भेष में एक तृतीय लिंगी की छवि होती है। तृतीय लिंगी या तृतीय पंथी वह है, जो अपने लिंग के विपरीत लैंगिक भाव की अनुभूति करता है। यह जन्मजात होते हैं। जैसे-जैसे आयु में वृद्धि होती जाती है वैसे-वैसे यह मानसिक द्वंद्व में उलझते जाते हैं। लैंगिक भाव में आ रहे परिवर्तन को समझ नहीं पाते और अपनी अस्मिता की खोज में उलझे रहते हैं। जन्म के समय जो लैंगिक पहचान मिलती है, उसमें उम्र बढ़ने के साथ आमूल-चूल परिवर्तन होता है और मस्तिष्क विपरीत लिंग की ओर इंगित करता है। ऐसी अवस्था में वह कौन है, स्वयं, यह जानने के लिए छटपटाता है। वह उस रहन-सहन, एवं परिवेश से छुटकारा पाना चाहता है क्योंकि वास्तव में वह पुरुष या महिला की काया में क्रमशः विपरीत लैंगिक भाव लिए हुए महिला या पुरुष या दोनों से भिन्न होता है, जिसे किन्नर या हिजड़ा कहा जाता है। भाषा और स्थानीय बोलियों के अनुसार किन्नरों के अधोलिखित नाम व्यवहृत किए गए हैं।

अन्य नाम : हिजड़ा, ट्रांसजेंडर, थर्ड-जेंडर, तृतीय लिंगी, तृतीय प्रकृति, यूनक, जोगप्पा, अरावनी, शिव-शक्ति, बृहनल्ला, थिरूनंगई, नपुंसकुड़, कोज्जा या मादा, पवैय्या, मंगलमुखी, ख्वाजा सरा, खुसरा, जनखा, नपुंसक, आदि; कुछ अन्य नाम जो अशिष्ट रूप में लिए जाते हैं जैसे - मऊगा, मीठा, मीठा-चावल, खोजा, बायक्या, छक्का, लौंडा आदि।

ऐतिहासिक उल्लेख एवं पृष्ठभूमि : भारत में किन्नरों का इतिहास कोई नया नहीं है, अपितु वृहद प्राचीन और समृद्ध माना जाता है। भारतीय साहित्य में लगभग 10000 वर्ष पूर्व से इनके अस्तित्व का उल्लेख मिलता है। प्राचीन साहित्य एवं धार्मिक शास्त्रों जैसे - रामायण, महाभारत, वेद, अष्टाध्यायी, पुराण, कामसूत्र, मध्यकालीन तथा साहित्य आदि में किन्नरों की गौरवशाली गाथायें कही जाती हैं। तत्कालीन समाज में इनका बहुत आदर-सत्कार था। ऐतिहासिक रूप से हिजड़ों की दीर्घ परंपरा रही और हिजड़ा समाज अपनी संस्कृति से काफी समृद्ध था। प्रसंगों के आधार पर भारत में किन्नरों का उल्लेख –महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित, हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध एवं पवित्र ग्रंथ, रामायण (7323 ई० पू०) का काल आज से लगभग 9000 वर्ष प्राचीन माना जाता है। जिसमें किन्नरों के होने का प्रमाण मिलता है। रामचंद्र जी अयोध्या से वन-गमन के लिए प्रस्थान करते हैं। मार्ग में महर्षि भरद्वाज के आश्रम में रात्रि विश्राम करते हैं। प्रातः उठकर महर्षि से अपने वनवास के दौरान रहने हेतु उपयुक्त स्थान का पता पूछते हैं। रामायण के अयोध्याकांड के 54 वें सर्ग में महर्षि भरद्वाज उत्तर देते हुए कहते हैं

भाग – 01

नागफनी

A Peer Reviewed Refereed Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NagfaniRNI No.UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12 अंक 43,अक्तूबर-दिसम्बर -2022

संपादक
सपना सोनकर

सह संपादक
रूपनारायण सोनकर

Co Editor(English)
Prof.Rajesh karankal
Dr.Santosh Kumar Sonkar

कार्यकारी संपादक
डॉ.एन.पी.प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

सलाहकार मण्डल (Peer Review Comittee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्य प्रदेश)
डॉ.एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सालुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर मोहनलाल 'आर्य' मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)
डॉ.जी.व्ही .रत्नाकर हैदराबाद(तेलंगाना)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ.एन.पी.प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन–423/Aअंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य।

मुख पृष्ठ– उत्कर्ष प्रजापति, सिंगरौली - मध्यप्रदेश

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी -248179, उत्तराखण्ड, दूरभाष : 0135-6457809 मो.0941077718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी. आर. -62 ए ब्लॉक कॉलोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म. प्र. पिन-486886 मो. 09752998467

सहयोग राशि -150/-रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1500/-रुपये, पंच वार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-3000/-रुपये, पंच वार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए –3500/-रुपये, विदेशों में$50 आजीवन व्यक्ति-6000/-रुपये,संस्था-10,000/-रुपये।

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक–A/C –8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001 Branch-sidhi, NIRPAT PRASAD PRAJAPATI

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।'**नागफनी**'में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमेंसंपादक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।'**नागफनी**' से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gmail.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:–http:naagfani.com

Scanned with OKEN Scanner

स्त्री विमर्श

1.पाश्चात्य स्त्री-विमर्श का इतिहास -**डॉ.महेश दवंगे** 100-121
2.भारत में स्त्री शिक्षा और उनके अधिकार-**डॉ.मोहन लाल 'आर्य'** 102-103
3.भारतीय नारी और सामाजिक मान्यताएं-**डॉ.अरविंद अंबादास घोडके** 103-104
4.'औरतें': स्त्री जीवन की व्यथा का ब्यौरा-**डॉ.अन्सा ए** 105-106
5.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'गुनाह बेगुनाह' में नारी चेतना-**अंजलि** 106-108
6.हंडा में दबी हुई स्त्री'-**डॉ.मिनी ए.आर** 109
7.दलित स्त्री आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य-**नीतामणि बरदलै/नूरजहान रहमातुल्लाह** 110-111
8.लोक कथाओं में चित्रित स्त्री जीवन: मिज़ो लोक कथाओं के संदर्भ में-**डॉ.वंदना भारती** 111-113
9.आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श और स्त्री संघर्ष: महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में-**सुशीला/डॉ.मंजुला तोमर** 114-115
10.'दक्षिणी कामरूप की 'गाथा'उपन्यास में पुरुष तांत्रिक समाज व्यवस्था का वर्णन-**किरण कलिता** 116-117
11.हिंदी के समकालीन स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त स्त्री-संघर्ष -**सेलीष्या जोसफ/डॉ.मेरली के पुन्नूस** 118-119
12.अल्मा कबूतरी उपन्यास में कबूतरा स्त्री-**मयूरी मजुमदार** 120-121
13.हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन-**विनीता ठकरेले लोधी /डॉ.समयलाल प्रजापति** 122-123
14.इक्कीसवीं सदी के हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी- **बबीता कुमारी** 124-125
15.नारी-अस्मिता के प्रश्न और 'ध्रुवस्वामिनी'-**डॉ.समरेन्द्र कुमार** 126-127
16.अब बाजार स्त्री के कदमों में है : अनीता वर्मा की कविता-**कार्तिक राय** 128-129
17.पंकज सुबीर की कहानियों में स्त्री छवि-**डिन्सी जोर्ज/डॉ.जी.शान्ती** 130-131
18.मैला आँचल के स्त्री पात्र-**डॉ.माया सगरे-लक्का** 131-133
19.हिन्दी और तेलुगु के नारी उपन्यासों में सामाजिक आन्दोलन का प्रभाव(चुने हुए उपन्यासों के संदर्भ में)-**बी.रविंदर** 133-135
20.महात्मा बुद्ध के शैक्षिक विचारों में नारी शिक्षा की स्थिति का एक अध्ययन-**प्रज्ञा बौद्ध /प्रो रामबली यादव** 135-137
21. मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में स्त्री विमर्श-**सुश्री दुर्गावती** 138-139

दलित विमर्श

1.'हमारे हिस्से का सूरज' में अभिव्यक्त दलित चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन-**डॉ. जी. वी. रत्नाकर** 140-141
2.पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए डॉ. बी. आर. अम्बेडकर प्रतिपादित विकास रणनीति की समीक्षा-**डॉ.धीरज कदम** 141-144
3..डॉ.तुलसी राम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में अंधविश्वास-**डॉ.मृत्युंजय कोईरी** 144-146
4.विमर्श नहीं दलित चेतना है मुक्ति का आधार(ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य)-**डॉ.रविन्द्र गासो** 147
5.'सामाजिक न्याय और अस्मिता संघर्ष के लिए "मादिगा दंडोरा" आंदोलन'-**डॉ. जी. राजु** 148-149
6.डॉ.अंबेडकर के द्वारा नारी उत्थान हेतु किये गये प्रयासों एवं हिंदू कोड बिल का संक्षिप्त मूल्यांकन-**गृहशोभा/डॉ.अनिल कुमार दीक्षित** 149-151
7.समतावाद की नींव रखता 'प्रत्यंचा'उपन्यास'-**आशा त्रिपाठी/प्रो.दिनेश कुशवाह** 152-153
8.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में दलित चेतना- **सुनीता सिंह** 153-155
9.मुसहर समुदाय का जीवन-संघर्ष-**राम नाथ कुमार** 156-158
10.दलित साहित्य की वैचारिकी-**अंकित कुमार वर्मा** 159-161
11.हिन्दी दलित नाटकों में अस्मिताई संघर्ष-**विभिषण कुमार** 162-163

आदिवासी विमर्श

1.पूनम वासम की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-दृष्टि-**लाली कुमारी** 164-165
2.राष्ट्र निर्माण के कार्य मे आदिवासी नायकों का योगदान-**डॉ.मनोहर भी.येरकलवार** 166-168
3.आदिवासी मराठी साहित्य:एक विचार(महाराष्ट्र के आदिवासी जीवन पर आधारित काव्य संग्रह 'वनवासी'के संदर्भ में)-**डॉ. नितीन कुमार जानबाजी रामटेके** 168-169

किन्नर विमर्श

1.अस्तित्व की तलाश में सिमरन: किन्नर अस्मिता का जीवंत दस्तावेज-**डॉ.नीरज शर्मा** 170-171
2.किन्नर समाज और मीडिया-**डॉ.मीनाक्षी बी. पाटील** 172-173
3.भारतीय समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण-**घनश्याम कुशवाहा** 174-176
4.'नाला सोपारा': अभिशप्त जीवन की त्रासदी-**डॉ.गरिमा तिवारी** 177-179

विविध विमर्श

1.उच्च शिक्षा : हिंदी भाषा की स्थिति एवं चुनौतियाँ(दक्षिण भारत के हैदराबाद महानगर के संदर्भ में)-**डॉ.पठान रहीम खान** 180-182
2.पंचयातों में महिला आरक्षण, के 30 वर्ष:सशक्तिकरण यथार्थ या मिथक-**डॉ. संजय यादव** 183-185
3.भूमि उपयोग का अर्थ एवं महत्व एक भौगोलिक अध्ययन -**प्रदीप कुमार/डॉ. सालिक सिंह** 186-187
4.भारत के लोकतांत्रिक यात्रा में राजनैतिक पक्ष की भूमिका (स्वतंत्रता पूर्व एवं पाश्चात्य के विशेष संदर्भ में)-**डॉ.शशिकांत जे. चवरे** 188-192
5समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में वृद्धजनों की समस्याओं का विश्लेषण(बनबसा नगर पंचायत क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)- **रेनू बाला** 193-195
6.प्राकृतिक आपदाओं का मानव जीवन के आर्थिक विकास पर दुष्प्रभाव तथा इसका प्रबंध झुन्झुनू जिले के सन्दर्भ में-**रामावतार वर्मा-डॉ. सालिक सिंह** 196-197
7.प्रथम लंदन यात्रा के दौरान मोहनदास के अनुभव: एस.एस. क्लाइड जहाज के संदर्भ में-**सूर्य प्रकाश** 197-198
8.झुन्झुनू जिले में पर्यावरण अवनयन के कारको एवं होने वाली हानियों के प्रबंधन-एक भौगोलिक अध्ययन-**सवित राज/डॉ.सालिक सिंह** 199-201

Scanned with OKEN Scanner

आधुनिक स्त्रीवादी रचनाकारों की रचनाओं में भले ही स्त्री के प्रति न्याय की भूमिका रही हो किंतु आज तक बहुसंख्य रचनाओं में सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक मान्यताओं का पालन तथा निर्वाहन करने वाली स्त्री को पतिव्रता, चरित्रवान , नैतिकता की राह पर चलने वाली समाजमान्य नारी बताने की कोशिश की गई है। रामायण की सीता हो, महाभारत की द्रौपदी हो, युगंधर की राधा हो इन सभी स्त्री पात्रों को सामाजिक व्यवस्था में रहकर अपनी भावनाओं को दबाकर समाज अर्थात पुरुष प्रधान व्यवस्था के लिए अपनी शारीरिक और भावनिक ईच्छा का गला घोट कर जीवन जीना पुरुषप्रधान सामाजिक मान्यताओं में श्रेष्ठ एवं महान दिखाया गया है। पति को परमेश्वर मानकर पति के सुख में ही अपना सुख और पति के दुख में अपना दुख यह धारणा पौराणिक महाकाव्य में स्त्री कर्तव्य के प्रति चिपकाए गई थी, यह धारणा समय -समय पर तत्कालीन समाज में भी जीवित रखने की कोशिश पुरुष प्रधान व्यवस्था करती आई थी। भारतीय सामाजिक मान्यता में स्त्री पुरुष के प्रति स्वीकृत दुबली और अन्य व्यक्ति का यथार्थ चित्रण मनिका की कहानी 'कोई सजा नहीं' में हुआ है। पति को परमेश्वर मानकर सदियों से पुरुष हवस का शिकार होकर अपना शारीरिक और मानसिक शोषण बनाए रखने वाली नारी आज भी अपने इस अन्याय का प्रतिकार करने में असमर्थ दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति और सामाजिक मान्यताओं में पुरुष द्वारा नारी का शारीरिक और मानसिक शोषण करने के बाद भी इसी सामाजिक मान्यता में अत्याचारी पुरुष को उसके अपराध के लिए किसी सजा का प्रावधान आज भी समाज में नहीं है। दहेज, स्त्री विनयभंग, पति द्वारा होने वाला शारीरिक, मानसिक अत्याचार आदि के लिए भले ही कानून में सजा का प्रावधान होता होगा किंतु भारतीय समाज व्यवस्था में आज भी ऐसे पति को किसी सजा का प्रावधान दिखाई नहीं देता है:जिसका सजीव चित्रण कोई सजा नहीं कहानी में हुआ है। कहानी की नायिका मीरा का पति मीरा का शारीरिक और मानसिक शोषण करता था। पति के अन्याय से डर कर अपने बहन के पास चली आती है किंतु पति उसे वहां भी लेने के लिए आता है और कहता है कि "मीरा तू भारतीय नारी है, तुझे इस प्रकार घर छोड़ना शोभा नहीं देता, पति परमेश्वर समान होता है। धैर्य और सहनशीलता ही नारी का प्रमुख धर्म है। तू अपनी मर्यादा मत खोना, मैं तेरा पति हूं तेरे लिए परमेश्वर समान हूं। मैंने तुझे घर दिया है, एक नाम दिया है, बच्चे दिए हैं। अगर मैंने तुझे कभी कुछ कह भी दिया तो क्या हो गया ? क्या तूने देखा नहीं कि हमारे घर में औरतें ऐसी पीटीआई है आखिर औरत औरत है मर्द की गुलामी नहीं करेगी तो क्या सिर पर चढ़ेगी ? पति को हर तरह खुश रखना ही पत्नी का धर्म है "[3] 'कोई सजा नहीं' कहानी में मीरा का पति भारतीय सभ्यता का वास्ता देकर उसे अपने घर वापस ले जाना चाहता है और अपनी व्यवस्था के अनुरूप उसे अपनी हवस का शिकार बना सकता है। कहानीकार आगे लिखती हैं कि कुछ ही दिनों के बाद मीरा आत्महत्या करती है किंतु यह मेरा की आत्महत्या न होकर सामाजिक व्यवस्था के हाथों के हाथों मीरा की हत्या ही है।

स्त्री विरोधी सामाजिक मान्यताओं का प्रतिकार अनेक स्त्री-पुरुष रचनाकार तथा समाज सुधारकों ने किया है। "कितने दिन हम महिलाओं के नक्शे, कांति, शारीरिक संबंध की चर्चा करने वाले हैं ? उसके अस्तित्व के बारे में चर्चा करने वाले है या नहीं ?" [4] अपनी मुलाकात के दौरान राजनीतिकार चित्रा वाघ ने महिलाओं बारे में अपनी बेबाक बात रखकर सनातनी समाज व्यवस्था और नारी विरोधी सामाजिक मान्यताओं के वैचारिक धरातल को ही हिलाने की चेष्टा की है। नारी को कोमल, कामिनी का लेबल लगाकर उसे अन्य कार्य से दूर करते हुए, उसे सिर्फ पुरुष भूख की व्यवस्था मिटाने वस्तू बनाने रखने की कोशिश पुरुष मानसिकता सदियों से करती आई है। आज के आधुनिक साहित्य में भी हजारों रचनाकार आज भी पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं में जीवन जीने वाली, अपने अपेक्षाओं का गला घोट कर परिवार और समाज के प्रति अपना सब कुछ दांव पर लगाकर दर्दनाक जीवन जीने वाली स्त्री को नैतिक और प्रतिष्ठित समझा जाता है। साहित्य समाज का भविष्य होता है किंतु साहित्य में भी अगर स्त्री के प्रति अन्यायी दृष्टिकोण अपनाया जाता रहा हो, तो फिर वर्तमान समाज में भी स्त्री के साथ कैसा न्याय होगा? । आज के स्त्रीवादी रचनाकार स्त्री को पुरुषों की तरह उन्मुक्त, निडर और स्वच्छंद जीवन जीता हुआ दिखाई लगे है। स्त्रीवादी रचनाकार को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्त्री भावनाओं को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करने वाले रचनाकार को आलोचक पुरुष दृष्टिकोण अश्लील मानकर उसका उपहास कर देते हैं।

पुराणों से लेकर आज तक अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को आलोचकों के लिए नहीं बल्कि अपने स्वच्छंद विचारों के लिए रचनाओं का निर्माण किया है। अपनी रचनाओं में स्त्री समस्याओं का चित्रण कर सामाजिक मान्यताओं का विरोध करते हुए नारी के प्रति सहानुभूति का स्वर अपनाकर नारी विरोधी समाज व्यवस्था का विरोध करने के लिए प्रेरित किया है। सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए विवाह को एक संस्कार के रूप में देखा जाता है किंतु नारी के ऊपर अधिक मात्रा में विवाह और परिवार व्यवस्था में सर्वाधिक अन्याय अत्याचार होते हुए दिखाई देते हैं। शोषित नारी को इसी अन्यायी व्यवस्था का विरोध करने के लिए विवाह बंधन से ही मुक्त होने की सलाह कुछ रचनाकार अपनी रचनाओं में देते हुए दिखाई देते हैं। मनिका जी की कहानी 'बीमार' विवाह व्यवस्था से परेशान आधुनिक नायिका की कहानी है जो अपने पति का हर रात बलात्कार का शिकार होती आई है। किंतु सामाजिक प्रतिष्ठाओं के लिए तथा अपनी मां की सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए इस बलात्कार को चुपचाप सहती आई है। सामाजिक मान्यता और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए पति का चुपचाप अन्य सहनेवाली रीमा एक दिन अपने मम्मी से कहती है " विवाह कितनी गलत और गैर जरूरी संस्था है मम्मी, रीमा के चेहरे पर एक ठहराव था, उसके आंसू सूख चुके थे और निर्णय की दृढ़ता से उसकी आंखें न निश्चितता से चमक रही थी। दो जून रोटी और एक रात का सेक्स का जुगाड़ बैठाने के लिए इतना बड़ा झंझट ? "[5] बीमार कहानी की तरह ही विवाह संस्था को ठुकराने वाली नारी 'दो पाटन के बीच' कहानी में भी दिखाई देती है। सामाजिक मान्यता और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए शरद सुरभि को संगीत छोड़ने की बात कहता है, जो संगीत सुरभि के लिए जान से प्यारा था। शरद के लिए समाज महत्वपूर्ण था किंतु सुरभि नहीं, सुरभि को लगता था समाज से परे होकर शरद उसे चाहता होगा, लेकिन इस शरद का असली चेहरा जब उसके सामने आता है तब सुरभि शादी का फैसला बदल देती है। शरद की बारात लौटाने का निश्चय कर लेती है। विवाह करने से इंकार कर देती है और अपनी इच्छा के लिए संगीत को अपनाने के लिए तैयार हो जाती है। "यदि उसने खुद को खो दिया तो अन्य चीजें पा कर क्या करेगी ? हां प्यार भी उसके लिए संगीत के आगे अन्य चीज है। उसने एकाएक महसूस किया उसके भीतर एक अलग तरह की नारी जन्म ले रही है। जो दौलत और प्यार को सहज ही ठुकराने का साहस रखती है, जिसे अपनी पहचान, सिर्फ अपने बल पर बनानी है।"[6]

निष्कर्ष:-

पारंपरिक सामाजिक मान्यता में विवाह संस्कार अगर स्त्री के लिए बंधन होगा, तो वह ठुकराना उचित है किंतु परिवार और कुटुंब व्यवस्था समाज को बनाए रखती है। सिर्फ एकांगी और अन्ययी सामाजिक मान्यताओं के कारण अगर यह विवाह संस्था को ठेस पहुंचती है तो समाज व्यवस्था के लिए बड़ा धोका होगा। विवाह के बाद जो नारी विरोधी सामाजिक मान्यताएं है। उसे बदलकर स्त्री- पुरुष समानता कि धरातल पर सामाजिक मान्यताएं अपनाना जरूरी है। साहित्य समाज का दृष्टा भी है और सृष्टा भी है। इसलिए सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए नारी विरोधी सामाजिक मान्यताओं में फेरबदल होना जरूरी है।

****

संदर्भ :-

1.गार्गी से याड्वलक ने कहा- हिंदी उपन्यास का स्त्री पाठ -भूमिका - रोहिणी अग्रवाल पृष्ठ. 5.
2. जग का मुजरा - दो पाटन के बीच - मनिका मोहिनी -पृष्ठ. 110.
3. -अन्वेषी -कोई सजा नहीं-माणिका मोहिनी- पृष्ठ.77.
4. चित्रा वाघ टीवी मराठी- 14 जुलाई 2021 बुधवार 11:28 a.m.
5. अन्वेषी मनिका मोहिनी बीमार पृष्ठ 120.
6. जो का मुजरा दो पाटन के बीच मनिका मोहिनी पृष्ठ 110.

Scanned with OKEN Scanner

बरकरार रखने का इच्छुक है। कामकाजी स्त्रियों के प्रति पुरुषों के रुख में भी अब सकारात्मक बदलाव आया है। कामकाजी स्त्रियों की समस्याओं को समझकर परिवार की ओर से उन्हें पूरा सहयोग दिया जाता है, उनकी घरेलू जिम्मेदारियों को सीमित किया जा रहा है।

आज हमारे समाज में स्त्री की स्थिति को देखते हुए यह बहुत आवश्यक हो गया है कि स्त्री शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बन जायें विवाह से पूर्व पिता के ऊपर आश्रित रखने वाली स्त्री, विवाह के पश्चात पति का आश्रय पाती हैं। ऐसी स्थिति में जब स्त्री अशिक्षित होती है तब, उसका जीवन अंधकारमय हो जाता है लेकिन आज स्त्री के जीवन और उसकी स्थिति में एक नया मोड़ आया है। स्त्री यदि शिक्षित होंगी तो वह अपनी योग्यतानुसार कोई भी नौकरी प्राप्त करके आत्मनिर्भर बन सकती है। आधुनिक समाज में शिक्षा ही एकमात्र साधन है, जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति विकास के अवसरों का लाभ उठाकर सफलता प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन सकता है। वे विकास के अवसर कौन-कौन से हैं, सबसे पहले तो यही जानने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि "शिक्षा ने जहाँ समझ बढ़ाई है, वहीं पर थोथी भावुकता को भी कम किया है। मगर यह बदलाव उन स्त्रियों में नहीं आया है जो अशिक्षित हैं और लम्बे समय से एक रिवायती जीवन व्यतीत कर रही हैं।"

शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्त्री को प्रारम्भिक शिक्षा से भी वंचित होने के कारण शोषण व अत्याचार का शिकार बनाया जाता है। आज स्त्रि का पूरा संघर्ष अपने उस छोटे से हिस्से को बचाने में है। जिस पर उसके दोनों पांव टिके हैं। उस हिस्से को बचाए रखना उसकी पहली प्राथमिकता है। इसे बचाए रखने की ताकत शिक्षा से ही मिलेगी, इसलिए बहुत आवश्यक है कि गांव हो या शहर या महानगर में बसे छोटे-छोटे उपनगर, भारत के प्रत्येक राज्य में लड़कियों के लिए प्रत्येक जगह शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य हो। यह एक ऐसा कार्य है जिसको पूरा करने के लिए स्वयं स्त्रियों के साथ-साथ समाज में सभी वर्गों के लोगों और सरकारी संगठनों को मिलकर प्रयास करने होंगे। आज हमारे देश में स्त्रियाँ कृषि, वैज्ञानिक, कृषि, पुलिस, सेना, सूचना, तकनीशियन, व्यापार-व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में कार्यरत है, लेकिन नये क्षेत्रों में और विभिन्न उच्च पदों पर स्त्रियों की संख्या आज भी संतोषजनक नहीं है। उच्च शिक्षा में भी स्त्रियों की संख्या बहुत कम हैं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि पढ़ लिखकर स्त्रियाँ सरकारी और गैर-सरकारी तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में बड़े-बड़े पदों पर आसीन हैं, लेकिन यह अवसर बहुत ही कम स्त्रियों को मिला है। स्त्रियों की शिक्षा को लेकर आज भी लोगों का नजरिया काफी पक्ष-पात पूर्ण है। शिक्षा के सन्दर्भ में आज भी वे सामाजिक व आर्थिक दबावों की शिकार हैं। इसलिए स्वतंत्रता 75 वर्षों के बाद भी पढ़ी-लिखी स्त्रियों का अनुपात लगभग 2.5 प्रतिशत तक ही पहुँचा है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्त्रियों को शिक्षा दिलाने में प्रयत्नशील अवश्य हैं, परन्तु उसमें या तो योजनाएं एवं कार्यक्रम अपर्याप्त है या फिर उनका अपेक्षित लाभ स्त्रियों तक नहीं पहुँच रहा है। शिक्षा जगत में भी कई नई-नई नीतियों में यह बात जोर-जोर से उठाई जा रही है। परन्तु स्त्रियों की स्थिति में आज भी सुधार नहीं हो पा रहा है।

****

संदर्भ सूची:-

1. अरोड़ा सुधा, आम औरत और जिन्दा सवाल, वही, पृ0सं0-98।
2. अनामिका, स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, वही, पृ0 सं0-115।
3. अग्रवाल रोहिणी, स्त्री लेखन, स्वप्न और संकल्प, वही, पृ0 सं0-41।
4. गुप्ता रमणिका, स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, वही, पृ0 सं0-31, 102, 110।
5. कात्यायनी, दुर्ग द्वार पर दस्तक, वही, पृ0 सं0-45, 110।
6. सिन्हा मृदुला, मात्र देह नहीं है औरत, वही, पृ0 सं0-146, 174।
7. पाण्डेय मृणाल, जहाँ औरते गढ़ी जाती है, वही, पृ0 सं0-140।
8. पुष्पा मैत्रेयी, खुली खिड़कियाँ, वही, पृ0 सं0-33, 65।
9. शर्मा क्षमा, स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य, वही, पृ0 सं0-39, 43।
10. शर्मा नासिरा, औरत के लिए औरत, वही, पृ0 सं0-25, 73।

भारतीय नारी और सामाजिक मान्यताएं

डॉ.अरविंद अंबादास घोडके

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई

सहायक प्राध्यापक-हिंदी विभाग मो.8208918100

भूमिका:- " मूर्ख स्त्री चुप रहो, नहीं तो जुबान खींच लूंगा स्त्री हो, स्त्री की तरह मर्यादा में रहकर आचरण करो।"[1] पौराणिक महाकाव्य रामायण से भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति और मान-सम्मान का बोध उपर्युक्त वाक्य से होता है। साहित्य समाज का प्रतीक होता है और समाज का प्रभाव साहित्य पर होता है। तत्कालीन समाज व्यवस्था में प्रचलित सामाजिक व्यवस्था का चित्रण साहित्य के माध्यम प्रभावित होता रहता है। वही प्रवाह पौराणिक महाकाव्य रामायण लेकर आज के साहित्य में दिखाई देता है। विदुषी गार्गी के प्रति राजा जनक की राज्यसभा में जो बात हो गई थी वह आज के आधुनिक युग में भी हर भारतीय नारी के साथ होती हुई दिखाई देती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय समाज में पुरुष व्यवस्थाने न कभी स्त्री को अपने बराबर का स्थान दिया है और न कभी देने के लिए अपनी मर्जी से राजी हो गा। सदियों से पुरुष व्यवस्था ने स्त्री पर अपना वर्चस्व बनाने की भरसक कोशिश की है जो आज भी जारी है। अलग अलग सामाजिक मान्यताओं में स्त्री को बांधकर उसे हमेशा अपने से छोटा साबित करने की कोशिश करता आया है। गार्गी ने केवल एक सवाल का जवाब पुरुष प्रधान व्यवस्था का प्रतिनिधि याज्ञवल्क दे नहीं पाता है किंतु अपनी इस हार को पुरुष प्रधान व्यवस्था के सहारे स्त्री को अपमानित कर उसे व्यवस्था के हाथों पराजित करता है।आज भी यादन्यबल्क जैसे हजारों पुरुष व्यवस्था के प्रतिनिधि स्त्री को सदियों से पुरुषव्यवस्था के हाथों पराजित करने की व्यवस्था में लगे हुए दिखाई देते हैं। स्त्री का वर्चस्व न परिवार में सहन किया जाता है और न कभी कामकाज की जगह पर। गांव से लेकर देश की राजधानी दिल्ली तक पुरुष प्रधान व्यवस्था के सहारे स्त्री को दबाने की चेष्टा पारंपारिक सामाजिक मान्यताएं करती हुई दिखाई देती है। नारी को कोमल, कामिनी का लेबल लगाकर उसे अन्य कार्य से दूर करते हुए, उसे सिर्फ पुरुष भूख की व्यवस्था मिटाने वस्तू बनाने रखने की कोशिश पुरुष मानसिकता सदियों से करती आई है । आज के आधुनिक साहित्य में भी हजारों रचनाकार आज भी पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं में जीवन जीने वाली, अपने अपेक्षाओं का गला घोट कर परिवार और समाज के प्रति अपना सब कुछ दांव पर लगाकर दर्दनाक जीवन जीने वाली स्त्री को नैतिक और प्रतिष्ठित समझा जाता है।

शब्द :- सामाजिक मान्यताएं, नैतिक- अनैतिक, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, आबरू-बेआबरू, संस्कृति, पुरुष वर्चस्वादी सामाजिक नियम, पौराणिक, संगीत आदि।

उद्देश्य :-आधुनिक महिला कहानीकार मनिका मोहिनी की कहानी में स्त्री को दबाने की चेष्टा पुरुष प्रधान व्यवस्था कैसे करती है इसका सजीव और बेबाक चित्रण होता हुआ दिखाई देता है। ' दो पाटन के बीच' कहानी में पुरुष प्रदाय व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया गया है। भारतीय सामाजिक मान्यता नारी को परिवार छोड़कर अन्य कोई काम करना एक प्रतिष्ठित मानती है। कहानी की नायिका 'सुरभि' शरद से प्रेम करती थी किंतु शरद की तरह अपने संगीत को उतना ही चाहती थी। शरद सुरभि को शादी के बाद में संगीत को बनाए रखने का वादा करता है किंतु जैसे ही शादी नजदीक आती है तो उस वादे से मुकर जाता है। शरद को डर लगता है कि सुरभि अगर लोगों में बैठकर संगीत का कार्यक्रम करेगी तो उसकी समाज में बेआबरू होगी, इसलिए पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं को बनाए रखने के लिए शरद सुरभि से शादी के कुछ दिन पहले कहता है कि, "जहां पति को परमेश्वर माना जाता है। एक अच्छी पत्नी बनने के लिए समझौता नहीं करना चाहोगे ? तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी, तुम राज करोगी शुरू, मेरे दिल पर मेरे घर पर, औरत हो, शादीशुदा औरत यू पराए मर्दो के बीच बैठकर कैसे गा सकती हो। तुम्हें वही करना चाहिए जो तुम्हारे पति और ससुराल वाले चाहे । "[2] परंपरा से लेकर आज के आधुनिक युग में भी सामाजिक मान्यताएं नारी विरोधी दिखाई देती है। 'दो पाटन के बीच' कहानी में शरद और शरद के पिता के माध्यम से संकुचित भारतीय मानसिकता का तथा स्त्री विरोधी सामाजिक मान्यताओं का यथार्थ चित्रण होता है। पुरुष प्रधान सामाजिक मान्यताओं में भारतीय स्त्री किस तरह मानसिक और शारीरिक शोषण का शिकार हो चुकी है और हो रही है इसका सजीव चित्रण आधुनिक रचना में अनेक रचनाकारों ने किया है।